पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

संयुक्तांक - 105-106

सितम्बर/2024

डा0 प्रकाश उदय, डा0 चंद्रेश्वर आदि के आलेख/प्रेमशीला शुक्ल, मीनाधर पाठक, विनय बिहारी सिंह, तुषार कान्त उपाध्याय, सुमन सिंह, कृष्ण कुमार, बिम्मी कुँवर सिंह, रमाशंकर श्रीवास्तव आदि के कहानी/दिनेश पाण्डेय के ललित निबन्ध का साथ कविता, आलोचना के स्थायी स्तम्भ

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुघ्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी (नई दिल्ली), रीतू सुरेन्दर सिंह (डुमराँव, बक्सर, बिहार)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

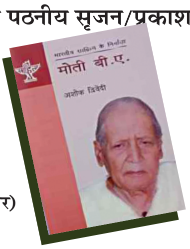

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

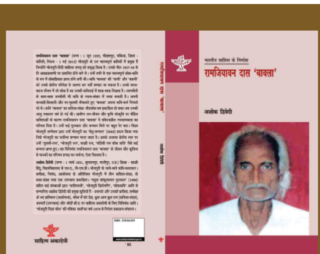

रामजियावन दास 'बावला'
अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना
(पृष्ठ संख्या-404)
डॉ0 अशोक द्विवेदी
मूल्य-500/-
विजया बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

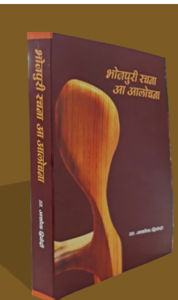

किताब मिलल....

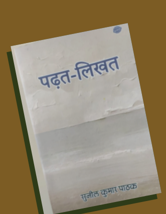

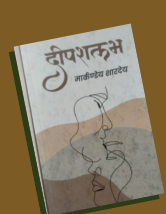

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

संयुक्तांकः 105-106 **सितम्बर 2024**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह
अँजोरिया डाट काम

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

सहयोगः
एह अंक के–100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

संपादन-कार्यालयः-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना – ● पितर–तर्पण के पखवारा– पितृपक्ष / 3–4

रम्य–रचना – ● बालम लट उरझे / दिनेश पाण्डेय / 9–14

कविता खण्ड –
- स्व0 जगदीश ओझा 'सुन्दर' / 5–8
- अशोक द्विवेदी / कवर पृष्ठ / 3
- गुरविन्द्र सिंह / 17
- सदानन्द शाही / 34–35
- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 33
- दयाशंकर तिवारी / 36
- अनिल ओझा 'नीरद' / 37–38
- हीरालाल 'हीरा' / 36
- अनवद्य आलोक / 38
- शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 39

निबन्ध / आलेख –
- लोककथा के वितान / डा0 प्रकाश उदय / 66–71
- भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति / डा0 चंद्रेश्वर / 62–65
- देश बा त हम बानी / विजय शंकर पाण्डेय / 80–82

कहानी–
- कहानी के कहानी / प्रेमशीला शुक्ल / 15–17
- अन्हारे के अतल में / मीनाधर पाठक / 18–24
- लालच ऐसो डाकिनी, काट कलेजा खाय / विनय बिहारी सिंह / 25–26
- बचकालो / तुषार कान्त उपाध्याय / 27–30
- भितरघात / डा. सुमन सिंह / 31–34
- देहरी के बहरा / कृष्ण कुमार / 40–43
- पहलवानी / कमलेश / 44–49
- 'ईआ' / बिम्मी कुँवर सिंह / 50–54
- सन्यास के नेवता / डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव / 76–77
- पिल्ली के प्रेम / राजगुप्त / 78–79

कविता खण्ड –
- धीरेन्द्र पांचाल / 39
- अशोक कुमार तिवारी / 43, 54
- मनोज भावुक / 59
- विपिन बिहारी चौधरी / 60
- योगेन्द्र शर्मा 'योगी' / 60–61
- राजेश ओझा 'धर्मशील' / 61
- शशि प्रेमदेव / 73–75
- स्व0 चन्द्रदेव सिंह / 85
- अशोक द्विवेदी / 86

रचनालोचन – ● सधल आ सचेत रचनाशीलता के कवि / अशोक द्विवेदी / 72–73

किताब चर्चा –
- आदर्श राजमाता कैकेयी / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 83–84
- 'निमिया रे करुआइनि' समय के साथे..... / केशव मोहन पाण्डेय / 87–88

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 55–58

पितर-तर्पण के पखवारा- पितृपक्ष

'पाती' के 105 वाँ अंक के 'कम्पोजिंग–फार्मेटिंग' का बिचहीं' 'पितरपक्ख' आ गइल। हमनी का जीवन संस्कृति आ परम्परा में 'पितरपख' (पितृपक्ष) के खास मूल्य–मरजाद आ महातम बा– ओकरा खातिर जेकर बाप महतारी सुरधाम चल गइल बाड़े। जे अपना भाई–बहिनिन में बड़–जेठ बा, ओकर पितरपख का एह पखवारा में नैतिक कर्त्तव्य बा– कि ऊ दिवंगत माता–पिता का सँगे बाबा–परदादा (पितामह–प्रपितामह) आ नाना–परनाना (मातामह–प्रमातामह) लोगन के सपत्नीक तिलांजलि देव– पिता का मृत्यु तिथि का दिन श्रद्धा भाव से पितर–पुरुखन के श्राद्ध कर्म करे! जइसे देवी–देवता के सुमिरन–पूजन होला, ओइसहीं पुरुखा–पितरन के होखे के चाहीं पितरन खातिर त साल में एक हाली, चढ़ते कुवार, एगो पख के विधान कइल गइल बा।

हमनी का लोक–संस्कृति में पितरन के सुमिरन आ आवाहन–पूजन के अइसन परम्परा बा कि बियाह–शादी जइसन शुभ–कार्य में पहिले पितरे–नेवतल जाला आ न्यौति के विधि–विधान से ओह लोगन के पूजन–पिण्डदान कइल जाला। पितरन का असिरबाद आ कृपा से आगा होखे वाला मंगलकार्य बिघ्नरहित आ सकुशल संपन्न हो जाला।

हम सुनले बानी कि पितर लोग ब्रह्माण्ड में बसु आ आदित्य का गोचर तेज पुंज रूप में विद्‌यमान रहेला। आ ईहो कि पितरपक्ख का समय ऊ लोग अपना कुल–पलिवार आ सन्तति के हाल–चाल जाने खातिर उत्सुकतावश उपस्थित हो जाला– हो सकेला कि ओ लोगन के अपना जीवित सन्ततियन आ पलिवार के मोह खींच के ले आवत होखे, चाहे ऊ लोग ई देखे–परतियावे (परीच्छा लेबे) आवत होखे– कि हमार सन्तति आ पलिवार हमके इयाद करत बा कि ना? जब ऊ लोग देखेला कि सन्तति प्रेम आ सरधा भाव से ओ लोगन के तिलांजलि आ श्रद्धा भरल पिण्डदान (श्राद्धकर्म) कर रहल बा, तऽ ऊ लोग छोह आ प्रसन्नता में 'कुल' के बढ़न्ती खातिर आपन असिरबाद आ कृपा–प्रसाद देके निश्चिन्त–भाव से लवटि जाला।

हम इहो सुनले बानी कि कठिन समय, गाढ़ परले, जीवन–मृत्यु का संघर्ष में, पितर गोहरवला पर, पितरन कऽ अदिख (अदृश्य) चेतन–शक्ति अपना सन्तति क सहायता आ रक्षा करेले। यानी कि पितर–गोहरवला आ सहायता खातिर आहवान कइला प' पितर लोग अपना तेज–बल से सन्ततियन के लड़े का शक्ति में वृद्धि करेला। अपना मनला, ना मनला के बात बा। कुछ लोग एकरा के अन्धविश्वास मानेला, कुछ लोग अविश्वास करत एके परम्परा के टोटरम कहेला। एह जमाना में जब लोग अपना माता–पिता के असहाय अवस्था में मुँह मोड़ि के खून के नाता तूड़ लेता, त भला ओ लोगन के मुअला का बाद का इयाद करी? अइसनको लोग कम नइखे, जे महतारी–बाप के अपना सुख–सुविधा में 'खलल' बूझि के ओह लोगिन के जियते डाहे–मुआवे के उतजोग में लागल बा। अइसनका लोगन के का कहल जाव?

पुराकथा भा पुराण कथा आ दोसरा कथा में कतने अइसन उदाहरन मिली, जवना में बेटा अपना पिता आ ओकरा खुशी खातिर आपन सरबस निछावर कर दिहलस– आयु, अरदोवाय, जवानी–इहाँ तक कि कूल्हि संसारिक सुख। भीखमे बाबा (भीष्म पितामह) एगो अइसन अमर दृष्टान्त बाड़े। बुझला एही से अजुओ पितरन का तर्पण का संगे, "भीष्म तर्पण" करे के विधान बनल बा। हमनी का पूजन–विधान में देवता लोग के नमन सपत्नीक कइल जाला आ ओही लगले माता–पिता, कुलदेवता, कुलदेवी के नमन करे क परम्परा बा। सिद्धि–बुद्धि सहित गणपति, लक्ष्मी नारायण, उमा महेश्वर का बाद "मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः"। एकरा पाछा मंशा इहे रहल कि पहिले माता–पिता के सुमिरन ध्यान–पूजन तब दोसरा देबी देवता के। गणेश जी संसार घोरियवला का जगहा माइये–बाप के घोरियाइ के बड़ भाई कार्तिकेय से पृथ्वी–परिक्रमा के प्रतियोगिता जीत लिहले।

ई कुल कथवा–कहानिया त लगभग सभे सुनले बा, बाकि गुनले बा कि ना, ई हम नइखीं कहि सकत। पितरपक्ख बितते मातृ–पूजा (नवरात्रि) क दिन आ जाई। माई–पृथिवी हई, प्रकृति हई, माई शक्ति हई, अन्नपुर्ना हई, दुष्ट आ आसुरी– प्रवृत्ति के संहारो करे वाला हई। पितरन के असीस आ माई के किरपा बनल रही त बिगड़लो कारज सही–सुफल हो जाई। एही भाव–बिचार से आप लोगिन के शुभकामना देत हम आपन एगो गीत आप सभ नेही–सुधी लोगन का आगा परोस रहल बानी–

परम्परा सुमिरन के कर्म–गीत

सरधा सनेह सरस रही जेतने
ओतने हँसी बखरी
देहियाँ से ढरी जहाँ
स्रम के पसेनवाँ
उहवें सरग उतरी!

मटिया के पयवा प' धइल धरनियाँ
बाबा अस रोके बलाय
दूनो पाटे बबुरे क थुन्हिया लगावल
बाबूजी के कन्हियाँ बुझाय
ताहि पर ओरमल राम मडइया
नेहियाँ क घर बंनि जाय
माई अस मयगर निमियाँ क छँहियाँ
काहे नाहीं चैन परी?
देंहिया से ढरी जहाँ, स्रम के पसेनवाँ
उहवें सरग उतरी!

नखी नखी निमियाँ के फुलवा असीसत
झर–झर झरे उड़ि जाय
इया अस तित–मिठ महके सोन्हाइल
दरिया उजर बिछि जाय
अँगना में तुलसी हँसत रहें, मिलि जुलि
सगरो गरह कटि जाय
सुरुज के अरघा से माँगल किरिपा
काहें नाहीं तेज बढ़ी?
देंहिया से ढरी जहाँ, स्रम के पसेनवाँ
उहवें सरग उतरी!

खरहर लगल दुअरवा चिकन होय
पनिया छिरिकले सोन्हाय
गाई के गोबरे में सानल सरधा
नेहियाँ के मटिया लिपाय
देवता क बास, रहे घर–अँगना
सभकर सपना फुलाय
निमिया के डढ़िया प' लदरी निमौली
सइँचल आस फरी।
देंहिया से ढरी जहाँ, स्रम के पसेनवा
उहवें सरग उतरी!

चढ़ते किरिन लगी तीखर घमवाँ
अगिया में देहियाँ जरी
याद आई निमियाँ क छोहगर छँहियाँ
माई नयन–बदरी
करमे के धरम बनावत जिनिगी
रुकी नाहीं एको धरी
अगिया में जेतने तपत जाई सोनवा
ओतने अउर निखरी।
देंहिया से ढरी जहाँ, स्रम के पसेनवाँ
उहवें सरग उतरी।

बखरी–घर–दालान–ओसारा, **पयवा**– पाये पर/खंभे पर, **थुन्हिया**– टेक लगाने वाले लकड़ी के टोंटे, **कन्हिया**– कंधे पर, **मयगर**– प्रेमपूर्ण/ममताभरी, **नखी–नखी**– अति छोटी–छोटी, **गरह**–ग्रह, **अरघा**– अर्ध्य, **खरहर**– अरहर आदि से बनी झाड़ू, **छिरिकले**– छिड़कना, **निमौली**–नीम का फल, **नयन–बदरी**– आँसुओं की बदली ••

डॉ0 अशोक द्विवेदी

स्व0 जगदीश ओझा 'सुन्दर' जी के तीन गो गीत

स्व० जगदीश ओझा 'सुन्दर' समकालीन भोजपुरी कविता के सुरुआती दौर के अनुभव-संपन्न 'मेच्चोर' विचारशील कवियन में गिनल जालन। बलिया जिला के भाषाई- 'टोन' आ तेवर में उनका जनधर्मी गीति-रचना के एगो संग्रह बा- "जुलुम भइले राम"। देश का आजादी का बाद मिलल 'सुराज' में जन-जीवन के विसंगतियन आ पीड़ा के मरमछूवे वाली अभिव्यक्ति देखे-बूझे के होखे त भोजपुरी साहित्यप्रेमियन के ई काव्य संग्रह जरूर पढ़े के चाहीं। 'सुन्दर' जी के कविता में जन-जीवन के जथारथ अपना सुभाविक भाव- भंगिमा आ ठेठ-भाषाई-बिनावट का साथ मौजूद बा। एम्मे जिजीविषा का साथ कठिन जीवन-संघर्ष क करुण दास्तान त बटले बा, जन-जागरण के प्रेरक आ अरथवान सनेसो बा।

सम्पादक

(एक) धीर धरऽ तनिकी (समाजवाद आवऽता)

केहू गोली दागे, केहू
छूरा चमकावता
देखऽ कवना रोब से
समाजवाद आवता।

छन्हिया उजरि गइली ढहि गइली मँड़ई,
बाबू के महलिया, अकासे तूरे तरई
उड़नी जहाजे नेता–दुन्दुभी बजावऽता
सरग सें भुंइयाँ समाजवाद आवऽता।

कोठिला के हमरा
उड़ावतारे खिल्ली
अन्न होला गाँव में
बखारि भरे दिल्ली
गाँव के पलान
राजधानी बनावताऽ
धीर धरऽ घुरहू
समाजवाद आवऽता।

केहू कहे दायाँ चलऽ, केहू कहे बायाँ,
ना बुझाइ आपन के बा, के हवे पराया,
असली मरम नाहीं केहू समुझावता
सभ कहे, हाल हीं समाजवाद आवऽता।

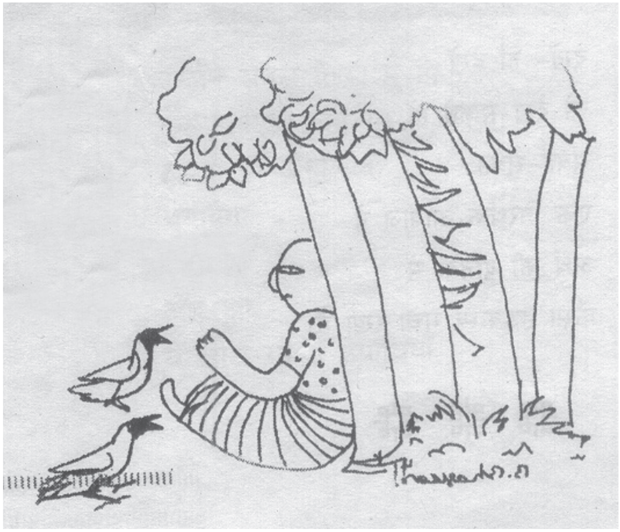

भरल बा गोदाम भूखं
डहके परनवा
नदी तीरें कंठ सूखे
कवना करनवाँ
तनी ना बुझाला
जादू–टोना के चलावऽता,
चारु ओर सोर बा
समाजवाद आवऽता।

बाबू तहरीर, पेसकार मांगे पेसी,
हाकिम के हवाला दे पियादा माँगे पेसी
बोले के सहूर ना कनून डगरावऽता–
देख एहीऽ रहियां समाजवाद आवऽता।

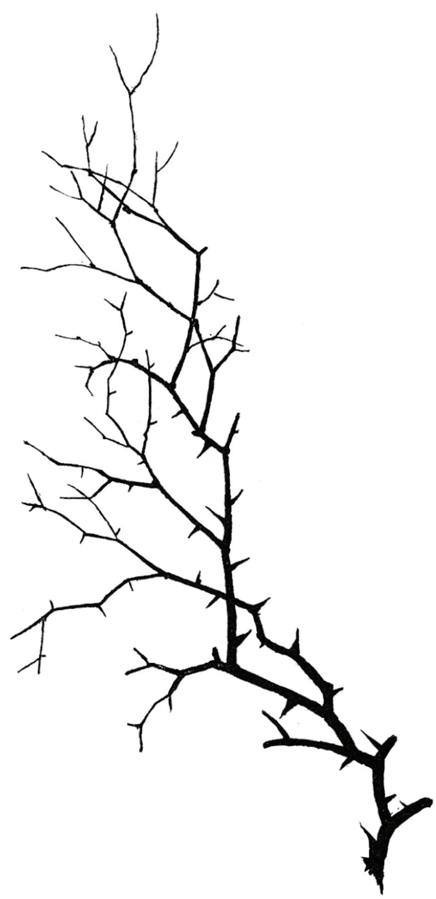

अलगां विधान बा
नियाव बाड़े झुलँगें
वोट बाड़े अलगे
चुनाव बाड़े अलगें
बूझऽ ना पहेली
लखपतिया बुझावऽता।
नारा लागे सगरे
समाजवाद आवऽता।

एमेले ना दुख, ना दरद बूझे एम पी,
मुंहवाँ में ताला बाटे कनवाँ में ठेपी,
गउंवाँ के लोग रोजे दुखड़ा सुनावऽता,
पता ना जे केने से समाजवाद आवऽता।।।

दिसा दिसा सोर भइल
जनता ना जागे
रतिया उतरली तऽ
चढ़ले अभागे
नया जुग बार–बार
टेरि के जगावऽता
सपना में देखीलें
समाजवाद आवऽता।।

हवा कइसे लगी जो ना खोलबऽ तू टाटी,
बाद कवनो आई रोटी–धोती नाहिं बांटी,
तोहरे हिसाब तोहें रोज भरमावऽता,
धोखा में तू बाड़ऽ जे समाजवाद आवऽता।।

एगो बलिदान होला
लाख लाल हरसे
पानी जरे भाप बने/तब घटा बरिसे
मनवां के अगियाना
लोर जरि पावऽता
तोहरो भरम बा
समाजवाद आवऽता।।

बीर उहे जानऽ के जे बजिया लगावेला,
जीए चाहे मूए ऊ अमर पद पावेला,
एही से फतिंगा देहि दिया में जरावऽता,
छोड़ऽना खियाल जे समाजबाद आवऽता।।

(दू) गीति गाउ रे

ए गवैया! जिगिनिया के
गीति गाउ रे!
प्रान थिरकि थिरकि जाइ–
उहे धुन सुनाउ रे।। ए गवैया।।

बन्द नया नया आवत आ जात रहिगइल
छन्द अपने में बूड़त उतरात रहि गइल
मिलल बरकत ना राहि के डेग ना बढ़ल।
ए गवैया चरनिया में
पर लगाउ रे।। ए गवैया।।

सांस–सांस बदहवास, आस छूटि रहल बा
आदमी से आदमी के साथ छूटि रहल बा
कहीं ढोल कहीं पोल, जेने देखीं ओने पोल।
बेसुरा भइल समाज
तनी सुर मिलाउ रे।। ए गवैया।।

चुभे जिया में ना जाइ ऊ कलाम का करी
दवा कंठ में ना उतरी तऽ काम का करी
एह जमाना के दौर जाम लेके खड़ा बा–

बढ़े दुइ छलांग मारि
उहे मधु पियाउ रे।। ए गवैया।।

राति जुलुम के नसाइ हंसे दरद खिलखिलाइ
लोग कहे फूल गइल आसमान में फुलाइ
अछरि अछरि दे सनेह, सबद सबद दिया बने
डहरि–डहरि नयी–नयी
रोशनी जराउ रे।। ए गवैया।।

दऽना नयना के अंजन जे जोति जगमगाइ
दऽना मनवा के मंजन जे मइलि छूटि जाइ
हवा बहे सनसनाइ तहार गीत गुननुनाइ।
फरकि उठे गतर–गतर
बीन अब बजाउ रे।। ए गवैया।।

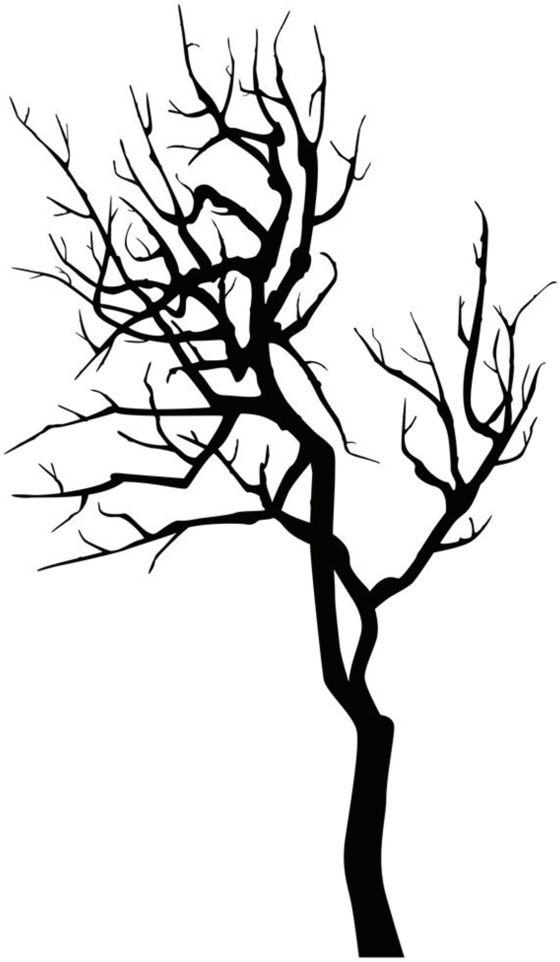

(तीन) पहाड़ भइल जिनिगी!

सगरी बिपतिया के गाड़ भइलि जिनिगी
नदी भइल नैना, पहाड़ भइलि जिनिगी।

आगि जरे मनवाँ में–
धधके ले सँसिया
असरा में धुवाँ उठे–
प्रान चढ़ल फँसिया।
देहि के जरौना बा, भाड़ भइल जिनिगी
नदी भइल नैना, पहाड़ भइलि जिनिगी।

केहू माँगे घूस केहू–
माँगे नजराना,
केहू माँगे सूदि मूर्ह
केहू मेहनताना।
कुकुर भइले जुलुमी जन, हाड़ भइलि जिनिगी
नदी बनल नैना पहाड़ भइलि जिनिगी।

केंड़ी मारे केहू–
केहू मारे बटखरा
एगो जीव दुखिया बा–
कइ–कइ गो बखरा।
अनका मउज के जोगाड़ भइलि जिनिगी
नदी भइल नैना पहाड़ भइलि जिनिगी।

केहू गारि देउ केहू–
धइ के दबावे
छुइ–छुइ करेजवा के
घउवा बढावे।
फुसरी से बढ़ि के, भगाड़ भइलि जिनिगी–
नदी भइल नैना, पहाड़ भइलि जिनिगी।

बालम लट उरझे

✍ दिनेश पाण्डेय,

केश खुद–ब–खुद में एगो अझुरा हवें। खास क के मरद के त केश से हरमेसे अदावत रहल ह। जेकरा गच प पोंछा मारे के अनुभव ना होखे ऊ एह बात के मरम का बूझी? कुछ लोग अइसनों हो सकेलें जेकरा एह बात के समुझे में कवनों दिकदारी त नइखे, बाकिर एह तपलीख के सरेआम इजहार कइला के बजाय 'मनहीं राखो गोय' के 'रहिमन–सीख' प जियादह भरोसा क के चलेलें। एकरा पीछे आन के अठिलइला से अधिका मरदानी आन प बट्टा लागे के अवास्तविक डर होला। झाड़ू–पोंछा लगावे में केश ना मिले त ई कव मिनिट के काम बा, कहीं भला? बाकिर केस के मिलल दुरलभ चीज ना ह, मिलबे करी, आ तेकर मिलला के परिनाम मत पूछीं, अदबद के दुरजन–संजोग का माफिक– 'मिलत एक दारुन दुख देहीं।' बहरले ना बहराई, पोंछले ना पोंछाई। कहीं चुटुकी के गिरफ्त में लेवे के इरादा होखे त बड़ मोसकिल, धइले ना धराई, ढुँढ़ले ना ढुँढ़ाई। कहीं पकड़ में आ गइल त उचित जगहा फेंक के, दूरतो वा विसर्जनम् क के, देखाईं त जानीं। कुकुरमाछी अस हाली अंग ना छोड़ी। उधिया के चेहरा प चपक गइला प कतनों अँगुरी फेरी बाकिर मकड़ी के जाला के अहसास ना जाई। मन अकबका जाला जी! ईहे ऊ बखत ह जा घरी चिंतना में ई सवाल जबरिया घुस आवेला कि लमहर केश राखे के चलावा कब से आ काहे चलल होखी? साइद मानव सभ्यता का संगे, काहे कि तब मूँड़े–कतरे के कवनों बेंवते ना होखी। बाद में धातु के खोज आ छूरा–कइँची के जोगाड़ भइले एह अझुरहट से निजात पावे में सहुलियत भइल।

केश के लिखितो बखान बहुते पुरान जमाना के बा। सिर के बार के अरथ में केश के वैदिक संहितन आ ब्राह्मण ग्रंथन में बहुते जिकिर भइल बा। ऋग्वेद में तेजस्वी प्रकाश पुरुख अग्नि के ***'घृतकेश' (घृतकेशमीमहेऽग्निं, ऋग्वेद 8.60.2),*** याने दिपदिपात तेज के स्निग्ध, सुंदर केश धारण करनेवाला, ***'शोचिष्केश' (ऋग्वेद 5.8.2),*** याने तेज के केश सरिस धारण करेवाला, ***शोतिष्केश पुरुप्रियाग्ने (ऋग्वेद 1.45.6)***, मतलब तेजोमय केश वाला अतिप्रिय अग्नि कहल गइल बा। अथर्व के एक ऋचा में सरबस केश–दोष में नितत्नी नाँव के औसध प्रयोग के बात आइल बा–

"देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे। तां त्वा नितत्नि केशोभ्यो दृंहणाय खनामसि। दृंहप्रत्नान् जनयाजातान् जातानु वर्षीयसस्कृधि।" (अथर्व 6.136,1–2)

"हे दिव्य औषध, तू पृथिवी देवी में उपजल बाड़ू। तू जवन नीचे जमीन पर पसरल बाड़ू, हमनीं केश के सुघड़ आ मजगूत करे खातिर खनत बानीं। तू केश के सुदृढ़ करऽ, जहाँ नइखे जामल, जमवा द आ जवन जाम गइल बा तेकरा के लमहर क द।" अइसन निहोरा त उहे क सकेला जे खल्वाट होखे, भूंड होखे, खउरा ध लेले होखे अथवा केश दुफँकिया, कमजोर हो के झरत–झुरात होखस।

परिस्थिति के भिन्नता में एके चीज के फाइदामंदी अलग–अलग होला। ऊ कइसे त कहल बा नू?– ठाँव जान काजर, कुठाँव जान कारिख। केहू समरथी के माथ प केश–कुंज उगावे के सवख बा त उनकर मरजी बाकिर आम आदमी बदे ई त जीउ के जँवजाले ह। वैदिक ऋषि एक दोसरे करने नाऊ के गोड़धरिया करत नजर आवत बाड़ें–

यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वप्ता वपसि केशश्मश्रु।
शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषी। (अथर्व 8.2,17)

(हे केश–दाढ़ी स्वच्छ करनिहार नाऊ, तू छूरा के धारदार घोंटि के हमार मुँह सुंदर क द, बस आयु जनि हर लिहऽ, मतलब धेयान रहे कि घेंटी ना कटे।)

ई बात दिल्लगी में कहल गइल बा कि पूरी गंभीरता के संगे, एह बात के कवनों पुख्ता सबूत नइखे। कहीं, कतना बिखम हालात होखी? एक दने दाढ़ी–माथ के असह ककुलहट से पैदा बेचैनी, दोसरा दने नाऊ देवता के धेयान बिचिलले जिबह होखे के हदस। आखिर पहिलका साँसत के आगू दुसरका जोखिम जादे सुभीता के ठहरल। फिर घलुआ में मुंडित सिर सुहुरावे के सुख आ दाढ़ी के झंखाड़ में से असली चेहरा उजागर होखे के दिव्य अहसास के आनंद केहू काहे ना लेल चाही? असहूँ मरद खातिर लमहर केश राखल कवनो नीमन बात थोरे ह। शतपथ (कां० 5, अ० 1, ब्रा० 2, कं० 14) में झोंटइल 'पुरुष' के 'बिचबिचवा' मानल गइल बा– ***"पुरुषो यदव्ह पुमांस्तेन न स्त्री यदु केशवस्तेन न पुमान्नैतदयो"***– चूँकि पुरुष ह एसे स्त्री ना ह आ लमहर बार बा एसे पुरुषो नाहिएँ ह। अजहूँ स्थिति ओइसने बा। भोजपुरी के अगड़धत कवि कुंजबिहारी कुंजन जी एक बेरि बस में अरराइल धकियावत आवत लमकेशी लइकी के देखि के वहम में एगो भलमानुस वाला सलाह दे बइठे के अनुभव के बखान करत बानीं, ऊ त कहीं जे बाद में उहाँ का असलियत बुझा गइल रहे, बस 'ब्लाइंड' के तमगा मिल के बात टर गइल–

"कहनीं बाची जा होने खाली बा सीट जनाना।
कहाँ धसोरत अइलू एने कुल्ह बाड़न मरदाना।"
सुन के आँख तरेरलस आ पिछवा घूम
के बघुआइल,
अपना जाने गरजल बाकिर बकरी अस
मेमिआइल।
"बूढ़ा क्या बकबक करता है आफ हुआ माइंड है?
लड़के को लड़की कहता है पूरे का ब्लाइंड है!"

केश के अझुरा से निजात पावे के फितरत सन्यासी, श्रमण, बौद्ध–भिक्खू सबमें रहल ह। ई मुक्ति के राह प आगे बढ़े के पहिला डेग ह। महाभिनि क्रमण के बखत महात्मा बुद्ध सबसे पहिला काम ईहे कइले कि कतने ना जतन से पालल–पोसल केश के उतार के छंदक के हाथ में डाल दिहले। श्रमण परंपरा में त केश काटे के बजाय नोंच के बिग देवे के बिधान बा। सरहपा सिद्ध–बौद्ध संन्यासी रहलें, जरूरे माथ मुड़ावत होइहें बाकिर पता ना काहे दिगंबर जैन संन्यासी लोग के केश–लुञ्चन बिधि प तनिका असहमत लागत बाड़ें। हो सकेला उनुका माथ मुड़ावे में ना बलुक नोंचे के क्रिया से हदस होत होखे–

"दीहणक्ख जइ मलिनें बेसे।
णग्गल होइ अपाडिय केसे।" –सरहपाद

(आपन जड़ता में दिगंबर, मलिन भेख आ लुंचितकेश रहेलें।) कबीर एक त गिरहस्थ रहलें, दोसरे मस्तमौला जीव। एह भिन्नता के असर उनकर बिचार प परहीं के रहे, से परल। उनका एह बात से कवनों फरक ना पड़े के रहे कि बार बढ़ावल जाय भा मुँड़ावल जाय। असली बात त ई ह कि सच्च ईस्सर के सोहाला, ए से सत्ये के साधना परम ध्येय होखे के चाहीं। बाहरी भेख–भूसा में कुछ नइखे धइल। चाहे लाम–लाम केश रख ल भा सरबस मुड़वा घोंटवा लऽ–

साँई सो साँचा रहौ, साँई साँच सुहाय।
भावै लंबे केस रखु, भावै घोंट मुंडाय ।। –कबीर

कबीर कहीं केश मूँड़े के बजाय डँकइत मन के घोंटे– ***मन मैवासा मूँड़ि ले, केसौ मूँड़े काँई***– के उपदेश करत, कहीं– ***मूँड़ मुँड़ावत दिन गए, अजहूँ न मिल्या राम***– के अनुपलब्धि प माथा पीटत, कहीं– ***"केसन कहा बिगारिया, जे मूड़े सौ बार"***– के अतिवाद प तरस खात, त कहीं दाढ़ी बढ़ाके बोका बने– ***दढ़िया बढ़ाइ जोगी बनि गइले बकरा***– के बात प ताना मारत सगरे मिल जइहें। एह डोलड्रम (दोल–द्रुम) के पीछे एगो बड़हन डर बा। कबीर के कहनाम कि ओह केश के फिकिरे का मुए के बा जेकर जरि काल के पकड़ में बा, पता ना देश–परदेश कहवाँ आ कब हन दे–

"कबीर कहा गरबियो, काल गहे कर केस।
ना जाने कहँ मारिसी, कै घर कै परदेस।"– कबीर

केश के एगो व्युत्पत्ति– ***"के मस्तके शेते, शी+अच्, अलुक् समासः"***– कइल गइल बा, तेकर गोटे मतलब ई कि एकर एह अभिधान के प्राप्ति लिलार प आराम फुरमावे का ओजह से भइल। बाकिर उणादि सूत्र (5.33) में भगवान पाणिनी तेकर व्युत्पत्ति– ***"क्लिश्यते क्लिश्नाति वा–क्लिश्+अन् लोलोपश्च"***– कइले बाड़ें, याने जो कलेस में होखे भा कलेस देवे। अब लीं, हेहिजो एह बात के तस्दीक भइल कि ना, कि केश दुखदेवन चीज ह। 'सुखबोध' में केश (चुल) के आठ माह के गर्भस्थ–शिशु के सिर प जामे वाला मज्जा के उपधातु– विशेष बतावल गइल बा– ***"मज्जातोपधातुविशेषः। चुल इति भाषा। स तु गर्भस्यबालकस्य अष्टाभिर्मासैर्जायते।"*** आधुनिक जीवशास्त्र में बार के थनधारी जीव के चमड़ी के बहरिया उपज (उद्वर्ध) मानल गइल बा। ई कीट, पशु–पंछी आदि कइयक जीव के देह प तंतु जइसन बारीक संरचना के रूप में पावल जाला। ई करियवा के बार जइसन कड़ा–रूखर त साही जइसन नोकदारो हो सकेला। केश ठंढा–गरम मौसम के असर के उलट शरीर के बचाव क पावेलें। आदमी खातिर बार के बहुते उपयोग बा, बुरुस

बनावे, गद्दा, कपड़ा, ऊन, फर, चद्दर–कंबल, बार के टोपी (wig), चोटी, औसध आदि में बार के बेवहार होला। केश से जुड़ल व्योपार के त अतिना बिस्तार बा कि गिनले ना गिनाई, जेकरा में नापित कर्म (कतरन, मूंड़न, उच्छेदन) से लेके तेकर केश–कल्प (खिजाब, मेंहदी आदि से रंगाई), विरंजन, साज–सज्जा, केश–विन्यास भा जूड़ा–संरचना, प्रसाधन अउ अगड़म–बगड़म, सब शामिल बाड़न। बेहिचक कहल जा सकेला कि संसार के सबसे बड़हन वेवसायन में से एगो केशे से जुरल बा।

संस्कृत में चिकुरः ***कुन्तलः वालः कचः शिरोरुहः मूर्द्धजः श्वस्रः वृजिनः तीर्थवाक्*** आदि शब्द आम रूप से केश के पर्याय बाड़ें। केशवाची शब्दन के बाद में जोड़ के ***केशपाश, केशरचना, केशभार, केशोच्चय, केशहस्त, केशपक्ष, केशकलाप*** जइसन 'केशसमूह' के अर्थबोधक शब्द बनेलें। सुभावतन टेढ़ बार के ***अलक, चूर्णकुन्तल, कर्कराल आ खङ्गर*** नाँव हवें। लिलार प लटकत केश ***भ्रमरक, कुरुल, भ्रमरालक*** कहल जालें। ***धम्मिल, मौलि*** आ ***जूटक*** 'बंधल केश' के नाँव ह। ***कबरी, कर्बरी भा कबर्या*** केश–रचना के, वेणि, प्रवेणी गूँथल चोटी के आ ***शीर्षण्य, शिरस्य, प्रलोम्य, विशद*** धोवल–पोंछल निरमल केश के वाचक शाब्द हवें। सँवारे में केश–समूह के दू हिस्सा में बँटे से सिर प उभरल रेखा ***सीमन्त*** ह। ***'पलित'*** पाकल केश ह। ***चूड़ा, केशी, केशपाशी, शिखा, शिखण्डिक,*** सिर के ऊपरी मध्य–पीछे भाग में बनल चुटिया के नाँव हवें। कउआ के पाँख जइसन दूनो भाग में कटावल लरिकन के केश ***काकपक्ष*** ह। ***तनरुह, रोम, लोम***, देह के रोंआँ आ ***श्मश्रु*** दाढ़ी–मोंछ के बढ़ल बार हवें।

भोजपुरी में शरीर के कवनो अंग खास क के सिर के बाल खातिर ***केश, बाल, बार*** आम वेवहार के शब्द हवें। ***'काकुल' गेसू, झुलुफी (जुल्फ), बबरी, लापर*** या ***लाबर*** चेहरा प भा तेकरा इरिद–गिरिद झूले वाला लट के नाँव हवें। ***झँखुरा, झोंटा*** सिर प के बढ़ल लमहर केश–समूह ह। ***चुटिया, चुरकी, चूल*** सिर के बाल आ शिखा के बोधक शब्द हवें। हिंदू पुरुष द्वारा अक्सर सिर के मध्य भाग में धारण कइल जाए वाली शिखा के ***टीकि*** भा ***चोटी (वेणी)*** भी कहल जाला। स्त्री–केश के तीन फाड़ में सिर के पीछ समेट के आ आपस में गुह के बनावल सर्पनुमा केश–विन्यासो चोटी ह। ***इकचोटिया*** चोटी–बंध तुम्की भा सीधी माँग में होला जवना के बंधाव आ साज–सज्जा में छोट कँकहा, किलिप, फीता, मोतीलरी, गजरा, लटगेना (बाल में लागल फूल) आदि के प्रयोग होला। सोहागवती स्त्री बदे इकचोटिया केश–बंध मरजादा के आदर्श मानल गइल बा। अपहृता सीता अशोकबन में केश–सज्जा के इकचोटिया आदर्श से कबो ना डिगली– ***"कृस तनु सीस जटा एक बेनी।"*** ***दुचोटिया*** में पीठ कावरि बँवारी–दहिनवारी भाग में केश के दूगो चोटी गुहल जाला। चोटी के सीधे पीठि प झूलत छोड़ दियाला अथवा मोड़ के विभिन्न आकृति में ***खोंपा*** या ***जूड़ा*** तैयार कइल जाला। केश–बंधाव ***तिनचोटिया*** भा ओकरो से अधिक हो सकेला। केश के अलग–अलग दिशा में मोड़ दे के, किलिप के सहारे टिका के अनेक केश–संरचना तैयार होली। ई सब फुरसत, अवसर, रुचि आ कलात्मक दक्षता प निर्भर करेला। ***'लट'*** बार के गुच्छा आ ***'लटुरी'*** लरिकन के केश–गुच्छ ह। समुचित मात्रा में, सही जगह से लट के चुन के ***सीधी*** या ***सटकारी*** अथवा ***घुरचियाह (बाँकी या कुटिल)*** सरूप में लिलार अथवा गाल प झुला दिहल जाला जे से चेहरा के सुघराई अउरे निखर जाला। जवन स्त्री के सिर प लामा–लामा केश होखे ओकरा के ***लमकेशी, झोंटइला*** भा ***झोंटिग*** कहल जाला। लाम केश सुनरपन के मानक ह हालांकि ***केशाकेशि,*** भा कहीं कि ***झोंटा–झोंटी*** में ईहे आफत के सबब बन जाला। झारे–सँवारे, के अभाव, धूर–गरद बइठे, तेलकट होखे से लटियाए के स्थिति में तेकरा में चीपड़ जम जाला, अइसन केश–समूह के जटा कहल जाला। कइयक साध–महतमा बरगद के दूध आदि से कृत्रिम जटा बना लेले। जेकर जटा होखे ***ऊ जटहा, जटिल, जटाधर*** भा ***जटाधारी*** होलें। शिवजी सबसे बड़का जटाधर हवें। 'शिवपुराण' (2.3.49) के अनुसार बरम्हाँ जी के भरम तबे मेंटल जब ऊ देवता लोगन से स्तुति–पाठ सुनले जेकरा में एह बात के खुलासा रहे कि असीम आकाश शिवजी के सिर आ ढोंढ़ी, हवा नाक, अगिन, चान, सुरुज आँखि, बादर जटाजाल आ गरह–निछत्तर गहना–गुरिया हवें।

देह के चमड़ी प उगल केश के ***रोंआँ, रोईं*** भा ***रोंगटा*** अभिधान ह। आँखि के ऊपरे के हड्डी प जामल बार के ***भवँ, भौं, भौंह, भृकुटी*** या ***भ्रू*** कहल जाला। ***पपनी, बरौनी*** पलक पर के बार हवें। केश के रंग ***करिया, भूअर, कपिश, पिंगल, सफेद,*** नृजाति आ वयस् भेद से ***गंगाजमुनी, धवल, सुनहला, लाल अधपक भा खिंचड़ी (करिया ऊजर के मेरफेंट)*** होखेला। सामवेद पूर्वार्चिक, मं०सं० 623 में सोमपान से इन्द्र के मोंछ के हरियर हो जाए– ***"हरीतइन्द्रश्मश्रूणी"***– के रोचक बखान बा। ऋग्वेद (1.79.1) में अग्नि के हिरण्यकेश (सोनकेश) कहल गइल बा। गठान के नजरिए केश ***घुंघराला, गझिन, छेहर, झाबर, झबर–झबर, सूअरबारा (कड़ा आ ऊपर कावरि ठाढ़), लहरदार*** आदि होला।

वैदिक साहित्य के अलावे बाद के संस्कृत साहित्य में

कहीं सामान्य तौर प त कहीं स्त्री–सौंदर्य के बरनन में केश आ तेकर पर्याय के प्रचूर उल्लेख मिलेला। बतौर नमूना कुछ सामग्री के सामने रखल जा सकेला। वाल्मीकि रामायण (3.52.19) में हरन करके आकाश–पथ से ले जात सुकेशी सीता के मुँह के नीलमेघ के बेध के कढ़ आइल चनरमा से उपमित कइल गइल बा। कवनों दुर्भावना से स्त्री के केश खींचल भारतीय संस्कृति में नीचपन के हद मानल गइल बा। खुद के बरबादी पर आतुर रावण से ईहे घिनावन अपराध भइल– ***"जीवितान्ताय केशेषु जग्राहान्तकसंनिभः"– (वा०रा० 3.52.11)***। दुनियावी मरजाद के नाश होखहीं के रहे– ***"जगत् सर्वमर्यादं तमसान्ध. `न संवृतम्– (वा०रा० 3.52.9)।"*** बरम्हाजी तखनिएँ समुझ गइनी कि अब काज सिद्ध भ गइल– ***"कृतं कार्यमिति..." (वा०रा० 3.52.11)***– मतलब कि आजु रावण के अंत तय भ गइल। एकदिन काल रावण के हू–ब–हू ओही हालात् में ले आके ठाढ़ क देलस जहाँ तेकर बेइंतहा अहं धूरि में मिल गइल। नैतिकता के सवाल उठ सकेला, दुनियो माफ क देवे त क देवे, बाकिर हनुमान जगत–जननी के प्रति अइसन घोर अपराध प उदार ना हो सकत रहन, ऊ रावण के पट्टमहिषी, मंदोदरी के ऐन ओकरा सामने झोंटा खींच के ओही बिथा के अहसास करा देले, ठीक ओसहीं जइसन जमराज पापियन के कष्ट देवे में कवनों कोताही ना करस। तुलसीदास जी हनुमान के एह रूप के सिद्दत से बिनती कइले बानीं– ***"जयति मंदोदरी–केश–कर्षण, विद्यमान दशकंठ भट–मुकुट–मानी"***– (वि०प० 29–4)। 'मनुस्मृति' (7.91) में युद्धभूमि में ***'मुक्तकेश'*** हो के हथियार डालेवाला निबलशत्रु के हत्या निखिध कहल गइल बा, 'कुमारसंभवम' (5.8) में श्मशान में बिखरल केश– ***'विकीर्णकेशसु परेताभूमिषु'*** के जिकिर आइल बा।

'रघुवंशम' में नंदिनी के पीछे घुमत धनुखधारी दिलीप के जंगली लता सरीखे अझुराइल केश– ***'लताप्रतानोद्‌ग्रथितैः स केशैरधिज्यधन्वा विचचार दावम्***– (2.8) बरबस ध्यान खींच लेता। धुंघराला केशवाली इंदुमती के हृदय में छीपल नेह के चुगली देह प के रोंगटे क देत बाड़े– ***"रोमांच लक्ष्येण स गात्रयष्टिं भित्वा निराक्रामदरालकेश्याः– (रघु० 6/81)।"*** इंदुमती के स्वयंबर के बाद भइल लड़ाई में उड़त बाज के चंगुरा में फँसल केश से देर तक लटकल जोधा के मूंड के भयगर तस्वीर उकेरल गइल बा– ***"हृतान्यपि श्येन नखाग्रकोटि व्यासक्तकेशानि चिरेण पेतुः (रघु० 7/46)।"*** 'रघुवंशम्' में केश के सुघराई के एक–से–एक मानक बाड़े। सुदक्षिणा के सुचिक्कन केश अतना मुआफिक रहन कि घोड़न के खुर से उड़ल धूर टिके के के कहो, छुइयो ना पावत रहन– ***"रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालक वेष्टनौ (रघु० 1/42)।"*** रघु के धावा से डर के भागत केरल के मेहरारुन के केश प बइठल धूर कस्तूरी के बुकनी लेखा लागे– ***"अलकेषु चमूरेणुश्चूर्ण प्रतिनिधी कृतः (रघु० 4/54)।"*** शचि के चोटी के कल्पतरु के पियराह फूल से सिंगार के अइसन चस्का रहे कि ना भेंटले उनुकर गाले प झूल जाय– ***"शच्याश्चिरं पांडुकपोललंबांमंदाररन्यानलं कांश्चकार (रघु० 6/23)।"*** ई अभाव में रुचि के सरिस बस्तु से अदला–बदली के परतुक भइल बाकिर ताज्जुब कि ई रुचि कवनो चेतन जीव में ना बलुक जड़ 'चोटी' में उपजत बा। मतलब, 'जहँ अस दसा जड़न्ह के बरनी', त 'की कहि सकई सचेतन करनी'। एक जगे, इंदुमती के बिखरल केश से ढँकाइल गुमसुम चेहरा देख के अज के छातिए दरके लागत बा– ***"इदमुच्छ्‌वसितालकं मुखं एव विश्रांत कथं दुनोति माम् (रघु० 8/55)।"***

बाण के ***'कादम्बरी'*** (पृष्ठ २२४–२२८) में भयानक शबर–मूंडमाला सरिस लाल याक के पूंछ के बार के पाँति से घिरल 'कपिला–केश–भीषण' देवी के बिगरह के चितरेखन भइल बा। 'गाहासतसई' के नायिका नहान के बाद केश के निरमल निखार के असर से नावाकिफ नइखी। तनी हई लीला देखल जाव–

"खिन्नस्सउरे पइणो ठवेइ गिम्हावरण्हरमिअस्स।"
ओलंगलन्त कुसुमं ण्हाण सुअन्धं चिउरभारं।"
(गा०स० 3.99)

(ऐन गर्मी के दुपहरिया में सुरत श्लथ पति के छाती प ऊ आपन गीला, झरत फूल वाला, नहाए के बाद महमहात केश के रख दिहली।)

गीतगोविन्द (2.3.5) में अतिशय आकुली में राधा के जूड़ाबंध खुल जाता– ***"श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया"***। हिंहाँ त लीला हरि राधा के करिया लहरदार केश के सरकवाँसी में फँस के जान दे देल चाहत बाड़े– ***"श्यामात्मा कुटिलः करोतु कबरी–भारोऽपि मारोद्यमम"*** –गीतगोविन्द (3.7.12)

अवधि भाषा में जायसी के रचना 'पद्मावत' में स्त्री के सुघरता के बखान के जहवें मौका हाथ आइल बा उहाँ केश प्रबल खिंचाव के केन्द्र में रहल। 'नखशिख' बरनन में पद्मावती के केश खातिर सरबस उपमान बिटोरल लिहल गइल बाड़न। कस्तुरी बरन केश, अतने से संतोष नइखे त भँवरा, फिर मलछत नाग, जे चोटी खोल के झार दिहली त बूझीं कि सरग–पताल अन्हार भ गइल। एह में महज रंगे नइखे, रूपो बा, गतियो बा आ तेकर अचूक असरो के संकेत बा। कोमल, बंक, पहाड़ अस करिया भुच्च, लहर मारत नाग, देह–चनन के आकर्षण में लपटाइल होखस जइसे। बिखइल

घुंघरारी लट त प्रेम के फंदे बुझल जाव जवन केहू के गले बंधल चाहत बाड़ी–

"अस फँदवारे केस वै राजा परा सीस गियँ फाँद।
अस्टौ कुरी नाग ओरगाने भै केसन्हि के बाँद।"

(जायसी)

विद्यापति के नहा के पोखर से निकसत नायिका के केश से गरत पानी के धार चेहरा–चनरमा के डर से रोवत अन्हार सरिस लागत बा– ***"चिकुर गरए जलधारा। जनि मुख–ससि डरें रोए अँधारा।।"***

कवि लो के नजर बड़ा शातिर होला, ऊ सब देखि लीहें जवन अक्सर एक सामान्य अदिमी से ओझिले रही। एक त बहुरिया के लाल आँखि, खरोच परल ओठ, खुल के अलसाइल–छितराइल केश, तेपर पति के पास से आ रहल बाड़ी, सरम से गड़स ना त का करस? कवनो रहस उजागर होखे के अनेसा भइल लाजिम बा–

"अरुन नयन खंडित अधर, खुले केस अलसाति।
देखि परी पति पास तें, आवति बधू लजाति।"

(कृपाराम)

विक्रम कवि कान के तरौना ऊपर छितराइल केश लखि के एह भरम में पर जात बाड़े जइसे सघन अन्हार सुरुज के दाब लेले होखे–

"तरल तरौना पर लसत, बिथुरे सुथरे केस।
मनौ सघन तमतौम नै, लीनो दाब दिनेस।"
(विक्रम)

बिहारी त एक–से–एक जटिल चितरेखन में माहिर रहन। अब नहा–धो के निचिंता में केहू केश सँवारत बा, ईहो कि कँकही फेरे में केश चेहरा के ढँक लिहलें, त ठीक बा, बाकिर हई लट के पकड़ के बीच अँगुरिन के रंध्र से नंदकुमार के ताका–ताकी के का मतलब?–

"कंज–नयनि मंजनु किए, बैठी व्यौरति बार।
कच–अंगुरी–बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार।"
(बिहारी)

काव्यकला में सिद्धहस्त लोग असल में जिनिगी भ अपने भोगल जथारथ के कसोरा में सी–समुंदर खोजत रहेलें। चलीं जाएदीं, सितुही में अनँत–दरसन के ई तकनीक कतना कारगर बा ए प मग. जमारी कइला के का दरकार? हाथे लागे के बा त बस बलमखीरा, तेकरे के माथे चढ़ावे के सेवाय कवन चारा बा? कहल जाला नू कि बानर के बलाय, तबेले के सिरे, कइयक लोगन के ईहे फितरत ह–

"बिखरी हुई वो ज़ुल्फ़ इशारों में कह गई
मैं भी शरीक हूँ तिरे हाल–ए–तबाह में।"

(जलील मानिकपूरी)

जॉन एलिया के मजबूरी अलगे बा। जिनिगी में दिक़दारी कहवाँ नइखे? दुखम–सितम के गँठरी संगहीं लदले चले के बा। एह पीरा के कम करे भा सहे के अनेक साधन हो सकेलें। एगो ईहो कि हई, ना त हई, भा हेकरा जगे इइहे काहे ना?–

"अपने सर इक बला तो लेनी थी
मैं ने वो ज़ुल्फ़ अपने सर ली है।"

बकौल तुलसी बाबा, जदि सपना में केहू सिर काटे त बेगर जगले दुख ना मेंटे– ***"जौं सपने सिर काटै कोई। बिनु जागें दुख दूर न होई।"*** बात के जथारथ में कवनो संदेह त नइखे बुझात बाकिर कुछ लोग के अनुभव बिचित्तर ह, हेह उलटपंथी के मतलब जानल जरूरी बा–

"देखी थी एक रात तिरी ज़ुल्फ़ ख़्वाब में
फिर जब तलक जिया मैं परेशान ही रहा"
(रज़ा अज़ीमाबादी)

भोजपुरी साहित्य में लोकसंस्कृति के असर बहुते गहिरोर बा। एजा आभिजात्य के छाम–छुम के बजाय सहज लोकजीवन बदे खिंचाव प्रबल बा, तेकर असर, कथ्य आ शैली सभ पर दीखेला। एही से हिंहा बस्तु में जटिलता के जगह सहजता के तकाजा अधिका नजर आई। उपमेय खातिर असंभव उपमान अथवा विशेषण के खोज आ एह बात के लेके कवनो हीन भा उच्च भावना ना रहल। जे कुछ बा, आसपास के बा, चीन्हल–जानल बा, जवन नीमन बा तवनों, जबून बा तवनों। केश कोमल, करिया, लहरिया, घुंघराला आ भुँइयाँ लोटत लाम भ गइल त सरबस बेहतरीन मानक मिल गइल– ***"लमहर केसिया पतर करिहाँव"***– (धरनीदास)। सहज सौंदर्यभाव के तिरपित करे में अतिना सामग्री कम नइखन। ईहाँ अफरात अघाए से थिराइल भाव के उसुकावे बदे खुराक के अतिरेक के जरूरत नइखे। असहूँ जिनिगी के जथारथ में 'नाजुक' के प्रति शायद वाजिब सहानुभूति शेष नइखे। अदिमी अगते से अधिका खुदगरज, बदतमीज आ क्रूर हो चुकल बा। जो कुछ सीधा बा, सुंदर बा, ऊ चाहे प्रकृति होखे भा सचेतन जीव, अदिमी के बर्बरता के आसान शिकार बा। एक मार्मिक सोहरगीत में एह स्थिति के महसूस कइल जा सकेला–

"एक त मैं पान अइसन पातरि, फूल
जइसन सूनरि रे,
भुँइयाँ लोटेले लामी केसिया, त नइयाँ
बँझिनियाँ के हो!"

जिनिगी एगो अविराम सफर ह। आइल–गइल, उजड़ल–बसल सबकुछ एक सिलसिला में चल रहल बा। एक स्त्री के जीवन में ई उथल–पुथल तनी जादहीं बा, पाँव कतहूँ थिर

नइखे। सारी कोमलता अपनी जगह बाकिर जीवन के वास्तविकता से उपजल वेदना से निजात के कवन उपाय?

"उठ–उठ बछिया झारहु लामा केश।
जत झारे केसिया ततहि नयना लोर।"
(भोजपुरी संस्कार गीत पृ० 397)

बिभिन्न मिसालन प तनिका धेयान देले ई साफ–साफ समुझ में आवे लागत बा कि केश के प्रतीकात्मकता सीमित फैलाव में ना होके बहुआयामी बा। ***"स्रवन समीप भए सित केसा"*** (तुलसी, मा० 2.2/4), ***"अझुरल केसिया सँवार बारी हो ननदी"*** (कबीर, भोजपुरी के कवि और काव्य पृ 44), ***"गंगा नहाय लट झूरवे हो, राधा मन पछतायँ"***– (बारहमासा, भर्तृहरि) से परगट भाव–विस्तार के दायरा कुछ अउरे बा। केश के अझुरा अइसन नइखे जे एक छोर धइले सब गाँठ खोलत अंतिम छोर तक पहुँच जाइल जाव। ***'बदमाश–दरपण'*** (तेग अली 'तेग') के ओस्तादजी के परेशानी के ओजहो (वजह) जान लेहल जरूरी बा, हिंहवाँ त बार साँप–बिच्छी, गर–फंद, भूल–भुलैया, जाल, बेड़ी, सब सरूप में ढल गइल बाड़न–

"नागिन मतिन त गालै पै जुलफी क बार बाय।
भौं औ बरौनी रामधै बिच्छी क आर बाय।
(ब०द० 17)

जब से फंदा में तोरे जुलफी के आयल बाटीं।
रामधै भूल भुलैया में भुलायल बाटीं। 21 ब
द(ब०द० 21)

ए राजा देखीला जुलफी के जाल से तोरे
छुटब न रामधै चिरई मतिन बझल बाटीं।।
(ब०द० 27)

जेहल में तोड़लीं हँ बेड़ी और हथकंडा डंडा।
से तोहरे जुलफी के फंदा में हम फसल बाटीं।"
(ब०द० 28)

भोजपुरी साहित्य में नायिका भेद के चितेरा बलबीर केशन के घनचक्कर में एगो दोसरे आफत मोल ले लेले बाड़न– ***"अपने हाथन तोर बरवा सँवारे बलबिरवा त भइल बा मजूर।"***

अक्सर खुली–गोपनीयता के बात होला, मतलब जे उहो जानत बाड़े, हउहो जानत बाड़े, आ सभे ई जानत बा जे उनुका अलावे अउ केहू नइखे जानत। जीवन के अनुभव, सुख–दुख, सपन, तिरिसा, होला त बेकतिए के स्तर प बाकिर एह ऊपरी भिन्नता के बावजूद तेकर तासीर पूरी दुनिया में एके मतिन होला। हमार ऊदे भाई के का कहे के बा, ऊ त बस उहे बाड़न। एह चुप्पे चोरी वाली खुली–गोपनीयता के एह तरकीब से सोझे ध दिहलें कि लोग मुँह बवले ई सोचत रह जाला कि ई बतिया त हमहूँ जानत रहलीं बाकिर जुबान के अभाव में, जानत रहनीं कि ना जानत रहनीं, केहू ई कहाँ जान पावल?

"चुप्पे चोरी बदरा के पार से
सउँसे चनरमा उतार के
माई तोर लट सझुराइब
चुप्पे चोरी लिलरा में साट देब" (प्रकाश उदय)

बुझाता जे केश सझुरावे के ई चाहना कवनो 'दिन के सपना' ह।

••

❑ संचार नगर, दानापुर, पटना।

कहानी के कहानी

प्रेमशीला शुक्ल

इ कहनी हम 'आजी' से सुननी।
कहत आजी कइली सचेत।
कहनी खाली सुने खातिर ना होले, गुने खातिर होले।
गुनले से कहनी में कुछु जुड़ेला, कुछु छूटेला।
सब होत रहेला नया–पुरान।
चलेले कहनी धीरे–धीरे।
में का जानो बेद–पुरान,
का जानो में पेनी–पेहान।
सुनलो जे आजी से, उहो अपने आजी से,
धरबों ऊ तोरे आगे।
सुन, सुन बहिनी!
जाने कवन दिन रहे, जाने कवन राति रहे।
अन्हरिया रहे कि अंजोरिया, एकम रहे कि दुइज,
केहू नाहीं जानेला।
बाति ह ओ दिन के, जे दिन विधि रचना कइले।
रचले बिधना सुरुज–चनरना, रचलें नील अकासा।
रचलें बिधना माटी–पानी रचलें बहत बतासा।
रचलें बिधना दिशा, काल के आ रचलें अद्‌भुत धरती।
के जानता, का–का रचलें, केकर अइसन हस्ती।
एतना रचला पर बिधाता के मन भरल ना। सिरिजन के रस मिलल ना। बिधाता व्यग्र हो उठलें। जवन रचे के बा, रचाइल ना। व्यग्रता बढ़त गइल। सोचत–समुझत बिधाता पाँच तत्व के खास तरतीह देके सिरिजलें पुरुख–सुडौल, साहसी, बलिष्ठ।
देखलें ऊपर से नीचे तक,
उलट के, पुलट के।
सुन्नर।
सोगहग।
समुझि परल कुछु छूटल बा, कुछू कम बा।
सोगहग बा, बाकी पुरहर नाहीं।
बिधाता के व्यग्रता बढ़ते गइल, बढ़ते गइल।
फेर से सोचलें–समुझलें। बेर–बेर सोचले–समुझलें।
समुझिके पुहुप पराग आ मधु के मेजन पाँच तत्व में जोड़लें।
तब बनल सुरुज के पहिल किरिन के जोति अब तिरिया।
देखलें–अति सुन्नर, अति सुकुवार।

भइल अचरज।
इहो सोगहग बा,
पुरहर ना।
व्यग्र बिधाता का मुख मंडल पर हठात् आइल मंद–मंद मुस्कान।
लिहलें दुनूं सिरिजना हाथे में।
निरेखलें।
फिर, सिरिजलें पुरुख की दुनूं जाँघे बीचे रसगर फूल आ तिरिया की दुनूं जांघे बीचे सुघर सीप, ओसे जुड़ल पवित्र कोख।
विधाता तिरिया–पुरुख के साथे–साथे कइलें।
मिलल तोष बिधाता का।
अब भइल पुरहर। दू सोगहग मिलि के सब बिधिपूरन, पुरहर।
रचना के रस से आनन्दित बिधाता दिहलें अपने अधर के मुस्कान दुनू जन के।
कहलें बिधाता– "तू दुनूं जन होइब अलगे–अलगे आ स्वतंत्र।
जवने छन मिलिके होइब एक, होइब पूरन तवने छन।
होई ऊ चरम छन सुख के।
पुरुख होई पौरुख के सत्त के अपना फूल में संचे वाला।
तिरिया होई ओ सत्त के अपना सीप में संइते वाली,
सींचे वाली।
तिरिया होई धारण करे वाली, जनम देबेवाली।"
जा दुनूं जन किलोल करऽ।"
सुनते बिधाता के एतना बचन,
उठे लागल दुनूं जन में लहर लोल,
रोआं–रोआं बंसी वनस छेड़लस मधुर तान,
कामना के खुलल कपाट उमगल सुख के नदी,
एके अनुभव बहे लागल दुनूं आत्मा में।
सीप में चमकल आब से भरल मोती।
सृष्टिचक्र आगे बढ़ल बिधि के बिधान से।
दिन बीतल, मास बीतल, कई–कई बरिस बीतल। बिधाता के बनावल प्रकृति आ पदार्थ के भोग करत मानुख जाति सगरो संसार के सजा बनि गइल। तिरिया आ पुरुख साथे–साथे लमहर यात्रा तय कइलस, बरखा–घाम साथे–साथे सहल। सभ्यता आ संस्कृति के अनेकन उपलब्धि में दुनूं के सहयोग रहल बा। अकेल अपना बल पर भी तिरिया बड़हन–बड़हन काम कइले बाड़ी। इतिहास के कई पन्ना ओकरे नाम बा। केतने गीत ओकरे यश के गावल बा। पुरुख से तिरिया देवी का तरह मान–सम्मान पवले बा। लेकिन, देखनी जब अपना समय के, अपना समाज के, अपना आस–पास के पुरुख की आँख में
तिरिया के तस्वीर,
टूटल कांच अस धँसेले ऊ मन में।
तब झूठ लागेला ऊ इतिहास के पन्ना।
जो सांच मानिओ लिहल जाए त ह ऊ 'श्वास' के पन्ना।
ऊ ना ह तिरिया समाज के।
तिरिया समाज के सच्चाई ह– अपमान, हिंसा, प्रताड़ना।
प्रताड़ना–शारीरिक, मानसिक, आचरण के व्यवहार के।
आहत तिरिया तलास रहल बाड़ी उपाय
त्राण के निवारण के।

आजी कहली, सुनल जाला, बहुत पहिले एक समय आइल रहे बिकट स्थिति। ओ समय जब
तिरिया के भरत अँकबारि में, निहारत चंद्रमुख पुरुख कहलें
सब सुख बास करेला तहरे भीतर।
तहसे अलगा हम कबो ना, कब्बो ना।
तूं हमार, हम तहार।
हम भली–भाँति रक्षा करब तहार।
तूं हमरे पाछे–पाछे चलिहऽ, हमार होके रहिहऽ।
प्रेम में भींजल तिरिया मनलस एके आपन सुख सौभाग्य।
आगे जिनिगी के राहि रहे,
कहीं कांकर, कहीं पाथर, कहीं ऊँच, कहीं नीच, कहीं सुगम कहीं कठिन।
समय चलत जात रहे अपना सहज प्रवाह में।
तिरिया पुरुख का पाछे चलत रहली निःशंक निश्चिन्त।
कि एक दिन
अति सजोर चउमुखी आन्ही आइल।
जहाँ–तहाँ, जाने कहाँ–कहाँ सब कुछ बिलाइल।
आन्ही जब थम्हल, तिरिया का सोझा रहे खड़ा पिचास रूप एक मानुस
तिरिया इहाँ देखें, उहाँ देखें, कतहीं अपना पुरुख के पावे ना।
एने पिचास चढ़ल आवत रहे, कहत आवत रहे–
"अब हम छूअब, अब हम ढूकब, करि स्नान पराइब हो
तिरिया रोवत रहली, कहत रहली, "मत छू पापी, मत छू पापी।"
पिचास एक पाप माने तब न रुके।
ओकरे खातिर ई मउज रहे, मस्ती रहे।
तिरिया रोवत रहली, बिलखत रहली अंत दाँव तक लड़त रहली।
पिचास आपन मंसा पूरा कइलस आ पराइ गइल।
तिरिया धरती पर अधमरल पड़ल रहली।
खोजत–खोजत पुरुख पहुँचलें। देखलें, सुनलें, चिन्ता में पढ़लें।
उदास होके कहले, "केसे छुवइलू? अब पारव ना रहलू तू।
तिरिया जात हाँड़ी माटी के दू बेर आंच पर चढ़े ना। पराया पुरुख के साथे किलोल।" आगे कुछ ना कुछ ना अब" तिरिया टोकली जाने कहाँ से आइल ताकत, कहाँ से आइल तेज।
गरजत बानी में तड़पि के बोलली "जो पूछित", के छुअल तहके।
जे तहके छूवल हम ओकरा रकत के पियासा" बिसरि जाइत देह के दुरगति, मन के घाव।"

तिरिया बोलते जात रहली– "काहें तिरिया माटी के हाँड़ी? तामा, पीतल, चानी, सोना के काहें ना? अपना बिचार के, धारणा के शब्द में ढाले वाला पुरुख अगर बिचार बदल दीत भाषा बदल जाई। अइसन गर्हित भाषा, अइसन तुच्छ सोच के धिक्कार बा।" पुरुख एक टक तिरिया के ई नया रूप देखत रहले। तिरिया की आँख में आँसू रहे, ओठ पर विलाप। पुरुख के हाथ पकड़ के तिरिया पूछली– "ऊ किलोल रहल ह? भुला गइल तहके किलोल? हम छुवले नइखीं, छुवाइल बानी, हम दोषी कइसे? छुवे वाला दोषी कि छुआरवाला दोषी? कवन विधान ह ई? हम ना मानव ई बिधान, अब ना, कब्बो ना।"

पुरुख का कवनो बात सूझत ना रहे।

"हम दोषी एसे कि बिधाता हमके कोख दिहले? सत्त के सइंते संचित करे वाली बनवलें?

जनम देवे वाली बनवलें?"

तिरिया खीसिन थर–थर काँपत रहली।

"हम सत्त के सइंते वाली, सींचे वाली सराप देतानी कि पुरुख के फूल के सत्त सूख जाए।"

सरापे खातिर तिरिया आसमान की ओर देखत हाथ उठावत रहली तब तक बिधाता परगट हो गइलें– "क्षमा कर तिरिया, पुरुख के क्षमा कर।"

तिरिया क्षमा दान दिहली।

अँचरा से आपन तन–मन ढाँपि लिहली।

बहिनी हो, आजी कहली

आजु का समय में आइल बा ओहू से जब्बर आन्ही।

तिरिया अपना बूते लिखिहें नया पाठ,

अपना हित में,

सबका हित में।

••

❑ प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमा नगर, की.सी. रोड, देवरिया-274001

गजब-जुग आइल

गुरविन्द्र सिंह

❑ ई-67 ए, गली नं० 6, ब्लाक-ई,
कुतुब बिहार गोयल डेयरी, नई दिल्ली

अजबे जमाना, गजब जुग आइल
दुधवा के पाउडर से बबुआ पोसाइल!

नीक रहे पहिले मोटब्जा के असरा
दूध-दही घीव रहे घर में खभकरा
धुरिया में लोटिके लड़िकवो गदाइल।

फास्ट-फूड के अइसन फइलल बेमारी
चाउमीन बर्गर संग कोक के इयारी
रोटी आ दाल घरे रोज बसियाइल।

नवका चलन बाटे 'पब' के 'जीम' के
कीनि-कीनि आवत बा चीकन करीम के
घरहूँ क घटिया, बजार में लुटाइल
अजबे जमाना-गजब जुग आइल।

अन्हारे के अतल में

✍ मीनाधर पाठक

गाँव के बहरा एगो गझिन बगइचा रहे। ओही के बीचे से एगो रास्ता रहे जवना से हो के लोग पूजा पाठ करे खातिर बगइचा के ओ पार मंदिर ले जात आवत रहे। मंदिर की समनवे जगिसाला रहे। लगवे ईनार आ पम्पिन्सेट रहे। मंदिर के पीछे एगो फुलवारी रहे जवना में हमेसा किसिम किसिम के फूल फुलाइल रहत रहे। ओहिजा नीबि के पेड़ तरे चबूतरा पर पिंडी रूप में सातो बहिना बिराजत रहली। जिनका के लाल पीयर सेनुर तीसो दिन, बारहों मास चढ़त रहे। '''

भोरहरे मुख्य पुजारी जी के हाथे मंदिर के पट खुले। पुजारी जी ईनार से पानी भरि के मंदिर धोवें पोंछे आ पूजा पाठ क के केवाड़ी लगा के चलि जाँद्य बाद में गाँव भर पूजा करे खातिर आवल करे। फेरु साँझि के सयन आरती के बाद पुजारी जी मंदिर के पट बंद क दें। ईहे नियम बारीसन से चलत आवत रहे। ई मंदिर पुजारी जी के पुरुखा लोग के बनावल रहे एहीसे पहिली आ आख़िरी पूजा पुजारी जी के हाथे संपन्न होखे। ओही मंदिर में एगो बाबा जी के आगमन भइल रहे।

बाबा जी के उमिर लगभग पैंतीस चालीस के होई। पहलवानी देहिं, रंग गोरहर, जवन बड़की बड़की आँखि, लमहर केश आ आधा चेहरा दाढ़ी मोछि से ढंपल रहे। उनकी गले में बड़का दाना के रुद्राक्ष के माला आ देहिं पर जोगिया वस्त्र रहे।

शिव मंदिर में एगो साधू बाबा बिराजल बाड़ें, ई बाति मुँहे मुँहे आस पास के गाँवन ले पहुँचि गइल रहे। धीरे धीरे उनकी दर्शन खातिर लोग के भीड़ लागे लागल रहे। बाबाजी केहू से कुछ लेत ना रहनीं। पुजारी जी कहबो कइनीं कि भोजन पानी के इंतजाम हम क देतानीं बाकिर बाबाजी ना मननीं। बाबाजी एक बेरा गाँव में जा के एक घर से भिक्षा मांगीं आ अपने बारी से सूखल लकड़ी बीनिं के ईंटा जोड़ि के ओहिपर भोजन पकाईं आ एक समय भोजन करीं। पुजारी जी उनका खातिर एगो तखता, दरी चादर अ कुछू माटी के बर्तन के बेवस्था क दिहले रहनीं।'''

बाबाजी आजु पूजा के बाद ध्यान में बयिठल रहनीं। जे आवे ऊहो हाथ जोड़ि के चुपचाप बइठ जा कि बाबाजी के ध्यान में खलल ना पड़े। बाकिर बाबाजी के ध्यान आजु भटकत रहे। बेर बेर ऊ अपनी मन के बस में करें बाकिर मन भला केकरी बस में रहेला कि बाबाजी क लें।

"एकहक दिन बीतल जात रहे बाकिर अबले ना त हम खुदे ओ दुवार ले पहुँचनी ना ऊ मंदिर ले। अब का जाने कइसन देखात होइहें, का जाने एहिजा आ के चलिओ गइल होंखे? के जानता? आ कि एहिजा होखबो ना करें। काहें खातिर आ केकरा खातिर अबले होइहें ऊ ? बाकिर हमार मन कहता कि ऊ एहिजा बाड़ी। आ उनके देखि के हम चिन्हियो लेब। बाबाजी अपने मन में उठत बिचार से पीछा छोड़ावे खातिर आँखि खोलि लिहलन। भीड़ के ऊपर से दीठि दृष्टि घूम के सामने बइठल दू लोग पर ठहर गइल। बुझाइल दउड़ि के जा के उनके भर अँकवार ले लें बाकिर अपनी मन पर काबू क गइलें।

"बाबाजी, कबो हमरो दुआर पबित्तर करीं।" बाबा के अपनी ओर देखत पा के दूनू में से एक जने कहलें।

बाबाजी आपन ओठ सी लिहलें आ आपन गोड़ आसन में अउरी जकड़ लिहलें। जोर से आपन मुट्ठी बान्हि लिहलें। मूड़ी हिला के हामी भरलें आ फेरु से आँखि मूनि लिहलें। उनका डर रहे कि उनके ओठ हिले आ ओ लोग के बोला न ले। अँकवार में लेबे खातिर बाँहि न खुल जा। पाँव उनकी ओर दौड़ न पड़े एही से ऊ अपनी वजूद के कस के जकड़ले रहलें। बाकिर मन कब कवनों बंधन में बन्हाला।

उ बेकल हो गइलें। लड़कपन में ए दूनू लोग की साथे न जाने केतना बदमाशी मुनल आँखि की सोझा घूमि गइल। गोली, गुल्ली डंडा, ओल्हापाती, आन्ही पानी में आम बिनल, डलिया में अनाज चोरा के बेंचल आ ओही पइसा से बाइस्कोप देखल। चोरी से अमरूद तूरल आ पकड़इला पर माई की हाथे पिटाइल। उनकी ओठ पर मुसकी आ गइल रहे। मन में माया जागि गइल। पट दे आँखि खुल गइल। बाकिर तबले ऊ दूनू लोग जा चुकल रहे। ओ लोग के ना देखि के उनकर आँखि भींजि गइल। आपने वस्त्र में कस के देहि लपेट लिहलन। जोगिया के लाल रंग की तपिस में ऊ आपन भीतर के वेदना के स्वाहा क दिहल चाहत रहलें। '''

गद्बेरी के बेरा रहे। ऊ लालटेन ज़रा के सब कमरा में देखा के बहरा असोरा में ध के कोठरी की ओर देखे लगली। का जाने काहें आजु उनके मन ढेर आकुल रहे। कवनो कामें मन ना लागत रहे। एतना बड़हन परिवार में ऊ अपना के अकेल पावत रहली। एहीसे ऊ अपना के घर के काम में अझुरवले रहेली। एसे कि अकेले में उनका अपनी अतीत से मुठभेड़ ना हो जाउ। बाकिर आजु ऊ बचि ना पवली। अपनी कमरा में जा के देवाल पर टांगल एगो फोटो के सामने ठाड़ हो गइली। चउदह पनरह बारिस के एगो बालक फोटो में हँसत रहे। ऊ मुँहे अँचरा दे के रोवे लगली। मन अपनी तीव्र गतिसे अतीत के किताब के पन्ना पलटे लागल आ लोर से भरल आँखि की आगे कुछ धुँवाइल चित्र साछात आकार लेबे लागल।'''

सब गाँव की तरे एहू गाँव के बहरा एगो बारी रहे। आ ओही बारी में खरिहान। जगह जगह धान के बोझा के बोझा लदाइल रहे। दँवनी चलत रहे। जाना मजूर बोझा खोल खोल बैलवन की आगे पसारत रहे। कुछ लोग धान ओसावत रहे आ कुछ लोग बटोरत रहे। पुअरा के कइगो ऊँच ऊँच ढेर लागल रहे। मालिक मजूर सब काम में बाझल रहे बाकिर ओहिजा रहरि पिटला के बाद सूखल डंठल बोझा के बोझा एगो पेड़ के सहारे ठाड़ क के गाँजल रहे। ओहिजा बोझा के बीचे बनल जगहि में दू जनी सखी लोग बइठ के बतिआवत रहली।

"का हो गइल? आजु तें इतना चुप काहें बाड़े ?" पहिलको कहली।

"बाबूजी अम्मा के आजु फेरू से मरलें हँ।

"काहें?"

"ऊ पतुरिया घरे गइल रहलें हँ एहीसे अम्मा से झगरा भइल ह आ बाबू जी मारे लगलें हँ।"

"अरे...!"

"हँ, अम्मा कहेली कि बाबूजी के दूगो घर बा। एगो में हमनीका रहनीजाँ आ दूसरी में पतुरिया। जहवाँ बाबूजी रोज जालें।"

"पतुरिया ?"

"का जाने? बाकिर ऊ नीक ना होले।" कहि के आपन आँसु पोंछि लिहली। दूनू जनि उदास रहली। बालमन बिसाद से भर उठल रहे। दूनू जनि के मन में एके बाति कि ई पतुरिया नीक ना होले। बाड़ा बाउर होले।

"अरे...! ई किरनी, झुनिया, मुनिया कवनों ना अइलीसन। ओल्हा–पाती के खेला कइसे होई ?" अपनी सखी के उदास देखि के पहिलको बाति बदल दिहली।

"चला आजु हमनिका ईहे खेल खेलल जाई।"

"कवन खेला?"

"ईहे, अम्मा बाबूजी वाला। तू बाबूजी बना, आ हम आम्मा।"

"हँ, चला ठिक बा।" दूनू जनि खुस हो गइल लोग।

'''

खरिहान में काम करत लोग के अंगोछा रहरी की झाड़ पर धइल रहे। ओही के उठा लिहल दूनू लोग। एक जनी अपनी मूड़ी पर बान्हि के कमाए चलि गइली आ दूसरी जनी ओढ़ि के अपनी घर के काम में लागि गइली। एने ओने से ईंटा पाथर बिनि के चूल्हा बनवली। पतई के दोंना बना के बर्तन आ रहरी से पातर पातर डंठल तूरि के लवना जुटा लिहली आ कमाए गइल सवांगे के राहि ताके लगली काहे से कि कमा के लवटत बेरी ऊ तरकारी भाजी किनले अइहें। बाकिर देर पर देर होत रहे। ऊ अपनी माथे पर अंगौछा सम्हारत बेर बेर झाँकि झाँकि राहि ताकत रहली आ खिसिआए के स्वांग रचत रहली।

"एतना देर भइल, अबहिन ले ना अइलें। जरूर ओ पतुरिया घरे गइल होइहें। आवे द आजु तब फ़रिआवतानि।"

कुछु देर भइला पर दुसरको फाँड़ भर अमरूद,, बइर आ फूल पतई लिहले अइली।
"एतना देरी काहें भइल ह जी?"
"तनी साग भाजी कीने में देरी हो गइल ह।" कहि के सब उनकी समनवे उझिल दिहली।
"ई काहें नइखीं कहत कि पतुरिया घरे चलि गइल रहनीं हँ।"
"तोहार बुद्धी फिर गइल बा का? ई कुल का कहऽताडू ?"
"हम सब जानतानी। अब हम ना रहब ए घर में।"
"जो गोड़ बहरा निकाल दिहलू त ठीक ना होई, जानि लीहा।"
एहीतरे खेल खेल में लड़ाई सरू भइल आ सचहूँ में होखे लागल। मुँह से सुरु भइल झगड़ा मारा मारी आ झोंटानोचउवल ले पहुँचि गइल।
हल्ला सुनि के खरिहान से रमाकांत दउड़ल अइलन आ दूनू जनी के अलगे कइलन।
"का भइल? कहें लड़ाई होता ?" डपटलन ऊ।
"पहिले ई हमके लात मरली ह।"
"ई त नीक बाति ना ह। तूँ काहें लात चलवलू ह?" कहत ऊ परापारी दूनू जनि के फराक से धूर झरियवलन।
"खेलिए अइसन रहल ह त हम का करीं ?" ऊ आँखि नचावत कहली।
"अरे ...! कइसन खेला?"
उनकी पुछला पर ऊ सब बता दिहली। रमाकांत हँसि हँसि के पेट पकड़ि लिहलन। पूरा कहानी सुनि के खरिहान में सभे हँसे लागल। थोड़ी देर बाद रमाकांत दूनू जनि के समझा बुझा के घरे भेजि दिहलन।
रमाकांत अपनी बेटी सुन्दरी के ई कुल खेल खेलत देखि के तनी चिंता में पड़ि गइलन।काहें से कि बेटी के बिआह गोधन के बाद लगन उठते तय भइल रहे आ ऊ, ई कुल खेल खेलत रहे।
'''

समय बीतल आ खूब धूम धाम से बिआह भइल। सुन्दरी नौ बारिस की उमिर में डोली में बइठि के अपनी ससुरा बिदा हो गइली। रमाकांत त सात साल गवना राखल चाहत रहलें बाकिर समधी ना मनलें। कहलें कि "हमरे घरे गवना ना सहेला। रउरा दू दिन बाद चौथी करा के बिदा करा लेब तब सात आ चाहें दस बारिस बाद दोंगा करब।बाकिर ए बेरा दुलहिन बिआहे बिदा होई।"

अब का करतें रमाकांत बाकिर उहो एके दिन बाद चौथी के दिन ध दिहलें तब बेटी बिदा कइलें। बाकिर बिधना कुछु अउरिये सोचलें रहलें।

बियाह के रसम करत करत ऊ थाकल रहली। बाकिर खुस रहली कि अबे उनके दुलहा बढ़ियाँ बढ़ियाँ मिठाई ले के अइहें। उनके सखी सिव कुमारी बतवले रहली कि राति में दुलहा लोग मिठाई आ किसिम किसिम के लेमनचूस ले के आवेला लोग। हमार दुलहा खूब बढ़िया मिठाई की साथे लेमनचूस भी ले आइल रहनीं। एही से ऊहो खुस रहली। आँखि नींद से भारी होत रहे। भारी भारी गहना गुरिया देहिं में गड़त रहे। बाकिर ऊ अपनी दुलहा के राहि देखत बइठल बइठल मखमली चादर से सूत नोंचत रहली। राहि देखत देखत जब हारि गइली तब तकिया पर मूड़ी ध के सुति गइली।

अचके नाक दुखइला से ऊ जागि गइली। एकदम से देख़ली त केहू उनके नाक के नथ पकड़ के हिलावत रहे। हउहा के उठली। उनहीं की साथे त भँवरी घूमल रहली। उनके दुलहा। अब ऊ चिन्हली।

जेकर राहि देखत ऊ सुति गइल रहली। बाकिर एतना देरी काहें भ गइल। आ इनके हथवो खाली बा, ना मिठाई ना लेमनचूस...! ऊ बड़हन बड़हन आँखि निकाल के उनका के गुंड़ेरे लगली।

कहीं ईहो पतुरिया घरे त ना गइल रहलें हँ ? ई त ठीक बाति ना होला। सोचि के सुन्दरी के बाल मन रीसि से भरि उठल।
फिर ऊहे भइल जवन बगइचा में दूनू सखी लोग की बीच भइल रहे। आ अगिलही दिने उनका के बाबूजी बिदा करा ले गइलन।

उनके करेजा करकत रहे। आँखि से धारो धार लोर बहत रहे। मन भर रो लिहला की बाद अँचरा से लोर पोंछली आ फोटो में मुस्कियात बालक की ओर से मुँह घुमा के कमरा से निकल के मनेमन स्वामी जी के दर्शन करे के ठान लिहली। जब घर दुआर, नात बाँत कुछु ना सुहाला त मन बेराग हो जाला। आ ए समय उनके मन बैरागी हो गइल रहे। बेमन से जा के ऊ चुल्ही लगे बइठ गइली।

राति में उनकी आँखी नींन ना समाये। अपनी पलंग पर सुत्तल ऊ जंगला राहि आसमान देखत रहली। अनगिनत जोन्ही टिमटीमात रहलीसन। बाकिर उनकी भागि में एको ना रहे। उनकी आँखि पनिया गइल आ तनिए देर में लोर सरकि के तकिया में समाए लागल। मन फेरु से मंदिर लगे मंडराए लागल। ई का होत रहे उनका के? जइसे कवनो अदृष्य शक्ति उनका के

अपनी ओर खींचत रहे। रातिभर ऊ आसमान के जोन्हीं गिनत रहली। जब ना रहि गइल त अन्हारे में उठि के एने ओने तकली आ गोड़ दबा के घर से निकल गइली। ठंडा बयारियो उनकी मन के ताप के कम ना क पवलस। उनका बुझाइल कि ऊ खुदे अपने से भागताड़ी। आख़िर कबले भगिहें ? अब ईहे उनके जिनगी ह। काँट के बिछौना। नाहीं त बाबूजी त कहनीं कि "चला बेटी घरे। अब एहिजा कुछू नइखे।" बाकिर ऊ घर से गोड़ ना बहरियवली।

मनेमन सोचत ऊ मंदिर पहुँचि गइली। एतने भोरहरे मंदिर के पट खुलल रहे। स्वामी जी ध्यान में बइठल रहलें। उनके पीठ सुन्दरी की ओर रहे आ मुँह भगवान जी की ओर। ऊहो धीरे से चलि के हाथ जोडि के स्वामी जी के पीछे बइठ गइली। उनकी आँखि से झर झर लोर बहत रहे। का जाने कब ऊ आँखि मुनि लिहली।

खट खट की अवाजि से उनके आँखि खुलल। देखली त स्वामी जी उनहीं की ओर आवत रहलन। एकदम से उनके अपनी सामने पा के ऊ सुसुकि के रोवे लगली। आजुले कबो केहू के आगे ऊ ए तरे रोवल ना रहली बाकिर आजु का जाने का भइल कि अपना के संभारि ना पवली। उनके रोवाई सुनि के स्वामी जी के आत्मा ले दहलि गइल।

"बस देवी बस। भगवान जी के आगे रो लिहला से मन के शान्ति मिलेला। उ सब जानेलें। अब धीरज धरीं।" कहि के स्वामी जी तखत पर लागल अपनी आसन पर बिराजि गइलें। आ जइसे उनकर निगाह सामने बइठल स्त्री पर पड़ल ऊ चिहा गइलें। दीया के मेही अँजोर में ऊ मुखाकृति कुछू देखल जानल बुझाइल। ऊ अपनी अँचरा से बेर बेर आपन आँखि पोंछत रहली। अबहिन ऊ कुछु अउरी सोचतें कि उनकी ओर देखली ऊ। स्वामीजी झट दे आपन आँखि मूनि लिहलन। का जाने काहें ओ आँखि से आँखि ना मिला पवलन। मन अधीर हो उठल। उनके भीतर कहीं अतल में हाहाकार मचल रहे। एके साथे सैकड़न सवाल उनके मन में उठत रहे।

"ई अबले एहिजा बाड़ी? काहें? केकरा खातिर? ओदिने त..!" सोखते सोचत उनके मन अतीत के सागर में बिछिला गइल।

'''

जबसे ऊ आपन दुलहिन बिदा करा के आइल रहलन तबसे उनके इयार लोग उनका के घेरले रहे। केहू कुछू सिखावत रहे त केहू कुछू। केतना जल्दी उनके मुँह देखें आ बतिआवे खातिर उनहूँ के मन में बुलबुला फूटत रहे। सांझि ले इयार लोग अपनी अपनी घरे चलि गइल आ राति के खाना के बाद बाबा अपनी लगे बोला लिहलें।

"चला सुत जा। तूहूँ हारल थाकल बाड़ा।" अपनी बगल में सुत्ते के कहि के बाबा ओठंगगले।

अब ऊ का करें? उनका त अपनी दुलहिन लगे जाए के रहल। ऊ सोचते रहलें कि "लालटेन बढ़ा के सूत जो बाबू। ढेर राति भइल।" बाबा के बाति सुनि के ऊ लालटेन के बाति बढ़ा के चुपचाप सुति गइलन।

ओही कमरा में कई लोग सुत्तल रहे। अन्हारे में सबके बातचीत चलत रहे। बरियात में नाच नचनिया आ नेग निछावर के। सब नात बाँत पिअरी आ अँगोछा पा के बुलबुल रहे।

सभे बतिआवत बतिआवत सुति गइल। धीरे धीरे पूरा कमरा सबकी नाक बजला से गूँज उठल। जब उनका बिसवास हो गइल कि सभे सुति गइल बा त धीरे से उठलें आ गोड़ दबा के नवकी दुलहिन की कमरा की ओर बढ़ि गइलें। दुआरि पर पहुँच के केवाड़ी पर हाथ धइलन त केवाड़ी खुलत चलि गइल। ऊ समनवे पलंग पर सुत्तल रहली। एकदम ईया के कहानी के सोनपरी जइसन। जे परीलोक में सबसे सुन्नर परी रहली। एक बेर ऊ घूमे खातिर धरती पर अइली आ एगो राजकुमार के प्रेम में पड़ि गइली। ई बाति जब सरग के देवता लोग के पता चलल त उनके सरग से निकाल दिहल गइल आ ऊ धरती पर आ गइली। आपन मूड़ी झींट के उ अपनी मन से ईया के कथा कहानी झटक दिहलें आ अपनी दुलहिन के निहारे लगलें। उनके गहिर नींन से जगावे के मन ना कइल बाकिर ओ परी की नाक में जवन नथ रहे ओसे किरन फूटत रहे। ऊ पलंग पर धीरे से बइठ गइलन आ नाक के नथ उलट पुलट के देखे लगलन।

तबे ओ परी के आँखि खुल गइल। ऊ एकदम से चिहा के उठि गइली आ बड़हन बड़हन आँखि निकाल के उनके कड़ेरे ताके लगली। उनके ए तरे अपनी ओर ताकत देखि के ऊ तनी सकपका गइलन। बाकिर तबे मन में बाति आइल कि नींन के मारे चीन्हि ना पवले होइहें। अब्बे चीन्हि के हँसि दीहें। बाकिर कुछूए देर में उनके आगे धरती डोलि गइल।

"अह्ह...!"

एकदम से स्वामी जी की मुँहे निकलि गइल। उनके भीतर एगो पीर उठल आ आँखि की कोर से आँसु बहि गइल।

'''

सुन्दरी अपलक स्वामी जी के निहारत रहली। मन एतना बिचलित काहें होता। हम त तनी मन की शान्ति खातिर एहिजा अइनीं हँ। बाकिर एहिजा आ के त जियरा अउरी बेकल हो गइल। हे रमई! ई हमके का होता? स्वामी जी बैरागी हउवन आ हमहूँ त मुसुमाति के जिनगी जियतानी। त हमरी जियरा में ई कवन तूफ़ान उठल बा?

आसमान में पूरब आ उत्तर के कोना में ललाई उतरत रहे। बगयिचा चिरइन की चहक से भर गइल रहे। अब गाँव के लोग के मंदिर की ओर आइल गइल सुरु होखे वाला रहे। पुजारी जी के आवे के जून होत रहे। ऊ जल्दिए से आपन आँसु पोंछि के स्वामी जी की ओर देखली। स्वामी जी आँखि मुनले ध्यान मगन रहलें। ऊ जल्दी से हाथ जोड़ि के प्रणाम कइली आ लमहर डेग उठावत घर की ओर भागि चलली। '''

केहू चीन्हि न ले उनके। चाहें कहीं ऊ अपनी मन पर काबू ना राखि पवलें तब? अब चाहे जवन होखे, आजु त उनका ओ दुआरे जाही के बा। आख़िर ओही दुआरे से भीखि लेबे खातिर न ऊ का जाने केतना दुआरे भीखि मंगलें हँ ! सोचत बिचारत स्वामी जी जिउ कड़ेर क के अपनी मंजिल की ओर बढ़त जात रहलें आ उनके मन अतीत की गली की ओर।

ओ दिने अपनी कमरा से निकल के ऊ भगलन आ जा के गाँव की बहरा नहर के पुल पर बइठ गइलन रीसि से उनके मूड़ी पर गरमी चढ़ि गइल रहे आ कपार फाटत रहे। बुझात रहे कि एही नहर की धारा में कूदि के आपन परान तज देसु। बाकिर हरहरात धार देखि के उनके हिम्मति ना भइल। ऊ बिहाने का बतइहें अपनी इयार लोग से कि ऊ दुलहिनिया से का बतिअवलें हँ? ऊ कैसे बतइहें कि दुलहिनिया उनकरा के...! ना, अब ऊ लवट के घरे ना जइहें। ना केहू से मिलिहें। बाकिर अब ऊ कहँवा जाँसु? कपारे हाथ ध के बइठ गइलें। तब्बे एकदम से उनका सोन किनारे मठ के इयाद आइल। मठ पर साधू बाबा लोग रहत रहे। हमेशा ना। बस आवत जात रहे लोग। बाकिर ऊ मठ साधू लोग के रहवास रहे। गाँव के लोग ओलोग खातिर खाए पिए के बेवस्था क के निहाल होखे। त एक बेर टायर पर रासन लादि के पहुँचावे खातिर जात बाबूजी की साथे ऊहो बइठ गइल रहलन। बस, मन में आवते ऊ मठ की ओर मुँह कइलन आ भागत चलि गइलन।

फेरु बाबा लोग की टोली की साथे ए मठ से ओ मठ। कबो मंदिर त कबो कुम्भ असनान त कबो माघ मेला। पानी आ जोगी कहँवा एक जगहि रुक सकेलें? त उनहूँ के जिनिगी बहता पानी रमता जोगी हो के रहि गइल। ए समय में उनके का का ना करे के पड़ल। बाबा लोग के अंगोछा से ले के लंगोट ले धोवें के पड़ल। पत्तल उठावें। जवन कहि दें ऊ लोग, उहे करें आ ओलोग की पाछे पाछे घूमल करें। बाकिर ऊ घर की ओर मुँह ना कइलन। जइसे जइसे उमिर बढ़े लागल, कई बेर मन भइल कि घरे लवट जाँसु बाकिर अब लवटला के कवनों राहि ना बचल रहे। कई बेर उनका ओ परी के इयाद आवे। ओकरी नासमझी पर हँसियो आवे आ अपनी बकलोली पर रिसियो बरे। बाकिर अब कुछ ना हो सकत रहे। काहे से कि अब बाबा अनन्देश्वर महाराज के छोड़ि के कहीं गइल संभव ना रहे। अब उनकी देहिं में टोली के साथे चले के बूत ना बचल रहे त उनका के बाबा की सेवा में लगा के बाकी लोग निकल गइल रहे। कई बरिस ले ऊ बाबा के दिन राति सेवा टहल कइलन आ सरगे गइला से पहिले बाबा उनका के दीच्छा दे दिहलन। अब उनका एक बेर ओ घर से भीख लेबे जाए के रहे। ओकरी बाद हमेशा खातिर ओ घर की ओर पीठ क लेबे के रहे।

चलत चलत अचके उनके गोड़ रुकि गइल। समनवे ऊ बइठल रहली। मन अतीत से बर्तमान में लवटि आइल। एक छिन में बुझाइल कि ऊ एहिजा से लवटि जाँसु। बाकिर तनिये देर में आपन मन कड़ेर क के ऊ आगे बढ़ि गइलन। ''

ओसारा में बइठल सुन्दरी धूर माटी से धान अलगिआवत रहली। पुरान कपड़ा से एगो पोटली धान मिलल माटी पर ध के दबा देत रहली आ जब धान पोटरिया में सटि जाउ त ओकरा के अलगे झारि लेत रहली। एक हाथे पोटली माटी मिले धान पर दबावें आ दुसरे हाथे ओकरा के झारि लें। ए तरे धूर माटी से धान आसानी से निकलत जात रहे। उनकी काम में एगो लय आ गइल रहे बाकिर मन कहीं अउरी भटकत रहे।

'''

उनकी बिआह के धीरे धीरे छव बारिस हो गइल रहे। अपनी समउरिया सखी लोग से जब सुनें कि उनके दुलहा लोग उनके चिट्ठी भेजले बा त मन होखे कि उनहूँ के दुलहा उनकी लगे चिट्ठी भेजसु। ऊहो अँचरा में चोरा

के कहीं कोने अंतरे लुका के चिट्ठी पढ़े। रोज अपनी डाक काका के राहि देखें आ जब ऊ अपनी सायकिल के घंटी बजावत आगे निकलि जाँ त मन छोट क के भीतर चलि आवें। सोचें कि "अबले उहाँ के रिसिआइल बानीं।" फेरु सोचें कि "काहें ना हमहीं एगो अंतर्देशी मँगा के चिट्ठी भेजि दीं कि ऊ सब हमार नासमझी रहे। ओ उमिर में हमके नीक बाउर ना बुझाइल। रउवा हमार नादानी समझ के छमा करब। बाकिर चिट्ठी केहू अउरी पढ़ि लिहल, तब त बड़ा हँसी के बाति हो जाई।" ईहे कुल सोचि के ऊ चिट्ठी ना लिखें।

आख़िर एक दिन डाक काका के सायकिल उनकी दुआरे रूकि गइल। दिन धरे खातिर चिट्ठी आइल रहे। दिन धरा गइल आ देव उठते ऊ हजार हजार सपना आँखि में सजवले अपनी ससुरा आ गइली। उनकरा के उतारि के ओही दक्खिन कमरा में बइठा दिहल गइल। बाकिर ए बेर उनका जाने काहें घर में एगो उदासी आ सन्नाटा पसरल बुजाइल।

बड़ी देर ले ऊ अगोरली कि अब्बे केहू आवत होई बाकिर जब बड़ी देर ले केहू ना आइल त ऊ आपन घूँघुट उठा के कमरा के एक निगाह देखली। देवाल पर एगो सुन्दर के बालक के फोटो देखि के ऊ मुस्किया दिहली। उठि के फोटो की लगे अइली। उतारि के ओकरा के अपनी अँचरा से पोंछली आ भर आँखि देखे लगली। तनिये में लजा के फोटो टांग के अपनी जगहि आ के बइठ गइली। सोचे लगली कि एतना बरिस के बाद आजु उनका के देखबि। का जाने कइसन देखात होखब उहाँ के। बिदो करावे ना गइनी। अबले रिसिआइल बानी। खीसि कम नइखे भइल। तबे दुआरि खटकल। उ झट दे आपन अँचरा मूड़ी पर ओढ़ लिहली। उनके जेठान मीठा पानी ले के आइल रहली।

राति में बनल सँवरल अपनी सुहाग सेज पर बइठल ऊ राहि जोहत रहली। सोचत रहली कि आवते उनके गोड़ ध के मना लेबि। अपनी गलती के क्षमा मांग लेबि। अपनी दुलहा की साथे भला केहू ए तरे लड़ेला? आ जब उंहा के मान जाइब त एतना दिन ले एको चिट्ठी ना भेजला खातिर ओरहन देब। आ पूछब कि साँचो बताईं, एतना दिन एको बेर हमार इयाद ना आइल? बाकिर सगरो राति आँखी में कटि गइल। केहू ना आइल। सबेरे घर में सभे उनका से आँखि चोरावत देखाई पड़ल।

दुइए दिन बितले उनपर जैसे पहाड़ टूट गइल। उनके बुकुवा लगावे आइल नाउन उनके कान फूँकि गइल। "जहिया रउवा बिअहि के अइनीं ओही राति से उहाँके नापाता बानीं। खूब जोहाई भइल बाकिर आजु ले कुछ पता ना चलल। का जाने धरती घोंट लिहलस कि आकास ए दुलहिन !" सुनि के जैसे उनपर बज्जर पड़ि गइल।

जब बाबूजी के पता चलल कि उनके दामाद कमाए ना बलुक घर से भागल बाड़ें त उ आन्ही पानी की तरे भागल अइलन। उनके प्रचंड रूप देखि के बहरा से भीतर ले खलबली मचि गइल। पंचाइत बइठल। दूनू ओर से भाई पटिदारी, टोला जवार जुटल। पञ्च के फैसला बाबूजी के हक़ में भइल। बाकिर उ सोचि लिहली कि अब ईहे हमार जिनगी ह। जब भगवान जी हमरी लिलारे ईहे लिखले बानीं त ईहे सही। ओहिजा सबके आगे ऊ कहि दिहली कि जब इहे हमरी भागि में लिखल बा त हम केतना भगब? आपन कइल भोगे के त पड़बे करी।

बाबूजी केतना कहलें बाकिर ऊ ना मनली। तब बाबूजी उनके अँकवार में ले के दहाड़ मार के रोवे लगलें। उनके रोवत देखि, के ना रहे जेकर आँसु ना ढरक गइल। गमछा से आँसु पोंछत ऊ जात जात कहलें, "देखा बेटी, ऊ तोहार घर ह। जब मन करे लवटि अइहा।"

बाकिर ऊ दिन, आ आजु के दिन। ऊ नइहर ना लवटली।

'''

"भिक्षाम देहि।"

सुनि के उनके तंद्रा भंग भइल आ धान झारत हाथ रूकि गइल।

चिहा के देखली त दुआर पर स्वामी जी आपन कमंडल आगे कइले भिक्षा मांगत रहलें। हाथ से पोटली छूटि गइल। ऊ हाथ जोड़ के ठाड़ हो गइली। मन माघ हो गइल।

"आजु त दुवार पबित्तर भइल स्वामी जी।"

कहत सुन्दरी भागि के भीतर से एगो साफ़ चदरा लेआ के सामने पड़ल तखत पर बिछा दिहली। उनकी मुँह पर सातो रंग के आभा फूटत रहे ऊ स्वामी जी से बइठे के आग्रह कइली।

"नाहीं, हमके कुछू भिक्षा दे दीं।"

"नाहीं महाराज! पहिले रउवा बिराजीं।" ऊ तखत की ओर हाथ देखा के कहली त का जाने काहें स्वामी जी मना ना क पवलें।

आ के जाने उनहूँ के मन रहे त आपन खड़ाऊँ उतार के तखता पर बइठ गइलन। सुन्दरियो ओहिजा मचिया खींचि के बइठ गइली। स्वामी जी चारू ओर आपन नज़र घुमवलें।

"घर में अउरी केहू नइखे का?" ऊ तनी सकुचा के पुछलें।

"बड़का भाई जी बलाक पर गइल बानीं। मझिलकू जनी खेत पर। बाकी लोग सुत्तल बा। दुपरिया रहल ह न। अब जागी लोग।"

"का केहू बूढ़ बुजुरुग नइखे घर में?" तनी बेकली से पुछलें स्वामी जी।

"ना, बाबूजी के सरगे गइले पाँच बरिस भइल आ अम्मा जी परु सालि गोलोकबासी हो गइनीं।"

"ओह्ह! स्वामी जी के मुँह मलिन हो गइल।

"देवी...! अब हमके बिदा करीं।" उनकी बोली में नरमाई की साथे आग्रह रहे।

सुन्दरी उठि के भीतर गइली। स्वामी जी अपनी गेरुआ से आपन आँखि में आइल लोरि पोंछत रहलन। तब्बे एगो बूढ़ा लाठी टेकत दुवारे पर आ गइली। उनके देखि के सरधा से हाथ जोड़ि लिहली। आ चलि के उनकी आगे हाथ जोड़ी के बइठी गइली। उ स्वामी जी के बड़ी गौर से निहारे लगली। का जाने का भइल कि उनकी आँखि आ माथ पर सिकुड़ा पड़ि गइल। जैसे अपनी दिमागे पर जोर डाल के ऊ कुछू सोचत होंखें। तब्बे एकदम से चिहुँकि गइली। उनके नज़र स्वामी जी के मुँह से सरकि के उनकी हाथ पर पड़ल आ बूढ़ाके आँखि फाटि गइल। उनकी हाथ में पाँच की जगहि छव अँगुरी रहे। बिसवास अबिसवास के बीच डोलत बूढा के ओठ हीलल, "सिद्धार्थ बाबू,,! रउवा सिद्धार्थ बाबू हईं न!"

सुनि के स्वामी जी के चेहरा हवा हवाई हो गइल। बुझाइल कि अब एहिजा ढेर देर रुकल ठीक नइखे। कहीं माया उनके बान्ह छान्ह ना ले।

बूढा अब्बो आपन बाति दोहरावत रहली तब्बे सुन्दरी कटोरा में चाउर आ मीठा के भेली लिहले अइली आ स्वामी जी के कमंडल में उलटि दिहली। स्वामी जी पट दे कमंडल उठवलन आ झट दे रवाना हो गइलन। अब का! उनके उद्देष्य पूरा हो गइल रहे अब एको छिन के देरी उनके जिउ के जंजाल बन सकत रहे। ऊ लमहर लमहर डेग उठावत बगइचा पार क गइलन। जब ऊ नहर के पुल पर चढ़लन त एक छिन खातिर उनके मन कहल कि बइठ जासु। ऊ बइठ गइलन। एक बेर फेरु से उनकी आँखि की सोझा सब कुछ घूमि गइल बाकिर तब्बे जैसे उनके भीतर के बैरागी उनके सचेत क उठल। "अब एहिजा बइठल ठीक नइखे।" उ झट दे उठि गइलन आ सामान्य चाल से आगे बढ़ि गइलन। बाकिर अब गोड़ उठत ना रहे। जैसे गोड़े में केहू चाकी बान्हि दिहले होखे। एकहक डेग मन मन भर के भइल रहे। मन में आन्हीं उठत रहे। एक मन कहे कि इ दण्ड कमंडल एही नहरी में फेंकि के उ घरे लवटि जासु त एक मन कहे कि अब तोहार लवटल संभव नइखे। उ आगे बढ़त जात रहलें बाकिर चाहि के भी आपन आँसु ना रोकि पावलें।

"ई का कइले रे दुलहिन? अपने हाथे उनके भीख दे दिहले?" अबहिन ले अचम्भा में ठाड़ बूढा कहली।" सुनि के सुन्दरी उनके मुँह ताके लगली।

"अरे मउसी! ऊ त मंदिर अवाला स्वामी जी रहनीं हँ नू। बड़ी भागि से आजु ई दुवार कंड़नीं हँ।

"फेरू से अपने हाथे आपन भाग फोर लिहले रे दुलहिन! ते त आजुवो बउरही हउवे रे ! अरे उहे त रहलें हँ जेकर राहि तें रोज ताकत रहेले आ आजु जब ऊ तोरी आँखि की आगे ठाड़ रहलें हँ त तें चीन्हि ना पवले।" कहते कहत बूढ़ा की आँखिन से लोर झरे लागल।

"सिधारथ बैरागी हो गइलें रे दुलहिनिया ! सिधारथ बैरागी हो गइलें।"

ऊ उनकी सासु के लड़कपन के सखी रहली। एके गाँव में दुनु जनि बिअहल रहली। एहीसे ऊ उनका से नेह छोह राखत रहली आ लाठी टेकत कब्बो कब्बो चलि आवत रहली। सुन्दरी अपनी बिआहे के पहिली राति के सब बाति उनका से बतवले रहली। कि ऊ कइसे उनके जुल्फी नोंची के उनके गाल लाल क देले रहली, बाकिर मुँह से एको अछर उचरले बिना ऊ घूमि के कमरा से निकल गइल रहलें।

सुन्दरी की हाथे से कटोरा छूटल आ छन्न दे बाजल। उनकी आँखि की आगे अन्हार हो गइल। काने मौसी के बोली तीर तरे उतरि के करेजा फार दिहले रहे। देहि पतई जइसन काँपत रहे। गोड़ में तनिको जान ना बचल रहे। उनसे ठाड़ ना रहि गइल। बुझाइल की धरती उनका के लिहले गोल गोल घूमत अतल में समात जात होखे जहाँ चारू ओर अन्हार अन्हार आ बस अन्हारे अन्हार होखे। ●●

❑ 437-दामोदर नगर, बर्रा, कानपुर 208027,
मो०. 9838944718

लालच ऐसो डाकिनी, काट कलेजा खाय

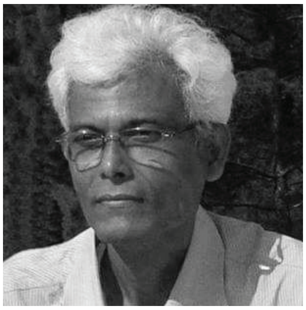

विनय बिहारी सिंह

प्राइवेट अस्पताल के आईसीयू में खखोरन सिंह के बोली– चाली बंद हो गइल रहे। उनका लकवा मार देले रहे। चले– फिरे में लाचार रहले। मुंह से आ...आ...आ, गूं... गूं...गूं के अलावा कुछ निकलबे ना करे। उनका लगे बइठि के उनकर मेहरारू सोचे लगली– जीवन भर हमार पति भ्रष्टाचार क के पइसा कमइले, पूजा– पाठ के ढोंग बतवले। केकरा के लूटि लीं, एही सिद्धांत पर टिकल रहि गइले। बाकिर ई धन– दौलत कौना कामे आवता? दू– दू गो जवान लइका पूछत नइखन स। दवाई आ सूई से लकवा ठीके नइखे होखत। बलुक, ईमानदारी से कमइते, लइकन के बिदेस ना भेजते, त कम से कम सुख– सांती से रहितीं जा। हमार पति भले भगवान के पूजा– पाठ ना कइले, हम त भगवान के भक्त हईं, सबका सुख– दुख में साथे रहेनीं। एही के संतोष बा। भगवान केहूतरे मलिकार (खखोरन सिंह) के ठीक क दीतन। बैंक में जमा रुपया, इलाज में तेजी से खरच होखे लागल। लइकन के कई साल पहिले दीहल पता पर खबर भेजली कि तोहनी लोग के पापा के हालत खराब बा। तनी देखि जा लोग। का जाने तहनी लोग के देखि के उनकर लकवा ठीक हो जाउ। बाकिर लइकन का ओर से कौनो जबाबे ना आवे। का जाने ओकनी के पता बदल गइल कि का भइल। खखोरन सिंह जब एगो बड़ अस्पताल में नोकरी करत रहले त हर मरीज के भरती करवला पर कमिशन खासु। तरह– तरह के गलत तरीका से धन कमइले। बाकिर लकवा मरला का बाद प्राइवेट अस्पताल वाला उनुके के खँखोरे लगलन स।

खखोरन सिंह आ उनका मेहरारू में जमीन आसमान के अंतर रहे। खखोरन जतने बेईमान आ भ्रष्ट रहले, उनकर मेहरारू ओतने ईमानदार, परोपकारी, मिलनसार आ ईश्वरभक्त रहली। अब रउरा पूछब कि खखोरन कौन नांव ह महाराज? त एकरा पीछे एगो कारन बा। खखोरन सिंह के असली नांव सुंदर सिंह रहल। बाकिर बड़का थरिया में, भर थरिया भात ना रहे त उनकर पेट ना भरे। ओही थरिया में गड़हा क के दाल गिरावल जाउ। आ तरकारी भात पर रखाई। कौनो भोज– परोज में गइला पर खियावे वाला उनका के चकमका के देखे लागे। काहें से कि भोज में जाए के पहिले ऊ एक बेरा उपास रहसु ताकि सरिहारि के खाए के मजा मिले। उनकर कहनाम बा कि चांपि के ना खाइल जाउ, त खइला के आनंदे का बा? त पूड़ी के एगो थाह उनका के चाहीं। ओह थाह में सतरह गो पूड़ी रहे के चाहीं। ओपर से कई तरह के तरकारी आ बाकी कुल आइटम। त देहात में प्रचलित हो गइल कि ई खाले ना, खँखोरे ले। केहू कहेला कि जेकरा किहां ऊ खात रहले ह, ओकरा के खखोर देत रहले ह। उनकर असली नांव "सुंदर सिंह" के लोप हो गइल।

सरकारी नोकरी लागे के पहिले उनकर घर खपड़ा के रहे। नोकरी के पांच साल के भीतर ऊ तीन मंजिला आलीशान मकान बना लिहले। घर के भीतर कुल सुख सुविधा जुटि गइल। उनका दू गो बेटा। ओकनी के जौन मांगे सन, तौन दे देसु।

लइकन के खूब ऐश– जैश में रखले। बाकिर नैतिकता आ आचरण के तरीका ना सिखवले। उनकर लइका केहू से बदतमीजिओ क द सन, त कहसु कि दृ लइका हउवन सन, जाए दीं, माफ क दीं। बाकिर लइकन के ना डाँटसु। उनकर दूनो लइका बिदेस में पढ़े गइले सन आ संजोग देखीं कि ओहिजे सेटिल हो गइलन सन। ओइजे बसि गइलन सन। ओकरा बाद धीरे– धीरे अइसन हो गइल कि बिदेस में रहे वाला बेटा ना पिता से कौनो मतलब रखले सन ना महतारी से। सुरू में खखोरन सिंह बहुत कोसिस कइले कि लइकन में बाप– महतारी के प्रति प्रेम जागे। आना– जाना सुरू होखो। बाकिर लइका उनका से तेजी से दूरी बढ़ावे लगले सन। आ अब हालत ई रहे कि लइकन के अपना बाप– महतारी से कौनो मतलब ना रहे। सुरु में उनकर लइका बिदेस में अपना घर के पता– ठेकाना बतवले सन। बाकिर बाद में घर बदलि के कुल नाता रिस्ता तूर दिहले सन। आखीरस ऊ अकेले रहि गइले।

खखोरन सिंह के अस्पताल में भरती भइला तीन महीना बीत गइल। बैंक में जमा रुपया लागे कि खतमे हो जाई। कबो खखोरन सिंह के लीवर खराब होखे त कबो किडनी। कबो हार्ट में समस्या आ जाउ त कबो पेट में। बाकिर अचानके एक दिन खखोरन सिंह कोमा में चलि गइले। मृत्यु तुल्य गहिर बेहोशी। अब का होखी? खखोरन सिंह के मेहरारू सोचे लगली– अब त प्राइवेट अस्पताल में राखहीं के परी। दू साल बीत गइल। खखोरन सिंह जस के तस कोमा में रहले। प्राइवेट अस्पताल के आईसीयू के खरचा सँभराए के नाँवे ना लेउ। खखोरन सिंह के धइल कुल रुपया– पइसा खतम हो गइल।

अब प्राइवेट अस्पताल वाला उनका से पेमेंट मांगे लगले सन। केहू तरे करजा काढ़ि के ऊ खखोरन सिंह के एंबुलेंस से लेके ठीक ओही सरकारी अस्पताल में ले अइली जवना में ऊ नोकरी करत रहले। अस्पताल वाला कहले सन कि माता जी हमनी का लगे कोमा वाला मरीज लायक लाइफ सपोर्ट सिस्टम नइखे। रउरा कौनो दोसरा बड़ अस्पताल में ले जाईं। बाकिर खखोरन सिंह के मेहरारू हाथ जोड़ि के कहली कि हम कंगाल हो गइल बानी। हमरा लगे अब खाए– पीए के भी पइसा नइखे। इनका के एह अस्पताल में एसे ले अइनी हं कि जवने तनी– मनी इलाज हो जाई। घरे ले जाके अइसन मरीज के हम का करब। अस्पताल के कर्मचारी सहानुभूति से कहले सन कि हमनी का जौन इलाज करब जा, ऊ काफी नइखे। खखोरन बाबू के जीवन कब खतम हो जाई, कौनो ठीक नइखे। रउरा भगवान पर भरोसा करीं। भगवान से प्रार्थना करीं। कौनो उम्मेद मत राखीं, कौनो आसा मत करीं। बस, ईहे मनाईं कि इहां के मृत्यु सांति से हो जाउ। ई सुनि के खखोरन सिंह के मेहरारू भोंकार पारि के खूब रोअली आ पति के औकात भर सेवा में जुटि गइली। बाद में दुख सहत– सहत उनका रोआइए ना बरे। ऊ भुलाइए गइली कि कइसे रोअल जाला। ऊ पति के सेवा करे लगली– भींजल तौलिया से देहि पोंछल, उनकर कंघी कइल। सेलाइन के बोतल में दवाई ओराइल नइखे नू, ई देखल। दिन पर दिन बीते लागल।

अचानक खखोरन सिंह के मेहरारू के बोखार हो गइल। पता चलल टाइफाइड हो गइल बा। कर्मचारियन के कृपा से ओही सरकारी अस्पताल में ऊहो भर्ती भइली। अब खखोरन सिंह के सेवा खतम हो गइल। उनका देहि पर माछी बइठतारी सन कि का होता, के देखे जाउ। खखोरन सिंह के मेहरारू खुदे होस में ना रहली। उनका मेहररारुओ के बेमारी एक महीना चलल। बोखार उतरबे ना करे। एक दिन सपना में खखोरन सिंह के मेहरारू देखली कि एगो प्रकाश/ लाइट के बनल देवता उनका के आसिरबाद देतारे।

सबेरे अस्पताल के कर्मचारी देखले सन कि खखोरन सिंह आ उनकर मेहरारू दूनों जाना मरि गइल बा लोग। अब केकरा के खबर दिहल जाउ। त खखोरन सिंह के पड़ोसी लोगन के खबर दियाइल। लोग चंदा बटोरले आ उनकर अंतिम संस्कार भइल। बाकिर तबो उनकर बेटा बिदेस से हालचाल लेबे ना अइले सन। उनका आलीशान मकान में अब उनकर का जाने कौन हित– नात रहता। लागऽता कि अब खखोरन सिंह के उनकर हीतो– नात याद ना करेला लोग। काहें से कि घर के दरवाजा पर लागल "सुंदर सिंह" के बोर्ड गायब बा। ••

❑ क्षितिज अपार्टमेन्ट ब्लाक-बी, फलैट 4 बी 6130,
आर.बी.सी. रोड, दमदम, निकट गोराबाजार,
पोस्ट आफिस दमदम कोलकाता-700028,
मो.- 9874990459

बचकालो

✍ तुषार कान्त उपाध्याय

बाबूजी इनकर नाम रखले रहले विष्णुकली । ऊहो, पंडीजी के कहला पर । अपने त पढ़ाई–लिखाई से कवनो जनम के नाता ना रहे आ नाहिंए उनका मेहरारू के। पंडीजी के कहला पर नांव रख दिहले । महीना, साल बीतत–बीतत विष्णुकली साँचो के अपना नांव के हिसाबे बढ़े लगली । उनकर बाबूजी विभूति तिवारी रहले त बाबाजी के कुल खानदान में जामल, बाकिर पढ़े–लिखे आ पूजा–पाठ से कवनो नाता ना रहे । ऊहे का, उनकर पूरा गँउए एके कुल खानदान के, एके नियन पढ़ाई–लिखाई से दूर, खेती– गिरहती आ गरूआरी में जिनगी के कुल सुख भोग लेवे वाला रहे।

छोट गांव, चारु ओर गड़ही से घेराइल । अहीर, चमार, गोंड़ आ दू घर पुरोहित के छोड़ के बाकी पूरा गांव बाबाजी के एके कुल खानदान से रहे । दू घर सुकुल परिवार के आके कबो बस गइल आ गांव–जवार में पुरोहित के काम में लाग गइल । तिवारी जी लोग रहले असली गिरहत। ना ऊधो के लेना, ना माधो के देना। गांव में ना चोरी –चिकारी, ना झगरा फौदारी। बड़ो–छोट के कवनो अधिका भेदभाव ना रहे। सभे जात के लोग चाचा, भइया, काका लागस। बाबाजी आ अहिरान के खेत रहे, त बाकी लोग मजूरी आ दोसर काम कइके मगन रहस। बाकिर गरीबी आ पेटजरी सबके जिनगी में घाम आ छांह लेखा आवत–जात रहे– तनी कम, भा तनी बेसी। अधिका लोग के खेत खाए–पीये भा बियाह–षादी के फेर में रेहन रखा गइल रहे। ई रेहन लेवे वाला रहलें त उनकर भाइए देयाद, बाकिर गरीब के भाई के देयाद! ना हीत, ना कवनो नाता। सब कहे आ सुने–सुनावे के ह । विभूति तिवारी प दरिद्रता तनी अधिक खुष रहली। कुछ खेत रेहन त कुछ सुखार आ दहार के फेरा में बांझ का कोख लेखा सुन्न हो गइल रहे। खाहूं के कबो भेंटाए, त कबो ठनठन गोपाल ।

एही में अइली विष्णुकली। तिवारी जी के बियाह के दस बरिस के बाद । विष्णुकली अपना पीठिये पर लेके अइली भाई–गजानन ।

विष्णुकली के डेगाडेगी चले से बियाह तक जाए में उनकर नांव डेगाडेगी चलत कब बचकली आ तनी अधिका सनेह दिखावे में बचकालो हो गइल, पते ना चलल । अब त सभे उनका के बचकालो कहे। अइसहूँ, लइकी अउर मेहरारू के आपन नाँव रहिये कहाँ जाला ! केहू के बेटी, केहू के मेहरारू, त केहू के माई। मरद के नाँव के बाहर ओकर आपन पहचान अइसहीं भुला जाला, जइसे भादो के अन्हरिया में कवनो सूई भुला गइल होखे। बचकालो महीना' आवे के पहिलहीं बाप के जांघ प बइठाके कन्यादान क दिहल गइली। मरद फौज में नोकरी करस आ पहिली मेहरारू के मरला पर बचकालो उनका भाग में परली। लोग कहेला कि उनकर बाबूजी लइका वालन से ढेरे पइसा लेके दुआह के खूंटा बांध देहले । गाई आ बेटी–दूनों अनबोलता । जेकरा खूँटा बाँध दीं, बंन्हा जइहें। ओकर मन का बा,

एह से केहू के का मतलब! भला कबो केहू पूछले बा ! बियाह के साले भर बाद गवना क के बचकालो अपना ससुरा भेज दिहल गइली । बड़ घर, सास–ससुर, ननद – देवर–देवरानी से भरल–पूरल घर–आँगन । दूनों बेरा भर पेट खाए के अउर दूध–दही के कवनो कमी ना रहे। सभे बचकालो के बड़ा इजत आ मान से राखे । कमासुत मरद के मेहरारू आ ओहू में दुवाही। सबके तरहथी पर रहस। बचकालो के कुल्ह लइकाई में सुनल कवनों राजकुमारी के कहनी लेखा लागे। बाकिर जब मरद के देखस, त मुँह भक दे करिया पर जाय। रात के ऊ दरद मन परे लागे, जइसे कवनो चिरई असहाय लेखा बिलार के पंजा में छटपटाले । मरद के बिछवना पर उनकर नाजुक देह ओसहीं छिन–भिन होखे लागे। सुख त ना, बाकिर ऊ जानलेवा पीड़ा उनका दिन भर बेचौन क के राखे । केनियो बइठल – बइठल नींद में जास, त सास ठिठोली करत उठवाके बिछवना पर पहुँचवा देस ।

दू महीना बीतत–बीतत मरद के छुटटी खतम हो गइल। आ, ऊ जे फौज में गइले त फेनु लौट के घरे ना आवे पवले । लोग कहेला कि ऊ कवनो पहाड़ से गिर गइल रहले । देंहियो ना मिलल। फौज के तरफ से रूपया–पइसा, पिनषन, तगमा सब मिलल, बाकिर घर के भीतर ऊ तगमा अब बचकालो से छिना गइल रहे। भीतरे भीतर लोग इनका के आंगछ के छोट मान लेले रहे। सास के लागे कि एकरे चलते उनकर जवान कमासुत बेटा अलोपित हो –गइल। रोअस, त कबो–कबो बचकालो के माथे दोस मढ़ देस । थोरकी देर में आपन गलती बुझाइल, त गोदी में लेके उनकर हिमत बंधावस। बचकालो त कठकरेज हो गइल रहली । चुप! सुखाइल आंखि टक–टक सबके ताकस। पीड़िया पारे, कजरी गावे आ झुलुहा लगावे के उमिर में रॉंड़ के ऊजर साड़ी पहिन लेले रहली। साल कब बीतल, पते ना चलल। कबहूँ नइहर, कबहूँ ससुरा। मरद के कतनों मेहरारु मरे, त उ बियाह कर सकेला, बाकिर लइकी आ ऊहो बाबाजी के! सोंचतो पाप लागी । जइसे ऊ माटी के कांच बरतन होखे। एक बेर पानी पर गइल, त बस, जइसे बरतन ढह जाए, ओसहीं लइकी ह ।

अपना दमाद पर खिसियाइल बलेसर साहु चिचिआत रहले – हमनी के कवनों बाबाजी लोग लेखा दोगला हंई जा कि मरद खातिर अलग आ मेहरारू खातिर अलग नियम। तू बियाह करबऽ, त हमहूँ अपना बेटी के बियाह दूसरा जगे कर देइब।'

दुनियाँ के ई बात बुझाला, लेकिन बाबाजी लोग अबहीं अपना के दोसरे लोक में बूझेला। रसरी जर गइल बाकि अइँठन ओसहीं बा ।

दस बरिस गुजर गइल रहे । बचकालो के जिनगी अब घर के काम–धाम भा पूजा–पाठ में गुजरे। तीरथो–बरत पर कबो केहू के साथ चलिये जास । उनकर देवर षुरूए से अपना भउजाई के कुल्ह खयाल राखस। बाकिर एने तनी अधिके धेयान राखे लागल रहले । ई बात धीरे–धीरे सबका खटके ।

' राखहीं के चाहीं', ससुर बात काटत अपना मेहरारू के डँटले–

''बड़ भाई के ना रहला पर ऊ ना करिहें, त के करी? उमरिया में न छोट बाड़ी, बाकिर हई त भउजाई नू ! हमनी के बादो त उनके निबाहे के बा ।' ...'अइसे का ताकत बाड़ू, तहरा त आदते बा हरेक बात में षक करे के।' मरद के बात सुन सास चुप त हो गइली, बाकिर उनकर पेट अइँठात रहे । दइब करसु । पत राखस । ना त केकरा के मुंह देखावे जोग रह जाइब जा। उठत–उठत अपन मरद के आपन मन के पाप सुनाइये दिहली।

XX XX XX

पंचकोस के मेला चलत रहे। चार गाँव होके आज पाँचवा चरितर वन में लिट्टी–भंटा के साथे खतम होखे के रहे। सास कई दिन से जाए के मन बनवले रहली । छोटकी पतोह के लइका – लइकी संगे चले के जिद लगा दिहले स।

'नीके बा, तनि हमरो मन लागी। गांव के आधा से अधिका मेहरारू–लइकी जाते नू बाड़ी।' सास सोंचली। दिन भर लिट्टी–भंटा आ रात खा ओइजे रूक के भोर में गंगा जी नहा के लौट आवे के मन बनल। सबका मेला गइला पर घर सुन हो गइल रहे। बचकालो अपना कोठरी में अउर ससुर, देवर दलान पर। अब त सभे केहू काल्ह दुपहरिया के बाद लौटी।

अबहीं किरिनियों ना फूटल रहे कि बचकालो के अँगना में हल्ला–गादह मच गइल। एह रोहारोहट में टोला के लोग जुट गइल रहले, बाकि केहू कुछू बोले के तइयार ना रहे। भइल ई रहे कि सांझ होत–होत

छोटकी पतोह के पेट झरे लागल रहे आ मेला में अब निबाह होखे लाएक रह ना गइल रहे। कइसहूँ एगो टमटम करके सास सबके लेके गांवे लवटली। बाहर के भिड़कावल फाटक पार क के आँगन में अइली आ बचकालो के जगावे खातिर उनकर केवाड़ी खटखटवली । ई का! बचकालो के संगे उनकर देवरो अचकचाइल निकलले । सामने माई, मेहरारू आ लइकन के देख अइसन लागल कि जइसे चोर सेन्ह मारते धरा गइल होखे । देवर कसहूँ निकले के फेर में रहले, लेकिन उनकर मेहरारू सामने खाड़ हो गइल – हमरा त बहुत दिन से लागत रहल हा। ई रॉंडी आपन भतार चबाके दोसरा के मरद पर डकइती डाली।' एकरा बाद गांव के लोग कुछ–कुछ त अंदाज लगावही लागल रहले। सास–ससुर छुपावे के बड़ा कोषिष कइले, बाकिर त ओसे का होखे। आगि लगला पर धुंआ त बाहर जइबे करी। सगरो गांव में कानाफुंसी होखे षुरू हो गइल ।

बचकालो अब अधिका नइहर आ कबो–कबो ससुरा जास। उहो, एक–दू दिन खातिर ।

XX XX XX

गजानन जवान हो गइल रहले। अब बियाहो हो गइल रहे । मेहरारू मिलल रहे एकदम सिधबक। अपना बाप विभूति तिवारी के छांही लेले गजानन खेतीबारी आ मेहनत से तनि दूरे भागस। चिलम पीये आ गवनई में मगन रहे में दिन कटि जाए। कबो बिया ना जुटे, त कबो सोहनी के पइसा ना रहे। बचकालो अपना संगे पइसा आ गहना लेके आइल रहली । मरद के फौज वाला पिनसिन रहबे कइल। घर के काम चले लागल आ ऊ गंवे–गंवे घर के मलकाइन लेखा रहे लगली । अब गजानन खेती–बारी देखस, बचकालो घर। दिन में केहू के घरे जाइके मन लगावस। गांव के बेटी । ऊहो रॉंड़। सभ मान राखे। बचकालो गंगा जी के किनारे वाला मठिया में जाये लगली । राम जी के भजस। पूजा–पाठ आ कीरतन में मन रमे लागल ।

मठिया दूर तक फइलल रहे। कई गो देवी–देवता के अलग–अलग मंदिर। बाकि असली मंदिर रामजी के । लइकन के पढ़े–लिखे खातिर एगो पाठषाला आ रहे के निमन जोगाड़ । सांझ के पंगत होखे ।

'पंगत के सीताराम हो।' घंट घरियाल के साथे कुछ लोग चिचिआस मठ में रहे वाला सभे आपन – आपन थरिया – पत्तल लेके पांत में बइठ जाय । अगल–बगल रहे वाला भिखार, रिक्षा ठेला चलावे वाला आ जे केहू मठ में रात में रूके के ठिकान पावे खातिर आइल रहे, सबके भरपेट खाना । एके पांत में बइठा के । कवनो भेदभाव ना । मठ के कवनो कमी त रहे ना । अपने सइ से अधिका बिगहा जमीन; ऊपर से अगल–बगल के गांवन के गिरहत लोग साल में अनाज भेजस मंदिरन के चढ़ावा, आ कतने गाय, घोड़ा, हाथी भरल रहे।

खड़ाऊँ, त्रिपुंड, रेषमी धोती आ गमछा लेले महंथ जी जब कबो बाहर निकलस, त लोग जमीन पर सुतके गोड़ लागे । महंथ जी के चमकत मुंह आ दमकत देह देख के लागे कि छुअते खून निकल आई। इहे हाल वोह मठ में रहे वाला सभे साधु–संत आ सेवादार लोगन के रहे ।

करीब बीस बरिस के अपना भगती आ सेवा से सरबजीत बड़का महंथ जी के सबसे खास सेवादार बन गइल रहले। एक दिन बड़का महंथ जी एगो बड़ पूजा कराके इनका के आगे वाला महंथ घोशित क दिहलें । इनका के एगो नाम मिलल रामसुखदास । एक तरह एगो ई इनकर नया जिनगी रहे। बड़का महंथ जी एक दिन अचानक राम में लीन हो गइले । मठ में लोगन के षक रहे कि रामसुखदास बड़का महंथ जी के अचके में ब्रह्मलीन होखे के असली कारण रहले। बाकि बोलो के! जल में रहि के मगर से बैर!

नयका महंथ जी के गद्दी पर बइठला पांच बरिस हो गइल रहे। आठ–दस बरिस के उमिर में आइल रहले उ गाय–गोरू के सेवा करे खातिर; मठ से करीब पांच कोस दूर गंगा के किनारे बसल साधू बाबा के डेराष से। ओह डेरा के सबे लोग गाय–भइँस राखे आ दूध–दही के बैपार करे। उनकर बाबूजी जगलाल चउधरी गाय–भइँस पालस आ माई दूध–दही लेके षहर में बेचे आवे। अउरी दूध वालिन के बेचाय भा ना बेचाय, इनकर सब दूध–दही जगेसर हलुवाई खरीद लेस । कबो–कबो गरमी के दुपहरिया में ऊ ओहिजे टिक जास द्य आ दिन जुड़इला पर गांवे लवटस । जगलाल चउधरी के मेहरारू जतने सुन्दर आ सुभेख रहलि, जगलाल ओतने खरखटल। लोग कहेला कि रामसुख दास लइकाईं में एकदम से जगेसर हलुवाई आ

कुछ–कुछ अपना माई पर गइल रहले। ओइसने सुन्दर, बरिआर आ तेज चमकत आंख। गरीबी के मारे ओही आठ दस बरिस के उमिर में मठिया पर काम करे जाये के पड़ल रहे। गद्दी पर बइठला के बाद मठ के हालत अउरी सुधर गइल रहे। एह पांच बरिस में रामसुखदास जी भगवान लेखा पुजाये लागल रहले ।

बचकालो के लाम छरहर देह आ चमकत सुघर मुंह केहू के अपना ओर खींच लेवे खातिर मजबूर कर दे । गते गते मठ में उनकर मान बढ़े लागल रहे। अब महंथोजी के कोठरी में उनकरा जाय में कवनो रोक–टोक ना रहे। बचकालो के धन्न भाग कि महंत जी के अइसन आसिरबाद मिलल । सब लोगन में इनकर एगो अलगे मान रहे । बचकालो पहिले त सांझ होत–होत गांवे लवटि आवस, बाकि अब जब –ना–तब रात के भजन–किरतन के नांव पर मठे में रूक जास। मठ में अब महंथ जी के बाद अगर सबसे जादा दबदबा केहू के रहे, त ऊ रहे बचकालो के । एह मठ के असरा में उनका नइहर के दिन फिरे लागल। एह पूजा–पाठ के आसिरबाद रहे कि गजानन के घर बन गइल। खेत खरीदा गइल। गांव में लोग बचकालो के बारे में कई तरह से बतियावस ।

बिना मेड़ के पानी आ राँड़ के जवानी कबो रुकेला!'

कई बेर अलोता में गजानन के लोग 'मठिया' कहिके मजाक उड़ावस। गजानन सुनस, बाकि कुछ बोलस ना । आखिर कुल्ह ठाट त ओही बचकालो के चलते रहे।

XX XX XX

कई हफ्तन से बचकालो के बुझाय कि महंथ जी कुछ बदलल–बदलल बाड़े। वोह दिन सांझ के बचकालो नहा धोके महंथ जी के कोठरी में सेवा खातिर चलली। महंथ जी के कोठरी के बाहर खाड़ उनकर सेवादार उनका सामने खाड़ हो गइले–

'आजु सरकार से रउवा भेंट ना होई ।'

'का कहत बाड़े ! अइसन कबो भइल बा?'

'का करबू, समय ह।' उदास चेहरा लिहले सेवादार उनका के लवटा दिहले।

अब महंथ जी के सेवा में एगो नया बचकालो आ गइल रहली। इनका से जादा जवान अउर सुनर । बचकालो के धीरे–धीरे सब मालूम हो गइल । अब ऊ सेवादार भा कवनो बड़ दानी के सेवा खातिर रहि गइल रहली । माथा प बांधे वाला पगरी से उतरके जूता पोछे वाला लुगा होके रह गइली । गंवे–गंवे मन उनकर मठिया से उचटे लागल रहे। अब कभिये मठ पर जास। तबो केहू पूछे वाला ना रहे। उनका याद आवे, जब एको हफ्ता ना गइला पर कइसे सब लोग उनकर हाल पूछे, मान करे। बाकि दिन बदल गइले रहे, सांचे।

बचकालो के घरो में अब केहू ऊ मान ना दे। कई बेर उनका लागे कि ई सब उनका अइसही बुझाता । उनकर मलिकाँव, ऊ उनकर आंख के इशारा पर उठे – बइठे वाला गजानन अउर उनकर मेहरारू के ढेर फिकिर ना रह गइल रहे।

'तोरा चलते त जवन हमनी के जगहंसाई भइल कि कई पुहुत ले ऊ दाग धोआई ना । चाभी दे बहिनियां, बहुत दिन मलिकाँव चलवले ।'' कवनो बात के लेके बचकालो गजानन के मेहरारू के तनी जोर से बोलत रहली कि गजानन आ गइल रहले । उनकर खिसिआइल मुंह अउर झपट के उनका से चाभी छीनल बचकालो के आज पहिलका बेर अपना रांड़ होखे के मन परा देले रहे ।

'ओह! जेकरा खातिर चोरी करीं ऊहे कहे चोरा। 'बचकालो जइसे भठात इनार में गिर गइल रहली । गजानन के मालूम नइखे कि हमरे बियाह से बाबू जी के लोग बेटीबेचवा कहे । का ना कइनी एह घर खातिर।' बचकालो आके बिछवना पर निढाल पर गइली । मरद के मरला के बाद पहिलका बेर आंखि से लोर के धार चलल रहे।

'जब वोह अधबुढ़ मरद के बियाह दोबारा – तिबारा हो सकेला, त लइकी के काहे ना? बुझला अतना नरक त ना देखे के परित!'

दोसरा दिन बिहाने गजानन के घर से रोओ–चिचियाये के आवाज सुनके सभे गाँव जुट गइल रहे। बचकालो के देह अकड़ गइल रहे आ मुँह नीला परि गइल रहे। राम जानस, का भइल रहे ! ●●

❑ मेन रोड, बुद्धा कालोनी, पटना 800001

भितरघात

✍ डा. सुमन सिंह

"आजकल सुमेधा मैम बहुत उदास रहती हैं,आपको पता है कि क्या मामला है ? आप तो खास हैं न उनकी,कुछ बताया उन्होंने आपसे ?" रुचि मैम के आँखि में जिज्ञासा क चिनगी चटकत देख पहिले त आद्या के नीक ना लगल बाकिर बात टाले के गरज से अपने के काबू में करत ऊ धीरे से कहलीं – "देखिए ,मैं उनकी खास जरूर हूँ लेकिन उनके पर्सनल स्पेस में दखल नहीं देती। आप से भी यही उम्मीद है।" आवाज़ के काबू में कइलहूँ के बाद तिताई ना गइल रहे। मुँह बिचकावत रुचि मैम स्टाफ रूम से बहरे चल गइलीं। आद्या मन बना लेले रहलीं कि आज सुमेधा से बात करिए के रहीहन कि आखिर बात का ह ,काहें आजकल उ एतना परेसान रहेलीं। एतना अल्हड़, एतना खुशमिजाज रहे वाली, हँसे–हँसावे वाली,सबके दुख –सुख में हिस्सा लेवे वाली सुमेधा के अचानक से ई का हो गइल कि गुमसुम उदास रहे लगलीं। हमेशा सजल–संवरल सुमेधा के देख के आद्या बिहँस के कहें –श"यार ! तू कभी तो थक लिया कर। एक साथ तीन–तीन क्लास लेके भी कैसे इतनी फ्रेश रहती है ? तेरी साड़ी की एक–एक प्लेट तक दुरुस्त, सजी–सँवरी। लगता है कि अभी–अभी तैयार होकर चली आ रही है।यहाँ हमें देखो, दो क्लास लिए नहीं कि गला घरघर करने लगता है और चेहरा मुरझा के सिकुड़ जाता है।राज क्या है मैडम ? जरा हमें भी बताया जाय।" चुहल करत आद्या के देख के सुमेधा उनके अँकवार में भर के कहें– "बस मनचाहा मीत मिल जाने का असर है। तुझे भी मिल जाएगा तो ऐसे ही खिली रहेगी, समझी न मेरी जान।"

'मेरी जान' सुमेधा क तकिया कलाम रहे। रीझ के चाहे खीझ के ऊ सबही के अइसहीं टोकें–टहोकें आ हँसत–हँसावत रहें। पूरे कालेज में कुछ जरतुहा लोग के छोड़ के सुमेधा के रूप गुन क बड़ाई सबही करे। सुमेधा क पढावल लइका–लइकी बरिस दस बरिस बादो उनसे मिलें आवें।टीचर्स डे पर सबके ले ढेर बड़ाई उनही क होखे। उनके पढ़वले क, उनके व्यक्तित्व क छाप छात्रन पर एतना ढेर रहल कि उनके विभाग क बाकी शिक्षक लोग भितरे–भित्तर जरे–बुताएँ। बाकिर एहर बीच आद्या उनकर उड़ल–उजरल रंग–ढंग देख के हरान–परेशान रहलीं। बातचीत के दौरान, चाय–नाष्ता करत घरी बातेबात में एह उदासी क कारण जानल चहलीं बाकिर सुमेधा हँसके टाल दिहलीं।

एहर बीच सुमेधा के देख के लगबे ना करे कि ऊ पहिले वाली सुमेधा हईं। एकदम से उलट रंगरूप हो गइल रहे। उज्जर गुलाबी रंग झंवा गइल रहे। दमकत–पानीदार चेहरा बेरौनक–बेनूर, आँखि के नीचे करिया घेरा बन गइल रहल। लगे जइसे कई रात से ऊ ठीक से सुत्तल ना हईं। जवने होठ पर सुंदर–चटख लिपस्टिक लगल रहत रहल ऊ एकदम से पपड़िया गइल रहे। सोना–गहना से संवरल–सजल सुगढ़, छरहर देह दुबराइल जात रहे।

एक दिन आद्या सेमिनार हाल से सुमेधा के जबरन खींचत कैंटीन के ओरी ले गइलीं अऊर कॉफी क कप थामवत कहलीं– "क्या हुआ है तुझे ? बता ? आज तो तूने हद ही

कर दिया यार ! अपने डिपार्टमेंट तक का नाम बताना भूल गई।तुझे अपने कलीग के नाम ठीक से नहीं याद ? दस साल से हम साथ हैं न ? फिर भी, फिर भी तू मिश्रा को शर्मा जी और वर्मा को मिस्टर सिंह कह रही थी। सब कितना मज़ाक बना रहे थे। मैं आज जानना चाहती हूँ कि कौन सा रोग तुझे भीतर ही भीतर खाए जा रहा है ? बता न प्लीज ! "आद्या के एकुल बात–बतकही के सुनते हुए भी लगत रहल कि सुमेधा कुछ सुनत–समझत ना हईं। उनकर नज़र शून्य में कहीं ठहर गइल रहल। कॉफी ठंडा हो चुकल रहे लेकिन कप ओइसहीं हाथ में टंगाइल रहे जइसे उनके थमावल गइल रहे। उनकर ई हाल देखके आद्या घबरा गइलीं। कॉफी क कप उनके हाथ से लेत कहलीं कि– "चल कहीं और चलके बात करते हैं। किसी रेस्टोरेंट में चलें ?"

"नहीं।" सुमेधा जइसे नींद से जागत बुदबुदइलीं।

"तब कहाँ चलेगी ? तेरे घर चलें ? जीजा जी और बच्चे तो आ गए होंगे न अब तक ?" सुमेधा क तरहत्तत्थी थामत आद्या पुछ्लीं।

"अपने रूम पर ले चल...।" पर्स कंधा पर टाँगत सुमेधा उठ गइलीं।आद्या के घोर अचरज भइल।

उ हड़बड़ा के कहलीं – यार ! तू कहीं और चल।मेरा कमरा बहुत बिखरा है, हमेशा की तरह। तू ही कहती थी न कि नरक में चली जाएगी लेकिन मेरे रूम पर नहीं आएगी। अब क्या हो गया है तुझे ? सोच ले। फिर न कहना कि बताया नहीं।"

"नहीं कहूँगी। चल तो।" आद्या रास्ता भर सुमेधा में आइल एह बदलाव के कारन के बारे में सोच –सोच के हलकान रहलीं बाकिर कवनों नतीजा पर ना पहुँच पवलीं। रूम क ताला खोलत घरी आद्या लाज–संकोच से भरल जात रहलीं। एतना दिन बाद सुमेधा घर आइल रहलीं आ ठीक से बइठवहूँ के साफ–सुथरा जगह ना रहल। उ जल्दी –जल्दी बेड पर बिखरल समान उठा के एक ओरी धइलीं आ सुमेधा के बइठा के चाय अऊर मैगी बनावे किचन में चल गइलीं। किचन से ही उनके साफ–साफ़ सुनाई देत रहे कि सुमेधा क मोबाइल बार–बार बजत रहे लेकिन ऊ उठावत ना रहलीं। जब सात–आठ बार अइसन भइल त आद्या आके उनके टोकलीं– "उठा क्यों नहीं रही ? घर से जीजा जी का कॉल होगा।देर हो गई है,परेशान हो रहे होंगे।बता दे कि तू यहाँ है।"श
सुमेधा आद्या के हाथ से मैगी अउर चाय लेत कहलीं –

"आ बैठ।चाय पी तू। फ़िक्र मत कर।कोई मेरे लिए परेशान नहीं है।"

आद्या छुरी में मैगी के गोल–गोल लपेटत शरारत कइलीं– "ओहो तो जे बात। लड़ाई हुई है ? कोई नहीं। कभी –कभी लड़ने झगड़ने से प्यार बढ़ता है। चिंता नई रने का। आज चलकर चुटकियों में मामला ठीक कर दूँगी। देख बस... "

आद्या क बात अबहीं पूरा ना भइल रहे कि सुमेधा हिचक–हिचक के रोवत कहलीं– "कुछ ठीक नहीं होगा आद्या।सब बिखर गया, बर्बाद हो गया।दस साल की गृहस्थी मिट्टी में मिल गई।" सुमेधा के अँकवार में भरत, चुप करावत आद्या अवाक रहलीं। घंटा–डेढ़ घंटा लगल सुमेधा के समझा–बुझा के चुप करावे में। रो–रो के सूज गइल डबडब आँख से एकटक आद्या के निहारत सुमेधा कहलीं– "मेरी दुनिया उजड़ गई आद्या। जीने की वज़ह ही नहीं रही।श

"ऐसा क्या हो गया यार ! तू इतनी बोल्ड होकर भी ऐसी बातें कर रही है। देख मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। बता तो क्या हो गया ऐसा ?" आद्या क घबरहट के मारे मय देह काँपत रहे।

"नीरज ने धोखा दिया। मेरे नीरज ने ? उसका अफेयर चल रहा है। यकीन करेगी ?"

"क्या ? जीजा जी का ? ऐसा कैसे हो सकता है भला। तुम दोनों की जोड़ी की तो हम मिसाल देते हैं। कितना प्यार करते हैं वे तुझे।" आद्या हैरान रहलीं।

"यही तो। इसी भरम में घिरी हुई शायद मैं जिंदगी गुजार देती लेकिन एक दिन उसका मैसेज देख लिया। तू यकीन करेगी आद्या ! उस दिन तक वह आदमी मेरे लिए मेरा प्रेमी पहले था,पति बाद में। कैसा लगा जानती है ? ऐसे जैसे कोई मेरी जान निकाले जा रहा है। उसी दिन से ऐसा लगता है जैसे मैं हूँ ही नहीं इस शरीर में। मैं इस तरह घुट–घुट कर नहीं जी सकती आद्या !" सुमेधा फिर से फूट–फूट के रोवे लगलीं। उनके सम्हारत, चुप करावत आद्या पुछलीं– "जीजा जी से बात की तूने इस बारे में ?" हाँ ! कोई पछतावा, कोई मलाल नहीं उसे। निर्लज्ज ! कहता है कि छोड़कर जाना है जल्दी चली जा.. .। यह वही नीरज है आद्या, जो मेरी एक झलक के लिए कॉलेज में मारा–मारा फिरता था। जिसने कितनी चिरौरी–विनती करके मेरे घर वालों को राजी किया था। दस साल बीतने के बाद भी जो यही जताता रहा कि उसका मेरे प्रति प्यार गहरा ही हुआ है,कम नहीं। मुझे कभी लगा क्यों नहीं कि वह कहीं और भी इनवॉल्व है ? मैं जो साइकोलॉजी की प्रोफेसर हूँ। लगता था कि

माइन्ड रीडिंग का भी हुनर है मुझमें लेकिन इस मामले में सब फेल हो गया।" सुमेधा के सांत करे क कोसिस करत आद्या धीमे से कहलीं –

"हो सकता है कि वे तुझे चिढ़ा रहे हों या कि सता रहे हों ?" आद्या के एह मासूमियत पर सुमेधा उदास हँसी हँसत कहलीं– "आद्या ! इस मामले को पूरे छह महीने चार दिन हो गए आज। काश ! यह मज़ाक होता। काश ! यह शरारत होती। लेकिन ऐसा नहीं है मेरी जान ! यह हमारी तबाही का जानलेवा सच है।" सुमेधा क आँख फिर से भर आइल।

आद्या के कुछ समझे में ना आवत रहे कि का कहके सुमेधा के समझावें ,तसल्ली दें। दोनों ओरी घनघोर चुप्पी रहल। दस–पंद्रह मिनट बाद सुमेधा कलाई घड़ी देखत कहलीं– "अब चलती हूँ। बच्चे वेट कर रहे होंगे।"श

"बच्चे जानते हैं इसके बारे में ?"

"बच्चे ही नहीं, नीरज और मेरे मम्मी–पापा भी सब जानते हैं। लेकिन अफसोस ! कोई कुछ नहीं कर सकता। इस मामले में सब चुप हैं बस मेरे भीतर का दुख ही चुप नहीं हो रहा है। देखो तो कैसे बाहर आकर सारी देह पर काबिज़ हो गया है। सभी बिना बताए जान गए हैं कि प्यारी सुमेधा मैडम अब बेचारी हो गई हैं। अच्छे–अच्छों को नाकों चने चबवाने वाली खुद की नाक बचाने में लगी है। हजारों–लाखों स्टूडेंट्स की स्ट्रेंथ और मेंटोर को आज खुद की राह नहीं सूझ रही, खुद के ही क़दम लड़खड़ा रहे। तुम्हारी सुमेधा खतम हो चुकी है आद्या !"

सुमेधा फिर से रोवे लगल रहलीं। आद्या उनके अँकवार में भरके उजबुक नियन पूछ बइठलीं–– "अब आगे क्या करेगी ? जीजा जी को माफ कर देगी या ... ? "आद्या के एह अटपटा सवाल पर सुमेधा उदास हँसी हँसत कहलीं– "तू भी न आद्या ! बहुत मासूम है अभी तू मेरी जान ! ग़लती की माफ़ी होती है भितरघात की नहीं। चल अच्छा, चलती हूँ। ख्याल रख अपना।" सुमेधा चल गइल रहलीं बाकिर उनकर उपस्थिति आद्या के दिल–दिमाग़ में अबहियों टभकत रहे। ••

❑ मुकुलारण्यम् महाविद्यालय, सिगरा, वाराणसी

किसानी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भरल जिनगी रही परेसानी बाबूजी
काहें हमसे करावेला किसानी बाबूजी।

कब भेंटी परिसरम के मोल हमरा
पेटवा के भूख बाय कुइयों से गहरा
कबों बाढ़ कबों सूखा के कहानी बाबूजी।

जब साहुकार भा सरकार के चली
उहाँ कइसे घर-परिवार मोर पली
संगवे सिसकत बीतेला जवानी बाबूजी।

केहु अन्नदाता कहि बेचत बा हमके
कहिके किसान केहू नोचत बा हमके
हमरे पहिचान फँसरी के निसानी बाबूजी।

❑ गाजियाबाद

सदानन्द शाही के चार गो कविता

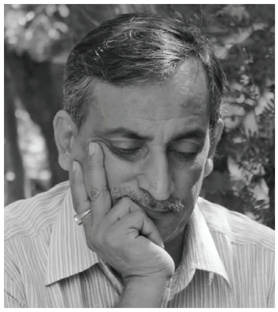

(एक) न साँच कब्बो बोलीलें

न सांच कबो बोलीलें
न झूठ के पजरे जाइलें।

न इनसे परहेज बा
न उनसे गुरेज बा

सांच-झूठ दूनो भाई
हवें हमार गोतिया
जब जइसन सोपस बइठी
दूनहूं से बतिआईलें

सांच तनी महंग बाने
झूठ बाड़े सहता
हार थकि उनहीं से
डबल रोल कराइलें

न साँच कबो बोर्लीले
न झूठ के पजरे जाइलें।

(दू) लोकतांत्रिक लोरी

घुघुआं घूं
केकर घूं
इनकर घूं
उनकर घूं
अउर ऊनहूं के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
राजा के घूं
रानी के घूं
अउर उनके नानी के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
मंतरी के घूं
संतरी के घूं
अउर उनके फंतरी के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
ठीका के घूं
पट्टा के घूं
अउर सजी जाल बट्टा के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
आसमानी के घूं
षैतानी के घूं
अउर सगर बेईमानी के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
अम्बानी के घूं
अड़ानी के घूं
अउर सजि जजमानी के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
आपू के घूं
जापू के घूं
अउर हमरे बडकाराम बापू के घूं।

घुघुआं घूं
केकर घूं
इनकर घूं
उनकर घूं
इनहूँ के घूँ
आ ऊनहूँ के घूँ ।

(तीन) बाबू जी के चेहरा

जब-जब ऐना निहारी लें
हमरे चेहरा में लउकि जाला
बाबू जी के चेहरा

कबो कबो मुस्किया के
पूछि दीहें

जब-जब भाई लो से बाति होई
अन सोहाते
चलि अइहें बाबू जी

कबो लगिहें हाँ में हाँ मिलावे
तऽ
कबो मूँड़ हिला के लगिहें
मिनहा करे

चन्ता में
फिकिर में
हंसी-मज़ाक़ में
झक्क से झलकि
जइहें

कबो माई के चेहरा के झुर्रीन से
उदास होके झंकिहें
कबो बहिनियन के चिन्ता में डूबल
चेहरा से
टुकुर-टुकुर तकिहें

अबे हाले सुनलीं हँऽ
उनका के-
घर के सबसे छोट गदेला के
किलकारी में
किलकत ।

(चार) बाबूजी

अपने दिक्क़त परेषानी में
हारी- बेमारी में
डूबत उतरात

अपने लायक़ नालायक लइकन के
अगोरत-झौंझियात
कोसत-बखानत
कवनों गुमनाम कसबा में
जरि गइल रसरी के अइठन के तरे
रहत मन परि जालें
बाबूजी

ईंहाँ मनइन के जंगल में
अकेले जूझत
बौंड़ियात
लइकन के माथा पऽ
हाथ फेरत
हौसला धरावत
मन परि जालें
बाबूजी।

❑ ‘‘साखी” एच 1/2 वी.डी.ए. फ्लैट नरिया,
पो० बी०एच०यू०, वाराणसी-221005

मनवाँ सभके चलावेला बकइयाँ

दयाशंकर तिवारी

लमहर होति जाति बाटे परछइयाँ सजनी,
मनवा सभके चलावेला बकइयाँ सजनी।

भइल भोरवा त चारि ओर सोर हो गइल,
सूघर सुगवा के चलते बटोर हो गइल।
अइसन आवेले इयाद लरिकइयाँ सजनी,
मनवा सभके चलावेला बकइयाँ सजनी।।

दुपहर खइते पिअत में जिआन हो गइल,
कुछऊ पढ़ियो नाहीं पवलीं इंतिहान हो गइल।
पर्चा देखि-देखि आवेले ओंघइया सजनी,
मनवा सभके चलावेला बकइयाँ सजनी।।

सिर पर आइल तिजहरिया चढ़िके चरचा हो गइल।
असली पवलीं ना दोकनिया सगरी खरचा हो गइल।
रोजे बढ़ति जाति बाटे पहुनइया सजनी,
मनवा सभके चलावेला बकइयाँ सजनी।।

बीतलि एतनी समइया कवनों काम ना भइल,
होखे लागल हो पुकार, इन्तजाम ना भइल।
हाजिर बाटीं अब तऽ सुने के बेजइयाँ सजनी,
मनवा सभके चलावेला बकइयाँ सजनी।।

❑ भीटी मोड़, मऊ नाथ भंजन

कुछ सवैया छन्द

हीरा लाल 'हीरा'

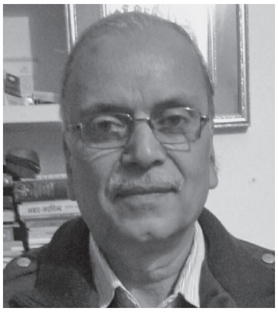

आवत देखि बसंत के द्वार, धरा सजि फूलन सेज बिछावे
गेना गुलाब जुही गुलदाउदि रंग बिरंग के फूल खिलावे
राहि बहारे कहीं पछुआ, महुआ रस के कुरुई ढरकावे
कोटर में सुगना सुगनी संग, नेह जतावत चोंच लड़ावे।

डारिन-डारिन फूटल कोपल, लागल मोजरि आम क डारी
गंध में डूबल बाटे सिवान कि, कोइलि-कूक से गूँजति बारी
गोटा बा टाँकल रंग बिरंग के, सोभे धरा फहरावत सारी
रार करे, मनुहार करे, भवँरा, हर फूल से जोरत यारी।

आवत माघ चना, लतरी, मटरा, मसुरी, तिसिया गदराइल
केहू बा केहू के माथ चढ़ावत डाँड़े गोड़े केहुए लपिटाइल
देखि के झूमत बालि हुलास में, आजु चले धनिया अगराइल
बा गहना से सजावत देंहि, जवानी बुला रहरी प लदाइल।

जाड़ पराइल साँसति देई के, कान्ह पे कम्मर भार बुझाता
खेतन बागन गाँव गिरावन, में हर ठाँव हुलास जनाता
रोरी गुलाल उड़ाइ-उड़ाइ, दुआरे दुआरे प' फाग गवाता
फागुन में कुछ बाति जरूर बा, तबे इहाँ बुढ़वो बउराता।

❑ बुलापुर, सँवरूबाँध बलिया 277001

अनिल ओझा 'नीरद' के दू गो गीत

(एक)

ले तरजूई,
झूठ बा तउलत,
टके सेर सब धान।

कोइलरि के सुर साधत बाड़े,
कउआ चप्पा-चप्पा।
झूठ के दूध,सांच के पानी,
कहां खरा बा ठप्पा।।
गांव के मनई,सकपक डर से,
लिहले चद्दरि तान।
ले तरजूई--------।।

एक हाथ में फूल आ दोसरे-
लाठी,पोंछिटा खोसले।
सांच त अपने हाथे आपन,
बइठल टेंटुआ घोटले।।
चारो खाने चित्त सांच बा,
झूठ बा महिमावान।
ले तरजूई--------।।

राम राज के सुख सपना बा,
ई बड़का भ्रमजाल।
सांच के अबहूं काला पानी,
झूठ सदा महिपाल।।
केसर के क्यारी सूखत बा,
ऊंच बेहाया गान।
ले तरजूई--------।।

ताड़-खजूर के छांहो पर त,
खूब मचल हो हल्ला।
बा जमीर बेचत ऊ चौनल,
बनि के रहत पुछल्ला।।
आजु असल पर,
जानि बूझि के,
सभे बनत बेइमान।

ले तरजूई,
झूठ बा तउलत,
टके सेर सब धान।।

(दू)

हिस्सेदारी जनता के बस,
हवा महल बा,
हर सरकारी षाषन में।
भूखल पेट भजन गाईं बस,
सुविधा वाला नारन में।।

गाँव किसान के खेती सूखल,
षहर अफीम उड़त बाटे।
केकरा दम पर,
नषा के कारोबार ई,
फरत-फुलत बाटे।
उगल बा बरगद,
गमला में जब,
संसद के गलियारन में।।

कबिरा के सच के झुठला के,
कंठी माला बांटि रहल।
अपना अपना के गलबहियां,
दोसरा के सभ डांटि रहल।
परदा के पीछे के दुनियां,
तूती बा नक्कारन में।।

चिंतन,मंथन अउर हौसला,
के त लकवा मारि गइल।
फेरु नया गंगा का अइहें,
नया भगीरथ हारि गइल।
खोजत जनता,
नया क्रांति अब,
गूंग,बहिर,लाचारन में।।

दिन के दिन,
आ राति के रतियो,
कहल इहां अब बाइ मना।
गुपचुप कुल्हि,
शड्यंत्र चलत बा,
भेद ई बाटे बहुत घना।
बाकी फूल प फूल,
झरत बा,
कुल्हिये लोकाचारन में।।

हिस्सेदारी जनता के बस,
हवा महल बा,
हर सरकारी षाषन में।
भूखल पेट भजन गाईं बस,
सुविधा वाला नारन में।।

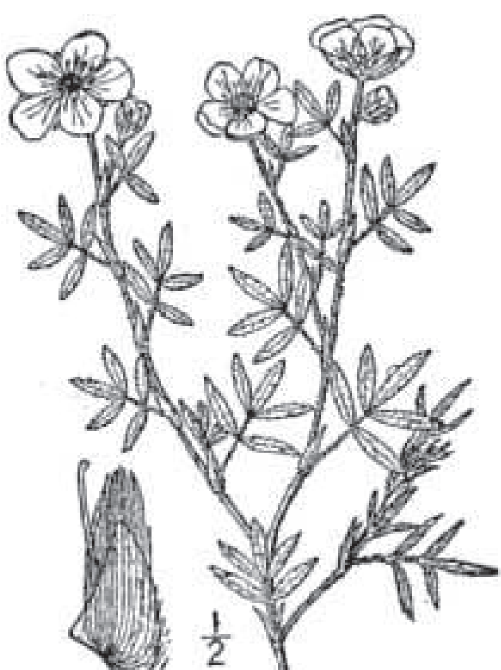

अनवद्य आलोक

निमिया के डाल पे गावेला सुगनवा
माई रे माई याद आवेला अँगनवा

मडई से लटकत रहे हरियर तरोई
चाँद तले गोदिया में तहरा हम सोंई
गोबरा से लीप लाप चूल्हवा जलइलू
पहिलकी रोटिया ना कबहूँ खिअइलू
जाईं कइसे भूल माई तोर हर जतनवा
माई रे माई याद आवेला अँगनवा

अँगना बहरलू जँतवा चलवलू
नून भात खाइ खाइ घरवा चलवलू
पियरी मटिया से घर सारा लिपलू
पितर के पूजि दरिद्दर खेदलू
गाईं कइसे माई तोर हम बखनवा
माई रे माई याद आवे ला अँगनवा

भरल बरसात में ले गोदिया उठवलू
ईसूपुर जाइ मोर फोड़वा चिरवइलू
दादी त बतवले रहलिन हमके इ बतिया
रोवलू तू रात भर चिपकाई हमके छतिया
कइसे बिसराई तोर आँचर के तपनवाँ
माई रे माई याद आवेला अँगनवा

बाबू के जे उमा मरलन फूटल कपरवा
लाठी ले उतर गइलू बीच तू झगड़वा
जहाँ जहाँ गिरलू माई फूल हम चढ़ाइब
मुट्ठी भर माटी हम घरे ले आइब
रहि रहि आई माई तोरे रे सपनवाँ
माई रे माई याद आवेला अँगनवा

❑ सी-6/354 यमुना बिहार, दिल्ली-110053

शिवजी पाण्डेय 'रसराज' के गीत

उमस भरल गरमी से,
राहत क फेरा में,
मेघा से मेघ बोलवावे,
बयरिया
गवें-गवें बेनिया डोलावे।

बदरी क चलनी से,
बुनिया के झारि-झारि
धरती के हिया जुडवावे,
बयरिया,
गवें-गवें बेनिया डोलावे।

झुलसन बिरउवा के,
ढाढस बन्हावे,
नन्हीं-नन्हीं जिनिगी के,
जीये के सिखावे,
सबका से नेहि सरसावे,
बयरिया,
गवें-गवें बेनिया डोलावे।

बदरी के ओट लेके,
बिहँसे किरिनियाँ,
लागेले कि भागल फिरे,
गरमी से निनियाँ,
छाँहों-छाँह खोजि छँहाये,
बयरिया,
गवें-गवें बेनिया डोलावे।

हाँफत बाड़ी चिरई,
उदास फेंड़-रूख बा,
तलफत सरेहि-घाम
बहुते बेरूख बा,
'रसराज' कजरी सुनावे,
बयरिया,
गवें-गवें बेनिया डोलावे।

❑ ग्रा० पो० - मैरीटार, बलिया।

धीरेन्द्र पांचाल

एक्कै सपना चौंसठ रात ।
नजर घुमावा भोलेनाथ ।

पढ़ पढ़ अंखिया हो गइल आन्हर ।
करीं मजूरी नइखे जांगर ।
बस तू एतने रसम निभई दा ।
खोला अंखिया भसम तू कई दा ।
अइसन जिनगी का होई नाथ ।
नजर घुमावा भोलेनाथ ।

हमें सिखावें बांगड़ बिल्ला ।
जे एकदम्मे हवे बिलिल्ला ।
ना चाही सोना के दान ।
टेर सुना तू खोला कान ।
बाप के अखरे रोटी भात ।
नजर घुमावा भोलेनाथ ।

बहुतन के बहुताहत कइला ।
केकरा पे मर्माहत भइला ।
षव से शिव तू निकला बाहर ।
तीन आंख हव तब्बो आन्हर ।
कइसे देखबा करम पे घात ।
नजर घुमावा भोलेनाथ ।

❑ चन्दौली, उत्तर प्रदेश

देहरी के बहरा

कृष्ण कुमार

घर से भगला के बाद बचत–खुचत नरेस आ उरमिला आरा शहर के बाई पास रोड प खाड़ एगो कार डराइबर के लगे जा पहुँचले। कतहीं ई डराइबर ओह लोग प सक ना करे लागे, एहले नरेस तुरंते आपन झूठ बतकही ओकरा सामने उचरलें–श्हमरा घर के एगो आदमी बहुते बीमार बा। ऊ पटना के एगो प्राइबेट अस्पताल में भरती बा। आज रात ओकर अपरेसन होखे वाला बा। किरिपा क के हमनी के जलदिये पटना पहुंचा दीं, डराइबर साहेब...। "ठीक बा। चलीं सभे, होह कार में बइठीं...।श्–आ ऊ डराइबर एगो लाल कार के ओरे ओह दूनों आदमी के लेके चल देलस। ऊ दूनो आदमी कार में जाके बइठि गइलें। कार खुल गइल।" अब नरेस आ उरमिला के जान में जान आइल। अपना गाँव के सीताराम सिंह आ कवलघारी सिंह के देखला के बाद अकेला–अकेली मिले के ओह लोग के संउसे सुख डर में बदलि गइल रहे। एगो डेरवावना सपना लेखा ऊ डर ओह लोग के देरि तक ले सिहरत रहे। भरी राहे ऊ दूनों आदमी गूंगी सधले रहन। ऊ लोग एक दोसरा से कवनो बतकही ना कइल। असली में कार खुलते एक–दोसरा के कान में फुसफुसा के ऊ लोग ई बात तइ–तापर क लेले रहन कि रास्ता में हमनी के बतकही नइखे करे के, किअब केहु के सोझा हमनिन के भेद खुलल ठीक ना होई....।

कार वाला पटना के प्राइबेट अस्पताल के सोझा ओह लोग के उतार देलस। ओकरा के भारा–भूता दे के नरेश आ उरमिला एगो रेक्सा प बइठलें आइसटेसन के ओरे चल देलें। रात लगभग खतम हो चलल रहे। सुकवा बांस भ ऊपर आसमान में टिमटिमात रहे। भोर होखहीं वाला रहे। इसटेसन जाये प ओह लोगन के पता चलल कि कलकत्ता जाये वाला

गाड़ी एक घंटा के बाद आई। टिकट लेके ऊ दूनों आदमी पलेटफारम के एगो कोना में दुबकि के गाड़ी के इनतजारी करे लगलें। एक–एक मिनट ओह लोग के एक–एक पहर

लेखा बुझात रहे। ऊ चाहत रहे लोग कि जल्दी से जल्दी गाड़ी आ जाय। पलेटफारम के भीड़ में कतहीं सीताराम सिंह आ कवलधारी सिंह फेरू मति लउकि जासु। एह शक से ऊ लोग मरल जात रहन। जब गाड़ी आइल आ ओमे चढ़ि के कलकत्ता खातिर ऊ लोग चल देलें, तब कतहीं जा के ऊ दूनो आदमी सहज भइलें।

उरमिला के केवाड़ी प फेरू दस्तक होता। दस्तक के आवाज उनका फेरू अनजान लागता। अब के आ गइल...? अजबे तरह के ई मोहल्ला बा। रात में जब दोसर मोहल्ला सुति जाता, ओइजा ई जागले रहता। कब केकरा केवाड़ी प दस्तक होखे लागि, एकर कवनो खावा–पगार आ ठीक–ठेकान नइखे। बाकिर ओकरा के त सभे जानता कि ऊ ओइसन नइखे, फेरू ओकरा के काहे तंग करतारें स। ऊ घर में अकेले बिया। एह सतुला रात खा ओकर केवाड़ी खोलल ठीक नइखे आ ई सोचि के ऊ बइठले रहि गइल। दस्तक के आवाज बढ़ि गइल आ ओकरा साथे एगो मरदाना के आवाजो सुनाये लागल–श्खोल भउजी! हम हई....। ऊ आवाज पहचान लेलस'–श्ई त देवलालवा के बोली बुझाता।श

देवलाल एह मोहल्ला में नरेश के नया संघतिआ रहे। एकरे साथे नरेश मेहनत–मजदूरी के काम करत रहे। उमिर में देवलाल, नरेश से बड़ रहे। बाकिर उरमिला के भउजिये कहत रहे।एह

मोहाल्ला में केहु बड़ होखे भा छोट, सभे एक–दोसरा के घरनी के भउजिये कहत रहन। भउजी कहि के हँसी–मजाक करे के भांज लागि जात रहे। दोसर नाता बनवतें त अइसन कइसे करितें...? उरमिला के लागता कि देवलाल, नरेश के लगे से आइल होई? सायद नरेश कवनो सूचना भेजले होइहें। बाकिर अब ओकरा नरेश के सूचना आ ओकरा आवे के इन्तजारी पहिले लेखा बेकरारी से भरल नइखे होत। घर से भागला के एक साल के बादे संउसे अनुराग उड़िया गइल। फेरू त एइजा ऊ ओकरे नाम प बइठल बिआ। ओकर सूचना ओकरा लेबे के चाहीं....। आ ई सोचि के ऊ केवाड़ी खोल देलस। देवलाल भीतरी आ गइल कहलस–'देरि ले हम केवाड़ी खोलवावत रहनी हां. ...।' उरमिला बहाना बनवलस–सुति गइल रहनी हां....। देवलाल कहलस "अकेलहिं मत सुति जाइल करऽ भौजी। एइजा कवनो मेहरारू अकेले ना सुते....। एह प उरमिला अगिया के कहलसि–श्कइसे आइल बाड़?नरेश कुछु खबर भेजले बाड़े का....?

देवलाल हँसलस– आजु ओकरा एगो मालधनी भेंटाइल बा, भौजी। ओकरे मुखतारी में चाकरी बजावता। बाद में आई....। "तब एह रात बितला तू काहे खातिर आइल बाड़...?,–उरमिला ओहि तैस में पूछ लसि। हम एगो बात कहे आइल बानी भउजी...।– देवलाल मीठ आवाज में अरज कइलस। "तोहार दुख हमरा से देखल नइखे जात भउजी। तू कतना कष्ट में बाड़ू। भुखले पेटे सुति जा तारू....। देवलाल आपन बात शुरू कइलस।। "हमार किसमते अइसन बा त हम का करीं...?" उरमिला कहलस "किसमत के दोस मत द भउजी....।श–देवलाल कहलस– तोहरा जवन रूप मिलल बा आ जइसन बदन तू पवले बाडू, ओकरा से का नइखे हो सकत...? तू चाह त दोसरा के खोली में केहु कबो जइबे ना करी....।

उरमिला खिसिआ गइल–"जबान सम्हार के बात कर। हम ओहनिन लेखा रंडी–बेसेआ ना हईं...। "बेसेआ केहु होखे ना भउजी। समय सभ करा देला।" देवलाल समझावे के कोसिस कइलस। "हम ओह खानदान के लइकी हई कि बेसेआ बने के पहिले मरी–खपी गइल निम्मन समझबि....।" उरमिला के खिसिन मिजाज भूत हो गइल।। "एइजा तोहरा खानदान के नीचे के सखसीअत के लोग बहुत कम बा भउजी। अनेकों बड़के घर से आइल बाड़ी। सुरू में तोहरे लेखा अडिअल टट्टू बनल रहली। बाकिर बाद में परिस्थिति के अनुकूल ढ़लि गइली....। देवलाल जथारथ स्थिति के गेआन करा देल चाहत रहे। "हम तोहरा से कई बेर कहि चुकनी कि हमरा के सिखावे के जरूरत नइखे। हमरा सामने अइसन –ओइसन बतकही मत कइल कर....।" उरमिला झुंझुआइल।

"काहे नाराज होतारू भउजी....। देवलाल पैंतरा बदललस–आखिर सोचऽ कि जब एइजा तक ले आ गइल बाडू त का करबू ? लवटि के त घरे जइबू ना। चाहे त भूख से, चाहे आत्महत्या से मरबू चाहे ऊ सब करबू, जवन एइजा आवेवाली सभ मेहरारू करेली स....।" देवलाल पैंतरा बदललस –आखिर सोच कि जब एइजा तक ले आ गइल बाडू त का करबू? लवटि के त घरे जइबू ना। चाहे त भूख से, चाहे आत्महत्या से मरबू, चाहे ऊ सब करबू, जवन एइजा आवेवाली सभ मेहरारू करेली स....। "हम मरब ! उहे हमरा पसन बा.....।"–उरमिला आपन फैसला सुनवलस। "ई देह, ई जवानी मरे लायक नइखे भउजी। काहे जिद पकड़ले बाडू? जीअ आ दोसरा के जिआव। नरेसो के राहत मिली। कबहूँ–कबहूँ हमहूँ आपन मन बदल लेल करब...।" देवलाल आपन रसिकता परगट कइलस...।

"अबहीं निकल जा इहंवा से एही खातिर आइल रहल हा एइजा.....।" –उरमिला नागिन लेखा फुंफकारे लगलि। देवलाल, उरमिला के ओर हाथ बढ़ावत कहलस – "सोना अइसन एह देंहि के काहे माटी बनाके बइठल बाडू भउजी। एकबेर आजा हमरा अंकवारि में। सुरूआत हमरे से होजाय। तोहार गुस्सा त हँसिओ से निम्मन बा. ...।" "खबरदार जे हाथ लगवले....। उरमिला देवलाल के पकड़ से अलगा दरवाजा के बहरी जाके खाड़ हो गइल आ चिचिआए लगलि.... "निकल जो हमरा घर से। कमीना। हरामजादा। दोसरा के मेहरारू के हाथ लगावे चलल बाड़े । हम ओइसन ना हईं। जान दे देबि....।।"

हल्ला गुल्ला सुनि के पास–पड़ोस के दोसर मेहरारू मरद आ जुटलें । ऊ देवलाल प आरोप लगवलस कि ओकरा के पेसा करे खातिर बरिआरी बाध्य कर रहल बा। आपन सफाई देत देवलाल कहलस– नरेसवे हमरा के भेजले बा। कहले बा कि समझा–बुझा के ओकरा के रहता प ले आवऽ। हम कवनो अपने मने नइखीं आइल. ...। ई झूठ बात ह....। "आई त पूछि लिहऽ...।" पूछबि। आवे द। अगर जे ऊ अइसन कहले होई त ओह, हरामजादा के मुंह ना देखबि...।" आ ऊ रोवत–कलपत अपना घर के भीतरी चलि देलस। हल्ला सुनि के आइल मेहरारू–मरद ओकरा दुआरी से घसके लगलें। ऊ सुनलस सभकेहु ओकरा खिलाफ जहर उगिलत जा रहल बा...।

देवलाल छोड़ि काहे देलस ओकरा त शुरू क देबे के चाहत रहे। बरिआर कठमउग बा...। "जब सतिये

बने के रहल ह त एह मोहाल्ला में काहे के आइल हा। देखतानी कि एइजा कबले बाँचल रह तिया....? "नयी–नवेली बनि के एह मोहाल्ला में आइल बिया। सुरू–सुरू में सभ मेहरारू बिटिया बने के फेर में अइसने नखड़ा करेलीस। नखड़ा ना करी त आपन भाव कइसे बढ़ाई.....?" –"बेचारी आवते बिछि जाई त सस्ता जे परि जाइत। गजरा–मुरई के भावे बिकाये के काम लागि गइल रहित। चतुर मेहरारू बिया देरी ले कमाई..... ।"

उरमिला आपन केवाड़ी बन क लेलसि। ओकरा से अब अउर आगे ना सुनल गइल। सबनका खा गइल। उनका बुझाइल की कान में केहु खउलत पारा डाल देले बा। देवलाल के ई बात ओकरा करेजा में तीर लेखा जाके धंसि गइल कि नरेसे ओकरा के समझावे खातिर भेजले बा। का ई साँच ह...? खुला मिजाज से नरेस त ई कबहिंयो नइखे कहले। बाकिर ओकरा बदलल बेवहार से एह बात के इसारा त मिलिये रहल बा।का सभ बात साफे –साफ कहल जाला।ओकरा के अकेले छोडि के अतना–अतना राति बितला तकले ऊ बहरी रहता। ऊ खाना खइले बिआ आ कि ऊ भुखे पेट बिया। ओकरा साथे के कइसन बरताव कइल, एकर जाँच– पुछारो कबो नइखे करत। बेसेअन के एह मोहाल्ला में ओकरा के ले आके राखि देले बा। ई इसारा ना त अउर का ह...? आपन सभ कुछ समरपित क के जेकरा साथे भाग के अइनी, ऊ अइसन कइसे हो गइल? सभ कुछ भुलवा के, दुख, यातना आ अपमान सहिके आपन अस्मत ऊ बचावत आवत रहे, बाकिर अब ओकरो छीना–झपटी शुरू हो गइल। कास! नरेश के ऊ पहिलही पहचान गइल रहित। शुरू में त ऊ दूध के धोवल लागल रहे। ऊ अपना के एकदम ओकरा अनुकूल ढारि लेले रहे। ओकर असली रूप त बाद में सोझा आवे के शुरू भइल। बाकिर तब ले ओकर दुनिया बरबाद हो गइल रहे।

उरमिला के आंखिन के सोझा सभ दृश्य लवटि के आवे लागल। अपना घर से भागि के कलकत्ता पहुचला के बाद भीड़ के महासमुंद देखि ऊ दूनो आदमी बड़ा खुश आ मनगर भइल रहन। विशाल जनसंख्या वाला एह शहर में अब ऊ पकड़ में ना अइहें। कतहिं छिपि के रहि लिहें। घर वाला अगर जे एइजा अइबो करिहें त कहंवा–कहंवा ढुढिहें ? केकरा से पुछिहें ? निरास होके जलदिये लवटि जइहें....। सुरू में ऊ दूनों दू दिन तक ले एगो धरमसाला में ठहरलें। फेरू दौड़–धूप क के धनी आबादीवाला एगो मोहाल्ला में ऊ लोग किराया के एगो घर ले लेलें। एगो कमरा के घर के काफी किराया दिहल कबूल करे के परल। एकरा अलावे कवनो दोसर चारा ना रहे। कम किराया के घर मिलल मुष्किल रहे। ई सोचि के ऊ लोग ऊ घर कबूल कइल कि बाद में अपना सुविधा के हिसाब से घर बदल लिहल जाई, अबहीं त कतहिं रहि के ओह लोग के इतमिनान होखे के बा। ओह घर में अइला के बाद नरेस आ उरमिला अतना खुश हो गइल जइसे ओह लोग के मंजिल मिलि गइल होखे। घर के भीतरी एक–दोसरा के आलिंगन पास में बन्हाइल ऊ लोग प्रेमालाप करत रहन। नरेश कहत रहे– अब हमनी के सही जगह आ गइनी जा। एहिजे आपन दुनिया बसावल जाई...। उरमिला कहत रहे– "तू जहंवा बाड़, हमरा खातिर त सुख उहवें बा। तोहरा बांहिन में रहि के घर–परिवार के इयाद हमरा कबहूँ ना आई। हमार दुनिया त तुहीं बाड़...। नरेस कहत रहे– तोहरा के पाके हम धन्य हो गइनी। अब आगा जीवन में कुछुओ ना मिलो तबो हमरा अफसोस ना होई। तोहरा रुप से त हम सभ कुछ पा गइनी। उरमिला कहत रहे– एही तरे हमरा के बरोबर अपनवले रहब नू? कबहूं छोड़ब त ना नू....? नरेश कहत रहे– "एकर त सवाले नइखे उठत, जान! रानी, तू त हमरा मन–परान में बस गइल बाडू। तोहरा बिना अब एह जीवन के सारथकता ही का बा... ? उरमिला कहत रहे–हमहूँ बड़भागी बानी। अपना मन लायक सवांग पा गइनीं। तोहरा के हमेसा अपना हृदय में बसा के राखबि। जीवन भ तोहार पूजा करबि...। हमरा मन के लक्ष्मी आ देवी हऊ तू। तोहरा के बराबर सीर– आखिंन प बइठा के राखबि...। आलिंगन आ प्रेमालाप के दौरान ओह दूनों के खाए–पीए के सुधि भी ना रहत रहे। उरमिला इयाद दिआवत रहे– अबहीं ले तू कुछु खइल ना, चलऽ, खा लऽ...! नरेश कहत रहे– 'तू हमरा के प्रेम से देखत रहतारु त भूख– पिआस नइखे लागत। तोहार कजरारी आंखिये हमरा के खिआ–पिआ दे तारीसऽ...।

उरमिला कहत रहे– तोहरा लगे रहला प हमरो खाए के इच्छा नइखे करत!तोहरा प्रेम से मन भरल–पूरल रहता...। एह स्थिति में ऊ कबहूं राति के खाना दिन में खात रहन त कबो दिन के खाना राति में। ओह दूनों के दिनचरया एकदम अनियमित हो गइल रहे। लगभग महीना भर के खाये के समान आ दोसर जरूरी चीज एके बेर ऊ खरीद के घर में ले आके राखि देत रहन स आ दरवाजा बन क के एक दोसरा के बांहिन में समात रहन त समाइले रहि जा स– प्रेम में मगन निष्चिंत, निर्बंध। घर से जवन रोपेया चोरा– लुका के ले आइल रहन स ऊ त कुछुये दिनन के बाद खतम हो गइल...। अब

बारी–बारी से एक–एक गो जेंवर बेंचि के काम चलावे लगलें। जेंवर खतम हो जाई त का करिहें, एह यथार्थ के ओरे ओह लोगन के धेआन जाते ना रहे...? एक–दोसरा के जवान जांगर में लपेटाइल, जवना खुमारी आ मदहोसी के बीचे ऊ दूनों जीअत रहन, एह मादक आ मोहक संसार के बीचे यथार्थ गेयान ओह लोग के होखे त कइसे...? दुनिया के कवनो खबर ओह लोग के ना रहे। अपना करतब के गेयान ना रहि पावल। खाली एक–दोसरा के देखत, एक दोसरा के आंखिन से पीअत–पीआवत आ एक–दोसरा के बांहिन में एकाकार होत रहलें...। बीतत समय के साथे हौले–हौले ओह दूनों के हाथ एकदमे खलिहा गइल। भूख के मारि मन के मदकता के सोखि लेलस. एक–दोसरा के प्रति ओह दूनों के तेज सटाव उधिया गइल। ना चाहला के बादो नरेस के मजदूरी करे के परल आ बेसेअन के मोहाल्ला में सस्ता–सुविस्ता खोली लेबे के परल...। देवलाल के गइला के बाद उरमिला जब ओकरा बतकही के विष्लेशण करे लागल त ओकरा पसन से बुझा गइल कि जरूर नरेसवे ओकरा के भेजले होई...! अपना प्रति नरेश के कम होत गइल लगाव आ ओकरा सुरक्षा के प्रति ओकर लपरवाही एह बाति के इसारा बा। त का ओकरो नियति एह मोहाल्ला में घर से भागि के आइल दोसरा मेहरारून लेखा बेसेआ बनि जाये के बा? बाकिर ना, ऊ अइसन कबहीं ना होखे दिही...! बाकिर ई सवाल उरमिला के सोझा खड़ा हो जाव कि का ऊ घर लवटि सकेले...? का ओकर माई–बाबू आ गाँव के समाज ओकरा के स्वीकार क लिही...? बस एही जगहा, एही बात पर ओकरा कड़ेर मन से फैसला लेबे के रहे। ●●

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला,
आरा-802301 (बिहार) मोबाइल - 9431098005

अशोक कुमार तिवारी के गीत

अपने हो जइबऽ महान, इनसान त बनऽ
तोहके दुनिया निरेखी, पहिले चान त बनऽ!

अपने भर में सिमटल बाड़ऽ, खुद में सूते-जागेलऽ,
सुख के चाह में मरत रहेलऽ, दुख से दुरिया भागेलऽ
सुखवा अपने आई दुख के मेहमान त बनऽ-तोहके....

गोड़ केहू के लागे जइबऽ, गारी काहें दीही,
अच्छत बन जइबऽ तऽ सब्भे, हाथो-हाथे लीही
घर-घर पूछ होई तोहरो, हल्दी-धान त बनऽ-तोहके.....

अपना गम के गठरी दाबऽ, अपने मन के कोना,
काठ करेज करऽ अब छोड़ ऽ, अपना दुख के रोना
तनिका दोसरो के गम में, मेहरबान त बनऽ - तोहके....

सूरज बन अन्हियार भगावऽ, सगरो कीरिन बाँटऽ,
मेघा बनके सबके सींचऽ, दुनिया भर में पाटऽ
लोगवा हाथ खुद उठाई, असमान त बनऽ-तोहके....

❑ सूर्यभानपुर, बलिया

पहलवानी

✍ कमलेश

गोमती मिसिर बांया हाथ के कपार के ऊपर कइलन आ आसमान तिकवे लगलन– का ए भगवान? जान लेइये के मनब का? बइसाखे में जेठ मतिन करकस घाम होखे लागल। जवना बखत उनुका अखाड़ा के माटी में लोटे के चाही ओह बखत उ बइठका में खटिया तूड़ताड़न। अइसे त उनुकर मए पहलवानी खत्तम हो जाई। मुड़ी नीचे क के थगली में हाथ डललन। जब हाथ थगली ले बाहर आइल त ओह में सोगहग मोबाइल फोन चमकत रहे। मोबाइल फोन के आंखिन के सोझा रख के ओकर एगो बटन टिपलन। बटन टिपते ओह में भक दे अंजोर हो गईल। 9 बज के 15 मिनट। बताई महाराज। घरी आदमी के गमछा में मुँह तोप के निकले के पड़ता।

चालीस साल के गोमती मिसिर माने मए नारायनपुर के बाबा। गांव के लइके ना बड़ो बूढ़ लोगनि के उ बाबा हवन। अइसे बाबा वाला कवनो लच्छन उनुका में रहे ना। चालीस साल के उमिर हो गईल बाकिर कबो पूजा–पाठ ना कइलन। हं, हनुमानजी में उनुकर अगाध सरधा रहे। बाकिर खाली अतने कि भोरे हनुमान चालीसा पढ़ के गोड़ लाग लेस। रामचरित मानस के कई गो दोहा आ चउपाई उनुका जबानी इयाद रहे बाकिर इ उनुका बाबूजी के किरपा रहे। बचपन में बाबूजी खूब दोहा–चउपाई रटवइलन। हं, बचपने ले लहसुन–पियाज से दूर रहे के संस्कार आजु ले जरूर बनल बा।

पढ़ाइयो–लिखाई से उनुकर गोतियारो वाली लड़ाई रहे। किताब देखते जइसे उनुका बोखार चढ़े लागे। बाबूजी उनुका के पढ़ावे खातिर जवन हो सकल तवन कइलन। उनुका के अपने इसकुल पहुचावे जास। सांझ के अपना भीरी बइठा के पढ़ावे के कोसिस करस। बाकिर गोमती मिसिर माने वाला कहां रहन। बाबूजी इसकुल पहुँचावस आ थोड़ही देर में उ भाग के गांव के अखाड़ा पर चल जास। ओहिजे उनुकर मन लागो। किताब के बस्ता एक ओरि ध के उ पहलवानी के दांव–पेंच देखस–सीखस। खींच–खांच के केहू तरे मैट्रिक पास कइले आ ओकरा बाद हाथ उठा दिहलन। सीधे बाबूजी के सोझा जा के साफ–साफ कह देलन– 'अब आगे के पढ़ाई हमरा से ना होई बाबूजी।'

बाबूजी के त पहिले बुझइबे ना कइल कि उ का कहऽताड़न। आ जब बुझाइल त उ आपन कपार ठोंक लेलन। पहिले त समझावे के जतन कइलन बाकिर बाद में एकरा के महादेवजी के मरजी मान के ओकरा आगे मुड़ी निहुरा देलन।

आजु ले बाबा गोमती मिसिर कांच–कुँवार बाड़न। अइसन कवनो बात नइखे जे उनुका में कवनो खोट बा। उलटा एक बार जे गोमती मिसिर के देह–धाजा देख ले व उ ओही में पटुआ जाओ। छह फुटिया देह, गोर रंग, छोट–छोट मचमचाइल आंख, छोट–छोट बाकिर एकदम करिया आ गझिन केस। छाती अइसन कि ओकरा पर दू गो लइका बइठ के खेलस तबो जगह बाँच जाओ। गोर मुंह प करिया मोछ अइसन फबेला कि पूछीं मत। दस साल पहिले तक इहो हाल रहे कि गांव के कई गो टोला के लइकी उनुकर राह ताकत रही स। गांव के मए भउजाइयन के उ सभसे सुघर देवर रहन। बाकिर गोमती मिसिर आपन

हद बूझत रहलन। सोझा जब कवनो लइकी भा मेहरारू पड़ जाए त उ आपन आँख हमेसा नीचे क लेस।

केहू का मन में इ सवाल उठी कि एतना सुघर बांभन अब ले कुंवारे काहे बा? बात अइसन बा जे उनुका के पहलवानी के दाँव सिखावे वाला मास्टर एहसान अहमद एक हाली उनुका से कहले रहन– 'बेटा, जब ले संभव होखे मेहरारू ले दूरे रहिहऽ। एक हाली मेहरारू आ बाल–बच्चा के चक्कर में पड़लऽत मए पहलवानी हवा हो जाई। जब कुष्ती से मन भर जाई तब करिह बियाह।'

त बूझि जाईं कि इ मंतर गोमती मिसिर अपना गमछा में खूब जतन से बान्हि लेलन। उहे गमछा के कस के अपना कपार प लपेट के गुरु के मंतर के हमेसा इयाद रखे के कसम खइलन। माई–बाप बियाह करे के खातिर केतना निहोरा कइल लोग। बाकिर जे अपना बात ले पीछे हट जाए उ गुरु के चेला कइसन? बाप दुर्वासा मिसिर इलाका के जानल–मानल जोतिस। केतने बांड़–कुंआर के बियाह के जुगुत बतवले रहन बाकिर अपने लइका के बियाह के कवनो उपाय ना निकाल सकलन। अरे बचपन में खेले–कूदे आ पहलवानी करे के केकर सउख ना होला। बाकिर एकरा खातिर आदमी बियाह ना करी? इ कवन बात बा भाई? पहिले त खूब बहस भइल बेटा आ बाप में। जे दूनो बाप–बेटा के बहस करत देखे ओकरा बुझाव कि अब बस लाठी निकलही वाली बिया। बाकिर गोमती मिसिर के इरादा पक्का रहे– बाप–माई के इजति आपन जगह आ आदमी के संकलप आपन जगह। आखिर में दुर्वासा मिसिर हार गइलन आ सोच लिहलन कि एकरा भाग में भगवान जवन लिखले होइहें उहे नू होई। हो सकेला कि भगवान उनुका भाग में छोटकी पतोह के मुंह देखल नइखन लिखले। बाकिर उ मास्टर एहसान अहमद के खुब सरपलन। एक हाली त उनुकर दुआर प जा के खूब गरियवलन। एहसान अहमद बेचारा चुपचाप गारी सुन लेलन। उनुका खातिर इ कवनो नया बात ना रहे। उनुकर कई गो चेला के माई–बाप एही तरे आ के उनुका के सराप के गइल लोग। अब त उनुका एकर आदत पड़ गइल बा। दुर्वासा मिसिर बुढ़ापा में मंदिर अगोरे लगलन आ मतारी रोवत–गावत छोटकी पतोह के आस में परलोक सिधार गइली।

गोमती मिसिर अपना बइठका के सोझही अखाड़ा खोनवले बाड़न। अब उ आपन गुरु मास्टर एहसान के काम अपना कपारे ले लेले बाड़न आ गांव के नया–नया लइकन के पहलवानी के दाँव सिखा रहल बाड़न। गांव के दस–बारह गो लइका भोरे–भोरे उनुकर अखाड़ा में जुट जालन स। पहिले त गाँव के बीस–पचीस गो लइका जुटत रहन स। बाकिर गोमती मिसिर देखलन जे ओह में दस–बारह गो लइका अइसन रहलन स जवन कुष्ती के दांव सीखे से जादा अपना मोबाइल फोन में लागल रह स। तब उ एगो नियम बनवले– अखाड़ा में उहे लइका घुसी जे आपन मोबाइल फोन पहिले उनुका भीरी जमा कर दी। नियम बनला भर के देर रहे कि अखाड़ा से आधा से जादा लइका गायब। बाकिर अब जवन लइका बाचल बाड़न स उहो आठ बजे का पहिलही घरे भागे के जोगाड़ में लाग जालन स। का करऽ स बेचारा। घामे अइसन हो जाता कि अखाड़ा त दूर घर से बहरो निकलल दुसवार हो जाता।

गोमती मिसिर बइठका से निकल के अखाड़ा भीरी जाके ठाड़ हो गइले। अखाड़ा के माटी देखिये के उनुकर मन कुहक गइल। दूनो बेरा अखाड़ा में जम के पानी पटावेलन। बाकिर घाम अइसन कड़कड़ा के पड़ता कि नौ बजे के पहिलही अखाड़ा के माटी सुखा के ढेला मतिन हो जातिया। कबो उहो समय रहे जब गोमती मिसिर दिन के एगारह बजे ले अखाड़ा में ठाड़ होखे ललकरले रहस आ मए लइका दंड बइठक करत रहन स। अब आठ बजते–बजत अखाड़ा में लइकन के देह जरे लागता।
गोमती मिसिर अखाड़ा के निहारते रहन कि केहू के बोली से उनुकर धेयान टूटल। उ अचकचा के आंखि उठवले– 'गोड़ लागिला ए बाबा। अखाड़ा में कुछो हेराइल बा का?'

सोझा मास्टर रामचंदर पासवान। गांव के मिडिल इसकुल के मास्टर। अइसन बुझाव जे भगवान उनुका मुंह पर हंसी साट देले होखस। हमेसा हँसत रहस। उमिर इहे तीस साल के एने–ओने। जिंस के पैंट में कुरता खोंस के पहिनस। पहिले खूब पाटी–पोलटीस कइलन। खूब लाल झंडा लेके घुमलन। बाकिर जब ले नोकरी लागल बेचारे अघा गइलन। हो गइल जेतना करान्ति होखे के रहे। अब चैन से नोकरी कर आ बाल–बच्चा के पाल। पाटी–पोलटिस से भले छुटकारा पा लेले रहन बाकिर पुरनका अंदाज अभियो बाचल रहे। लड़े–भिड़े में केहू से तनिको ना डेरास। बचपन में उहो मास्टर एहसान अहमद के अखाड़ा में कूदल रहन बाकिर उनुका जलदिए बुझा गइल कि इ रोग उनुका बस के नइखे। गोमती मिसिर से उमिर में छोट रहन बाकिर दोस्ती पकिया रहे। बाबूजी के खिसियइला के बादो गोमती मिसिर उनुकर साथ ना छोड़लन। जात–पांत के कवनो बात उनुका भीतर कबो ना रहे।

गोमती मिसिर उनुका के देखि के तनी हरियर भइलन। मुसुकी छोड़ के कहलन– 'खुस रहऽ रामचंदर। का हाल बा हो? आजु इसकुल ना गइला हा का?'

रामचंदर आपन मुंह गमछा में पोछलन आ गोमती मिसिर का भीरी आ गइलन– 'का इसकुल खुली आ का लइका पढ़िहन स। एगो त गरमी अइसन पड़ता कि बुझाता जे देह सुखा जाई। दोसरा ओर रोज सरकार के नया टंट–घंट।'

'का भइल हो?' गोमती मिसिर रामचंदर पासवान के बइठका में आवे के इसारा कइलन।

'अरे होई का? बुझि जाई कि बगसर से पटना तक जाए वाली जवन सड़किया बनतिया उ अपना गाँव के सिवाला के पीछे से टपतिया।' बइठका में एगो टेबुल पर प बइठ के रामचंदर पासवान किनारे रखल बेना उठवलन।

'इ त पते बा। ओह में हमनियो के जमीन गइल बिया। देखऽ कब ले ओकर पइसा मिलता?' गोमती मिसिर कुरसी प बइठ के टांग खटिया प पसार दिहलन। फिर जइसे उनुका कुछ इयाद पड़ल– 'बाकिर सड़किया त अभी नइखे बनत? आ ओकरा ले तहरा इसकुल के का मतलब?'

रामचंदर पासवान फिस्स से हँस देलन– 'बाबा, रउवा बहुते चीज नइखे मालूम। अइसही रउवा अखाड़ा से कहां फुरसत मिलेला। सिवाला के पीछे से सड़क निकली कइसे? कम से कम डेढ़ सौ पेड़ बाड़न स? खाली बरगदे के त दू दरजन पेड़ बाड़न स। इ सब पेड़न के कटला का बादे नू सड़किया बनी।'

'हं। त..?' गोमती मिसिर चिहुँकलन।

'त काल्हू ले पेड़ काटे के काम शुरू हो जाई। इसकुले के दूनो कोठरियन में पेड़ काटे के मए सामान आ मजूरा सभ के रखवा दिहल गइल बा।'

'त लइका पढ़िहन स कहाँ?'

'ओकरा ले सरकार के कवन मतलब बा ए बाबा?' कह के रामचंदर पासवान उठे लगलन।

गोमती मिसिर उनुकर कान्हा प हाथ रखलन– 'अरे एतना गरमी में कहां जइब रामचंदर? आम के पन्ना बनवइले बानी। दू गिलास खींच ल ओकरा बाद निकलिहऽ। घाम–लुक से बचाई।'

रामचंदर पासवान हाथ जोड़ लेलन– 'ना ए बाबा। माफ करीं। अभीए दू गिलास सतुआ खींच के अइनी हाँ।'

रामचंदर पासवान के निकलते गोमती मिसिर खटिया प पसर गइलन। गांव में बिजली आ त गइल बिया बाकिर उ कब आवेले आ कब जाले इ भगवानो ना जानस। गोमती मिसिर बिजली वाला पंखा त लगवा लेले बाड़न बाकिर बांस वाला बेना ना राखस त बइठल दुसवार हो जाई। गंजी निकाल के गोमती मिसिर बेना डोलावे लगलन। अचानक उनुका पिछलका साल सुदर्शन यादव के बेटी के बियाह में आइल नाच पार्टी के लवंडा के गाना इयाद आ गइल। मिसिरजी पूरा मिजाज से अलपलन– चारे महीनवा गरमी के दिनवा, टप–टप चुएला पसीनवा, बलम तनी बेना डोला द ना.....।

अभी उ गाना सुरूए कइलन कि बुझाइल कि कोई चिचियाता। मिसिरजी झटके से उठलन। फेनू कोई चिचियाइल। बुझाइल कि कोई केहू के गरदन दबावत होखे। आवाज कवनो मेहरारू के रहे। कवनो अनेत के आशंका से कांप गइले गोमती मिसिर। उनुका बुझाइल कि उनुकर बइठका के पिछही कवनो लंपट कवनो मेहरारू के साथे अनेत करता। जइसे उनुकर मए देह में आग लागल होखे। अगिया बैताल बनल उ उघारही पाछे का ओरि लपकलन– 'के ह? का भइल? डेरइह मत, पहुंचतानी।' एके छलांग में पाछे के दीवार फानि गइलन। बाकिर पाछे के हालत देखि के जइसे उनुका काठ मार देलस। सोझही नियाज पेंटर बेलागे गिरल रहन। मए देह एकदम करिया। मुंह एकदम लाल। होंठ के दूनो किनार से फेन नियन बहत रहे। उनुका बगल में बइठल उनुकर मेहरारू चिचिया–चिचिया के रोवत रही। गोमती मिसिर दउर के भीरी गइलन। नियाज के आंख बंद रहे बाकिर सांस तेज चलत रहे।

'का भइल? कइसे गिर गइले हां नियाज?' गोमती मिसिर अपना गमछा से हवा करे के कोसिस करे लगलन। बाकिर उनुकर मेहरारू के रोआई बंद होखे तब नू उ कुछो बतावस। बुरखा में मुंह लुकवले बस रोवत जास।

गोमती मिसिर खिसया के चिचियइले– 'अरे मूरख मेहरारू, खाली रोवबे करबू कि बतइबू का भइल?'

'का जाने का भइल ए बाबा। अभी त एकदमे नीक रहले हां। बगसर गइल रहीं जा बहिन के घरे। ओहिजा ले भोरही चल दिहनी जा। चट्टी प बस से उतर के जल्दी–जल्दी घरे आवत रहीं जा। अचक्के में इ नाच के गिर गइले। कुछ बोलतो नइखन। का जाने का भइल?' नियाज के मेहरारू मुँह खोलली।

गोमती मिसिर कुछ बोलतन तबे पीछे से रामचंदर पासवान दउगल पहुंचले। उनुका साथे तीन–चार गो अऊरी लोग। रामचंदर पासवान चिचियइलन– 'अरे बाबा, नियाज के लूक मरले बा। हाली से इनका के टांग के कहीं छांह में ले चलल जाअव।'

बाकिर छांह कहां? ना त कहीं पेड़ आ ना कवनो बंसवाड़। गोमती मिसिर के इयाद पड़ल– उनुका पिछवाड़ा कतना पेड़ रहे। खाली बड़हर आ गूलर के एक दरजन से जादा पेड़ रहन स। एगो बंसवाड़ भी रहे जवना के ओट में गइला पर दुपहरियो में सांझ के भरम होखो। जल्लाद मए पेड़ काटि के ले गइलन स। जब उनुका किछुओ ना बुझाइल त नियाज मियां के टप्पा अपना गोदी में उठा लिहले आ आपन बइठका का ओर भगलन। पीछे–पीछे नियाज के मेहरारू आ रामचंदर पासवान के साथे गांव के कुछ अउर लोग। तब ले दस–पन्द्रह अउर लोग जुट गइल रहे। गोमती मिसिर नियाज के अपना खटिया पर सुता दिहले। रामचंदर पासवान त काठ हो गइले। पियाज–लहसुन से भी दूर रहे वाला बाबा अपना खटिया प मुसलमान के........? गजबे बात बा ए भाई। बाबा के का हो गइल बा। तले गोमती मिसिर लपक के बाल्टी उठवले आ चापाकल के भीरी दउगले। रामचंदर पासवान के मामिला समझ में आ गइल। उ फान के चापाकल के भीरी पहुंचलन आ जोर–जोर से ओकरा के चलावे लगलन। बाल्टी में ठंडा पानी के लेके गोमती मिसिर जल्दी से नियाज के भीरी गइलन आ अपना लोटा से पानी उनुका माथा पर डाले लगलन। रामचंदर पासवान जल्दी से आपन गमछा पानी में डुबा के नियाज के देह पोंछे लगलन। दू–तीन बाल्टी पानी माथा प डलाइल तब जा के नियाज धीरे ले कहरलन। कले–कले उनुकर आंखि खुलल। तले कवनो लइका मोटरसाइकिल से जाके रेफरल अस्पताल के कंपाउडर साहेब के लेले आइल। उ एगो गोली नियाज के मुँह में डाल के पानी पियइलन। कुछ देर के बाद नियाज धीरे से खटिया पर उठ के बइठ गइलन। उनुकर मेहरारू के मुरझाइल मुँह प जइसे हरियरी लउटल। उ दूनो हाथ् जोड़ के गोमती मिसिर के सोझा खड़ा हो गइली– 'जान बचा दिहलीं बाबा। इ एहसान कइसे उतारब?'

'फालतू बात मत करऽ। नियाज के देख।' गोमती मिसिर के चेहरा प चैन दिखाई पड़े लागल रहे।

कंपाउडर साहब दू गो गोली नियाज के मेहरारू के हाथ में रखलन– 'आज छौ–छौ घंटा प इनका खिया दीहऽ। आ सांझ में इनकरा के ले के अस्पताल आ जइह। तब ले डाक्टर साहेब आ जइहन। आ हां, एक गिलास पानी में एक चम्मच चीनी आ चुटकी भर नीमक मिला के इनका के थोड़े–थोड़े देर प पियावत रहऽ।' कंपाउंडर साहेब गोमती मिसिर के गोड़ लाग के निकल गइलन।

नियाज के मुंह से अब जाके बोली निकलल– 'बड़ा करकस घाम रहल हा बाबा। अचक्के में लगुए कि माथा घूमता। मन कइल कि कहीं छांह में बइठ जाईं। बाकिर एगो पेड़ो ना लउकल। सोचनी के जल्दी–जल्दी चल के घरे पहुंच जाई तले आंखि का आगा लाल–पियर तारा नाचे लागल। एकरा बाद का भइल, हमरा कुछ इयाद नइखे।'

'कुछ ना भइल हा। अब चुपचाप घरे जा। आ इयाद क के सांझ के अस्पताल चल जइहऽ। अभी काम प मत जइहऽ। चुपचाप आराम कर भाई।' गोमती मिसिर सहारा दे के नियाज के उठवलन आ उनुकर मेहरारू के इसारा कइलन कि पकड़ के घरे ले जास।

'अभीए इ हाल बा त जेठ–असाढ़ में का होई?' सरयुग सिंह बइठका में रखल कुरसी प बइठ गइलन।

'मए पेड़–पौधा उजाड़ देब जा बाबू साहेब त एह में बइसाख–जेठ के कवन दोस बा?' रामचंदर पासवान मुसुका के कहलन।

'का कहताड़ मास्टर?' तनी ऊंच बोली में बोललन सरयुग सिंह।

'ठीके कहताड़न मास्टर। गरमी कहिया ना पड़त रहे सरयुग बाबू। बाकिर हमनी का भीरी ओकर तोड़ रहे। अब रउवे बताई जहां नियाज गिरले हा ओहिजा तीन साल पहिले केतना पेड़ रहे। अब ले उ पेड़ रहितन स त नियाज के इ हाल होइत?' गोमती मिसिर खटिया प बइठ गइलन।

'के काटता पेड़?' बाबू साहेब चिहुंकलन।

'जवन नवकी सड़किया बने वाली बिया ओकरा किनारे रउवो जमीन रहे ना बाबू साहेब। केकरा के बेचनी हा उ जमीन?' रामचंदर पासवान धीरे ले कहलन।

'उ पाटी पटना के ह। फोर लेन वाली सड़किया बन जाई त उ ओहिजे होटल खोली। बड़का होटल।' बाबू साहेब एगो गोड़ प दोसरका गोड़ रख के तरनियइलन।

'बाबू साहेब, होटल त जहिया खुली तहिया खुली। ओह जमीनिया पर के मए पेड़ कटा गइल। कायदा त ह कि सरकार के इजाजत ले के पेड़ काटे के चाही। बाकिर विभाग वाला सभ मिल–जुल के मलाई चाभ रहल बाड़न स। मए पेड़ काट के ससुरा बेच–खा गईलन स।' रामचंदर पासवान गमछा से आपन मुंह पोछलन।

बाबू साहेब के कवनो जवाब ना बुझाइल त उठ के बइठका से बाहर जाए लगलन। गोमती मिसिर उनुकर हाथ धइलन– 'बइठीं ना बाबू साहेब। पुदीना के सरबत घोरवावतानी। पी लेब त जाइब।' बाबू साहेब फेनू आ के कुरसी प बइठ गइलन।

'बाकिर एगो बात बा। बुझाता कि मिसिरजी के बइठका के रिवाज बदल गइल बा।' सुदर्शन यादव हँसलन।

'काहे हो? अइसन का देखला हा हमरा बइठका में?' गोमती मिसिर मुसुका के कहलन।

'अरे हम का देखब पूरा गांव देखता। रउवा खटिया पर मियां टोली के आदमी के सुतल देखि के मए गाँव चकाइल बा। बड़का बाबा मंदिर अगोरताड़न। उनुका पता चल जाए त एह खटिया में आग लगा दीहन।' सुदर्शन यादव के कहला के साथे सबलोग ठठा के हँसल।

'अरे अइसन कवनो बात नइखे। हमार त गुरु हवन मास्टर एहसान। उनुकर सीख हम जिनगी भर चुका ना सकब। अउर हां, इ त तुहू जानताड़ कि आदमी के जान बचावल दुनिया के सभसे बड़का धरम ह।' गोमती मिसिर बाल्टी में पुदीना के सरबत घोरे लगलन।

'अइसन बात बा त मए दुनिया के लोगन के जान बचावे खातिर भी आगे आईं बाबा।' रामचंदर पासवान चुनौटी से खैनी निकाल के हथेली प रगड़े सुरू कइलन। उनुका बात प बइठका में मए लोग चका के उनुका ओर देखे लागल। सरयू सिंह रामचंदर पासवान के देख के हंसलन– 'तहरा के हम चिन्हत नइखी मास्टर? कौलेज में पहुंचते पाटी–पोलटिक्स सुरू क दिहले रहलऽ। नोकरी लगला के बादो तहार मन नइखे मानत। अरे, साफ–साफ बताव ना, का कहल चाहताड़?'

जवाब गोमती मिसिर दिहलें– 'चार लेन वाली सड़क बनतिया। हमनी के त ठीके लागता। बाकिर इ सड़क बनावे खातिर गांवे के मए बड़हर के पेड़ काट लेब लोग? सीवाला के पीछे एगो बंसवाड़ी नइखे बांचल। सरकार के कहनाम बा कि एगो पेड़ कटाई त तीन गो पौधा रोपाई। बाकिर इ कइसे रोपाता आ कइसे खत्तम हो जाता, इहो सोझहीं लउकता।'

'का ए बाबा, रउवो बुझउवले बुझावतानी?' सुदर्शन यादव होंठ के नीचे खइनी दबावत सवाल पूछलें।

'एह में बुझे के का बा मरदे? पहिले सड़क बनावे खातिर पेड़ काटल लोग। अब उ सड़क के किनारे के जमीन सब सोना हो गइली स। केहू होटल बनववे खातिर जमीन खरीदता त केहू ...... उ का दो कहाला मरदे.... हं माल बनववे खातिर जमीन खरीदता। आ जमीन खरीद के ओह पर के मए पेड़ काट देता लोग।'

'माल ना ए रामचंदर चाचा, मॉल कहाला उ। उ एगो बाजारे होखेला ससुरा। अबकी पटना गइल रहनी त देखनी हा। मने ओह में जइब नू त भुला जइबऽ।' नरेन्दर मिस्त्री के लइका रामचंदर पासवान के टोकलस।

'भइल बाड़े तू ज्ञानी? भागताड़े कि ना एहिजा ले?' रामचंदर पासवान हंसलन।

'भाई इ बतकुचन के माने–मतलब ना बुझाइल अब ले?' बाबू साहेब कुरसी प से उठलन।

'माने मतलब का बाबू साहेब? कुछ अइसन उपाय लगावल जाओ कि पेड़ के कटल रुको।' गोमती मिसिर गंभीर भइले।

'काहे माथा खराब कइले बानी ए बाबा। फालतू पेड़ ना कटी त बिकास कइसे होई? गंउवा जहां बा ओहिजे रहि जाई। इ कवनो बात बा? चल लोगिन मरदे। दुपहरिया भइल। खा–पी के एकाध नींद टानल जाओ।' कहत–कहत बाबू साहेब बइठका से बाहर निकल गईले। पीछे–पीछे मए लोग एक–एक करके निकलल। बंचलन लोग खाली दू गो– गोमती मिसिर आ रामचंदर पासवान।

रामचंदर पासवान हँसलन– 'छोड़ीं बाबा। आन्हरन के गांव में ऐनक ना बेचे के चाहीं। इ कवनो ना बुझिहन स। अभी जेकर–जेकर जमीन सड़क के किनारे पड़ल बिया उ राजा बनके घूमता। हमरो इस्कुल जाए के बा। गोड लागिला।' कहत रामचंदर पासवान निकल गइलन। बाकिर गोमती मिसिर बइठले रह गइलन। उ बइठका छोड़ के खाहू खातिर घरे ना गईलन। भतीजा दू हाली बोलावे आईल बाकिर उ कवनो बहाना बना के टरका दिहलन। उनुकर माथा बड़ा तेज काम करत रहे। उनुका इयाद पड़ल मास्टर एहसान अहमद के बात– 'राख के भीतरो आग लुकाइल रहेला। बाकिर उ आग के पावे खातिर राख के खोदे के पड़ेला।' उ तय कइलन कि उहो राख खोदिहन। गांव के पेड़न के बचावे के लड़ाई त लड़ही के पड़ी। बाकिर कइसे? सोचत–सोचत उ खटिया पर पसर गइले आ कब उनुकरा नींद आ गइल पता ना चलल।

अचक्के में हल्ला–गुल्ला से उनुकर नींद टूटल। उ अचकचा के उठलन। सोझा अखाड़ा में गांव के लइका दाँव–पेच में जुटल रहन स। उ थगली से मोबाइल फोन निकाल के ओकर बटन टिपले– अरे मरदे। पतो ना चलल आ सांझ के पाँच बज गइल। उ अखाड़ा के किनारे जा के लइकन के दाँव पेच देखे लगलन। अचक्के में उ खड़ा भइलन आ जोर–जोर से थपड़ी बजावे लगलन। अखाड़ा में दंड बइठकी लगावत मए लइका हड़बड़ा के उनुका ओर देखलन स– 'का भइल बाबा?'

'सभ लोग तनी हाथ–मुँह धो के बइठका में आव लोग।' गोमती मिसिर कहलन आ अपने बइठका के ओर

चल देलन। पाछे–पाछे मए लइका। कवनो के कुछ ना बुझाए। आखिर बाबा के ओहनी से कवन काम पड़ गइल ए भाई। बाबा छोट–छोट डेग धरत आपन बइठका में पहुंचलन आ धीरे से कुरसी प बइठ गइलन। पाछे–पाछे मए लइका चुपचाप खड़ा हो गइलन स। बाबा मए लइकन के खटिया प बइठे के इसारा कइलन। बाकिर कवनो के बइठे के हिम्मत ना पड़ल। बाबा के चुप्पी कवनो खास बात का ओर इसारा करत रहे। बभनटोली के धनंजय तिवारी धीरे से कहले– 'कवनो खास बात बा का बाबा? अइसे त अखाडा के बीच से रउवा केहू के ना बोलाइला।' बाबा गमछा से मुंह पोंछले– 'देख बाबू धनंजय, पहलवानी खाली अखाड़ा में करे के चीज ना ह। कई बार पहलवानी सड़को पर करे के पड़ेला।'

'माने बाबा?' प्रताप सिंह चका के पूछलन।

'अरे पहलवानी काहे सीखे लऽ प्रताप? एही खातिर नू कि आपन ताकत के ठीक–ठीक इस्तेमाल कइल जाओ।' बाबा के चेहरा एकदम गंभीर रहे।

'हं। से त सहिए बात बा बाबा।' प्रताप सिंह धीरे से जवाब दिहलें।

'त अब अपनो गाँव खातिर ताकत के सही–सही इस्तेमाल के बेरा आ गइल बा। एह समय जे खाली अखाड़ा में दांव–पेंच आजमावत रही ओकरा के सही पहलवान नइखे कहल जा सकत।'

'तनी खोल के बात बताई बाबा।' अबकी मुख्तार मुँह खोललन।

'देख लोग। इ बात त सभके मालूम बा कि बगसर से पटना के बीच बने वाली चार लेन वाली सड़क अपनो गाँव से होखे निकलतिया।' कह के बाबा थोड़िका देर खातिर चुप हो गइलन आ सभकर चेहरा देखलन। फिर कुरसी छोड़ के खड़ा भइलन आ तनी ऊँच आवाज में कहलन– 'इ सड़क खातिर दनादन पेड़न के काटल जा रहल बा। काल्ह से इ काम अउर तेज होखे वाला बा। पेड़ काटे के मसीन मँगवावल गईल बाड़ी स। मजूरा भी बाहर से आइल बाड़े स। सभन का मीडिल इस्कुल में ठहरावल गईल बा।' इ कह के उ बगले मे धईल लोटा के पानी गला में ढरकइलन आ फिर कुरसी प बइठ गइलन।

'बाकिर हम त सुननी हा कि एगो पेड़ कटला प तीन गो पौधा भी लगावल जाता।' मुख्तार गौर से बाबा के चेहरा देखलन।

'हं। ठीक कहताड़। बाकिर एकरा से पहिले सरकार के लगावल पौधन के का हाल भइल बा इहो जाके देख लऽ।'

'त का हुकूम बा बाबा?' प्रताप सिंह कहलन।

'हुकुम ना एगो सुझाव बा। अगर सभ कोई के ठीक लागो त ओकरा के सुरू कइल जाव।' बाबा मुस्करइलन।

'रउवा खाली बोली ना बाबा।' मुख्तार आपन दूनो हाथ के सीना प बान्हि लिहले।

'त काल्हू भोर से हमनी का गांव के लोगन के जुटा के पेड़ बचावे के काम में लागे के होई। एक–एक आदमी कम से कम दस आदमी के लेके पहुंचे।' एकरा बाद बाबा सभ लइकन के इसारा से अपना भीरी बोलइलन आ एकदम महीन बोली में कुछ समझावे लगलन।

अगिला दिन भोरही से मचल कोहराम। गांव में जहां से सड़क निकले वाली रहे ओहिजा अजीबे नजारा रहे। एक–एक पेड़ से दस–दस गो लइका सट के खड़ा रहलन स। सोझा आरी आ मसीन के लेके पहुंचल मए मजूरा आ अफसर चुपचाप खड़ा रहन लोग। पेड़ से सटल मए लइका चिचियात रहन स– 'पेड़ काटे के पहिले हमनी का देह काटे के होई।' साथ–साथ मए लइका जोर–जोर से मइया के गीत गावत रहन स– 'नीमिया के डांढ़ि मइया लावेली झुलनवा......................।' लइकन के साथे गोमती मिसिर एगो बड़हर के पेड़ के भर अंकवारी धइ के खड़ा रहन।

दिशा–फिराकित खातिर निकलल लोग पहिले त देख के चका गइल। इ लइका कुल्हि कवन तमासा खड़ा कइलन स? बाकिर जब बात के जानकारी भइल तऽ उहो लोग लइकन का साथे पेड़ से सट के खड़ा हो गइल। दुपहरिया होखत–होखत त मए गाँव पेड़ से सट गइल रहे। बगसर से आईल कवनो अफसर अपना ऊपर के अफसर के फोन प बतावत रहे– 'सर, पेड़ काटल संभव नइखे। मए गँउवे पेड़ से सट के खड़ा हो गइल बा सर। जी–जी सर....................। एकदम सही कहनी हा.................। एकदम चिपको आन्दोलन नियन। .... ना–ना सर। एकरा के इ लोग पहलवानी आन्दोलन कहता लोग। ••

❑ फ्लैट नं. 301, निरंजन अपार्टमेंट,
आकाशवाणी मार्ग, खाजपुरा, बेली रोड,
पटना, बिहार।
मो०– 09934994603

'ईआ'

बिम्मी कुँवर सिंह

आजु भोरहीं से ईआ के जवन सांस उखड़ल त थमें के ना वें ना लेत रहे, दुपहरिया से सांझ आ अब रात गहिरात रहे। जब कवनों अलम ना मिलल त रातें रात लाली उनकरा के सहर के बड़का अस्पताल में भरती करवा दिहलीं। डाक्टर कहले जे फेफड़ा में संक्रमण बेसी भ गइल बा से आईसीयू में कुछ दिन रहिहें।

एकलौता बेटा आ पतोह के कार एक्सीडेंट में मृत्यु के बाद दू गो पोती आ दू गो पोता में से अब बस लाली ही बचल बाड़ी भारत में ईआ के संगे।

बुला परेम में धोखा मिलला से उ मने मन ठान लेहली जे अब बिआह ना करब आ बस नोकरी करम आ ईआ के सेवा सुसुक्ता में जिनगी बिता देम।

तीन दिन बाद जब ईआ आईसीयू से बहरी अइली त लाली के देख के चिंहा चिंहा के रोवें लगली......... "अहीं हो दादा मटिलगना कुल हमरा के कवना असमसान घाट में बीग देले रहुअन सन, केहूं बोले बतिआवे वाला ना रहे!"श

–"ईआ ओजुग आराम करे खातिर जाइल जाला, बोले बतिआवे ना, उ आईसीयू कहाला।" मुस्किआत ईआ के कपार प हाथ फेंरत लाली बोलली।

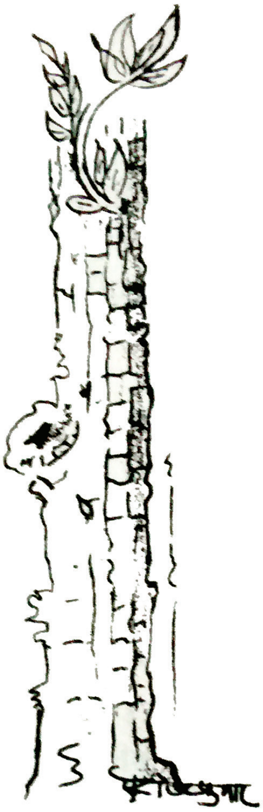

–"मुँह ना मारों अइसन आरामगाह के, कुल मुँह तोप तोप के सुतल रहले सन, बिना बोलले हमार मुँह आ पेट दुखाए लागल रहे।" रोआंसे मुँह बना के ईआ बोलली

–"ईआ तू जरिए से बड़बोला रहलूं कि बिआह के बाद अइसन हो गइलू।" ईआ के चुटकी लेत लाली बोलली।

–"अरे बुचिआ लइकाइए से हमनी चार गो सखी रहनीं जा आ हमनी के हँसे आ बोले से गाँव घर के लोग परसान रहत रहे।" गरब से मुस्किआत ईआ बोलली, ओह समय उनकरे गाल के झुर्रीअन में खूब सुन्दर चुन्नट बनल रहे ।

अभी ईआ पोती के बतकही चलते रहे तले डाक्टर आ के लाली के एकोरा बोला के बतवलन जे फेफड़ा में टी बी हो गइल बा आ नब्बे परसेंट फेफड़ा खतमें बा, एही से एहिजा राख के पइसा जियान कइला में चालाकी नइखे, इनकरा के घरे ले जा के देख–रेख करीं, जेतना दिन बाचें के होखी त बांचिये जइहे।

लाली डाक्टर के बात समझ गइली आ ईआ के लेके अपना घरे चल अइली। पढ़े में अव्वल लाली ब्लाक में तहसीलदार रहली नोकरी बाहर भीतरी के व्यस्तता वाला रहे से एगो कहारिन के बारह साल के लइकी चंदा के अपना संगही रखले रहली जे ईआ के देख रेख आ सर समान सरिहावल, खाय पानी मय कर देत रहे। ईआ ओकरा के इचको पसन्न ना करत रहली। बाकिर लाली के अइसन नोकरी रहे त मन मार के रहस आ जब ना तब ओकरा के झपिलावत रहली।

लाली आज भोरहीं उठ के अपना छुट्टी के अर्जी लिखत रहली, आ मने मन इहों सोचत रहली जे कुछो दिन आराम भी हो जाई आ ईआ के संगे भी मन भर रह लेब।

—"ईआ हो कुछु अपना बारें में बताव ना, कइसन रहे तहार बालपन इसकूल, तहार माई बाप, भाई बहिन, ससुराल। अपना पढ़ाई लिखाई में हम अतना बाझल रह गइनी कि कबो मोके ना लागल कि तहरा से पूछी कि तहार त कवनो अतीत होखी, बताव ना ईआ।" लाली ईआ के खोदिआवे लगगी।

ईआ के खोखी रह रह के सुर पकड़ लेत रहे, अदरक का मध के रस लाली उनकरा के पिआ के फेर गते से सुता देली।

ईआ चुलबुल बबुनी लेखा किलक के बोलली बालपन बहुते मस्त मलंग रहे, बहेंगवा लेखा हमनी काहे घर से हो घरे भागत फिरीं जा। निगचे के कवनो गाँव, कवनो बगइचा कवनो बधार हमनी के रौंदले से बाँचल ना होखी। एही के बेजाहि फाइदा कई बेर बभनटोली आ बबुआन के छौंड़वन के मिल जात रहे।

—अरे ! त निकाल के चप्पल मारत काहें ना रहलू ईआ? खीसिन दाँत पीस के बोलली लाली।

बोलत बोलत आ हांफत हाफंत हँसें के कोसिस करत ईआ बोलली 'उ जमाना में चप्पल निकारे प अगिला दिन हमनी के लासे निकरत रहें बुचिआ, क जानी अइसन करे के कोसिस में फेर मुँह ना खोल पवली जा'

लाली खीसिन अपना बायाँ हथेली पर दूसरा हाथ से एक मुक्का मार के सिट्ट बोल के उठ के बहरी चल गइली।

बाहर तरकारी वाला ठेला डगरावत आ गइल रहे। लाली ईआ खातिर डाक्टर के बतावत फल आ तरकारी कीने लगली।

फेर फ्रीज खोल के देखली त दूध अंडा ब्रेड भी खत्म रहे, उ पायजामा टी—शर्ट में ही चौराहा प के छोटहन दुकान प चल गइली आ मने मन इहों सोचत जात रहली जे बड़कन कुल नन्हकन प केतना अत्याचार कइले बाड़न सन। सोचत सोचत उनकर मन खटास से भर गइल।

साँझ हो गइल रहे मोसकिल से एक घंटा पहीले त ईआ के आँख लागल रहे, त उ गोधूलि होखला के बाबजूद ईआ के जगवली ना आ कम्प्यूटर खोल के आपन कुछ सरकारी काम काज निपटावे लगली।

रात कवनो आठ बजे ईआ के नींन खुलल त उ लाली के गोहरावे लगली। 'ललिआ अरे बुची ललिआ'

लाली आपन काम छोड़ के ईआ भीरी आ के बइठ गइली आ दूध रोटी के मसीन में पीस के रखले रहली उ खिआवे खातिर ज्यों उठली, ईआ सड़ाक से हाथ मार के कटोरी भूइंया बीग देली ...

का भइल ईआ! 'अतना खीस काहें हो' लाली चिहा के पुछली

आ चंदा से कहली जे हई दूध रोटी साफ कइ द....!'

—"तोहरा के हमरा बारे में नू जाने के रहे, त काहे दोसर दोसर काम करे लगलूं।" ईआ मुँह फुला के बोलली

—अरे ईआ हो अब त हमनी भीरी खूब टाइम बा खूब बतिआवे के नू, महीना दिन के छुट्टी ले ले बानी, बाकिर खइबू ना त नीक कइसे होखबू! बोलऽ! ईआ के पुचकारत दुलारत लाली बोलली

—'ना रे बचिआ हम अब बेसी दिन के मेहमान नइखी नू, अब हमरा के तोर ददवां सुर्तवाला के जामल अपना भीरी बोलावत बा नू, बदला लीहीं हमरा से।' ईआ बेचारा लेखा बोलली आ फेर खिड़की के बहरी अंगुरी देखा के बोले लगली...देखऽ हऊं देखऽ ओहिजा ठाढ़ बा आ हमरा के तरेरतो बा तोर ददवा, आही हो दादा हमरो के जराई का रे बुचिआ?' ़

—ईआ थर थर कांपे लगली। दउर के लाली आ चंदा ईआ के कम्मर ओढ़वली जा। लाली हाली हाली गरम पानी के थैली ले आ के ईआ के पीठ पेट, हाथ गोड़ के सेंकाई करे लगली, फेर चंदा से कहली जे हरदी गुड़ के दूध में औंटा के ले आव, फेर चम्मच से गते गते ईआ के उ दूध पिअवली। तनि मनि आराम मिलल त ईआ सूत गइली।

उनकरा संगही लाली भी सट के सूत गइल रहली।

भोरे तीन बजे ईआ खूब राग में थपरी पीट पीट के रघुपति राघव राजा राम गावत रहली, कुछ मिनट में लाली भी जाग गइली आ ईआ के माथा प खूब मन से चुम्मा दे के बोलली। "गुड मार्निंग ईआ।"

ईआ आपन पोपला मुँह खोल के हँस देली

ईआ फेर लाली से आपन कहनी कहें सुरू कइली

बुचिया हमनी के पांच गो बहिन रहनी जा, जेमे हम सबसे छोट रहनी, हमर बाबूजी सहर में राज मिस्त्री रहुअन आ माई आ दूनो बड़की दीदिआ गाँवे में बड़कन के घरे आ पइसा कौड़ी वाला साहूकारन किहाँ चउका बासन के काम करत रहे। हमनीं तीनों बहिन घर में रहीं जा। जब हमरा से बड़ दूनो बहिन घर के काम काज

ओरिआवे में बाझल रहस लोग त हम अपना सखी लोग संगे गाँव में खेले भाग जात रहीं।

जब दीदिआ कुल माई से हमार लाई लगा देली सन तब माई अपना संगे हमरो के ले के जाये लागल। माई बरतन माजे आ हम घर दुआर छत दलान में घूमत फीरीं। एक बेर बभन टोला के महाराज जी के बेटा हमरा के पीठैंया चढ़ा के दउरावस आ फेर भुसवल के घर में पटक के हमरा भीरी सूत के खूब नीमन नीमन कहनी सुनावस, आ कहस कि इहों एगो खेला होखे ला...हम कहनी सुने में एकदम मस्त हो जात रही आ उ हमार मय देह सुघरावस, बाकिर हम त उनकर कहानी सुने में बाझल रहत रहनी आ जब माई चउका बासन कर के जाए लागे त गोहरवला प हम भागे लागीं त उ हमरा के अपना अकंवारी में धई के खूब नीमन से बरिज देस कि कहिहऽ मत कि कहवाँ रहलू ह, ठीक नू....ना त कहनी ना सुनाइब आ फोफी भी खाए के ना देब...लइकाइ बुधी बुला फोफी चकलेट के ललचे मुँह ना खोले...

महाराज जी के बेटा हमरा सखि लोग संगे भी इ खेल खेलत रहुअन...इ बात जब सांझि खा हम चारो सखी दिशा मैदान खातिर गइनी जा त कुसुमी सखी के का जाने कवना धुने बक देली कि दहीजरा फलना के पुतवा कहनी सुना सुना के बड़ा तंग करे ला हो सखी...हमनी तीनो एके संगे बोलनी जा तोहरो संगे, तोहरो संगे...

कुछ साल बाद माई के बाबूजी के लछन में बदलाव लउके लागल, माई कुफुत में रहे वाली मेहरारू ना रहे, जब ओकरा के पुख्ता जानकारी हो गइल कि बाबूजी सहर में कवनो मजदूरिन से बिआह कइ लेहलन, त माई दू साल के तर ऊपरी हमनी पांचों बहिन के बिआह कइ दिहलस। आ अपने एगो टेम्पो के डराइबर संगे भाग के बिआह कइ लेलस। एह तरे हमनी पांचों बहिन के नइहर छूट गइल। सँग–सँग माइयो–बाप।

–"ईआ राउर माई का ओह डाइवर संगे खुस रहली?" लाली आपन जिग्यासा के बहरी निकलली

–"का जाने रे बुचिआ, हमनी बहिन त अपना अपना ससुरा आ गइल रहनी जा। कवनों बहिन खुसहाल रहे त कवनो के एकदमे फटही हाल, केहूं केकरो से फेर मिलल ना, त माई के हाल केकरा से पता चलित! माइयो त हमनीं के हाल समाचार ना लिहलस।" ईआ आँख के कोर प जमा पानी के आंचर से पोछत बोलली

अउर राउर ससुरा के लोग..!! आधा सुदा वाक्य पूछत लाली ईआ के तिकवत रहली

हम जब ससुरा गइनी त हमार मनसेधू हमरा से बुला चार पाँच बरिस छोट रहुअन, भर दिन लट्टू नचावस, पतंग उड़ावस आ खा पी के अपना माई के कोरा में सूत रहस त बिआह के छ बरिस बाद जब हमार मलिकार हमरा के आपन मेहरारू बूझले तब जा के हम महाराज जी के बेटा के खेल के माने बूझनी कि इ का होला।

लाली के हँसी भी छूटल आ खीस बहुत बरल बाकिर उ ऐह बेर ईआ के रोकल टोकल ना चाहत रहली, ईआ अपना सुर में कहत जात रहली...

हमार ससुर पाँच छ बिगहा खेत प अनाज उपजावत रहुअन त चारों बेटा के गाँव ही से पढ़ा लिखा के छोट बड़ नोकरी दिवा देले रहुअन। तहार दादा गाँव के नगीचे अस्पताल में कमपोडर में भर्ती भ गइले। डाकडर ना आवे त रोगियों के देखत रहुअन त गांवे उनकरा के सभ केहू डाकडर साहेब बोलत रहे।

–"तोहार दादा जब हमरा के मेहरारू माने जाने लगले त ओकरा दूइए बरिस बाद तहार पापा के जनम भइल।" इ बात कहला के बाद ईआ के आँख में अजब तरह के उछाह चमकते रहे ...

–"रौरा फेमिली प्लानिंग करत रहनी! अरे हमार मतलब कि एकहिं गो बेटा प काहें बन्द कर देनी," ईआ के चुटकी लेत लाली बोलली

ना रे बुचिआ, तोहर दादा दवाई बीरो के काम करत रहुअन त बुला हमरा के दवाई खिआ देत होइहे भा अपने कवनो बेवस्था करत होखिहें एही से बबुआ के पाँच बरिस के होखला के बाद तक हमरा के कवनो बाल बच्चा ना भइल, ओकरा बाद त उ भवहिए में अझुरायल रह गइल त हमरा से बोल बतिआवल बन्दे रहे' ईआ एक साँस में इ बात कह गइली।

भवह संगे! लाली चिहा के पुछली

तहरा दादा के अपना छोट भाई के मेहरारू संगे नाजायज सम्बंध रहे, उ सबकरा सोझा त भैया कहस बाकिर हम क बेर बहुत बाऊर हाल में दूनो बेकत के पकड़ लेले रहुई....जब हम टोका टाकी करी त हमरा के खूब मारे लागस ...जब कपार फाट जात रहे त टीन्चर के शीशी कपार प उझील देस...अस्पताल में कम्पाउंड रहुअन, खूब मरहम पट्टी टीन्चर सेभलान चोरा चोरा के घरे राखत रहुअन। नोकरी लगला के बाद उनकर आचरण नीक ना रह गइल रहे...

घरहू में मरीज देख के, सूई पानी दे के पइसा कमा लेस आ मय पइसा दूनो गोतनी अपने मे बाँट लेत

रहुईं जा...बड़की छोटकी दूनो गोतनी सगी बहिन रहली जा। तनीमनी माल पानी तोहार दादा अपना महतारी के भी दे देस त उहों ओहीं लोग के पछपात करत रहली।

–"ईआ फेर पापा जी ओइसन महौल में कइसे फौज में चल गइनी।" लाली फेर सवाल दाग देली

तोहार पापा जब पांच बरिस के भइलन त छोटका देवर जवन मलेटरी में सिपाही रहुअन उ अपना संगे उनकरा के सहर में पढ़ावें खातिर ले गइलन। ओह जमाना में समिलात परिवार में कमासुख बेटा मय घर के भार उठावत रहे, केहू आपन आपन ना सोचत रहे, एही चीज के हमरा बड़हन फाइदा भइल कि भतार से जेतने दुख हरानी पवनी ओतने पूतवा आ ओकरा बाल बच्चन से सुख आजादी मिलल रे बुचिआ' ईआ मुस्किआत इ बात कहलीं

लाली बीच में टोकली– 'कवन देवर जिनकर मेहरारू दादा संगे!!'

–'हँ उहें।' ईआ हुकारी पार के फेर आगे सुरू कइली

दुसरकी गोतनी से पता चलत रहे कि आज तोहार दादा बड़की गोतनी के चानी के हँसली बनववले ह त छोटकि गोतनी के छागल बनल बा। असहीं क बेर उ लोग तहरा दादा के फुसला बहिला के गहना गुरिआ बनवावत रहली जा।

–"ईआ राउर देवर जब छुट्टी में घरे आवस त उनकरा सक ना होखे अपना मेहरारू आ भाई प।" लाली ईआ के बीचहिं में रोक के आपन खदकत जिग्यासा के उझील देली

–अरे बुचिआ अरिया चोर परोसिया छिनार ना पकड़ाय, बुझले। जब देवर आवस त तोर दादा रात के डिप्टी करे लागस आ भर दिन मरीज देखस। आ गोतनी राम सती सवितरी लेखा सजधज के देवर प चूटामाटा लेखा सटल रहे। हम अपना बबुआ में बाझ जात रहनी।

लमहर साँस लेके लाली बोलली "आछा, फेर ओकरा बाद ईआ?"

–फेर का! छुट्टी बिता के जब देवर आ हमार बबुआ चल जास लोग अपना डिप्टी प त ओंजुगा उहे पुरान छिछोरापन सुरू हो जात रहे, हमहूँ मेहरारू के जीऊ रहनी, तड़फड़ात रहुनी, कचकचात रहुइ.. कइसे बदला लीही...तले ईयाद पड़ल की हमर ममेरा भाई सेन्हफोरवा चोर ह...ओकरा के खबर भेज के बोलववनी आ मय हाल ओकरा के बता देनी दूनो गोतनी के कोठरी भी चिन्हवा दीहनी, सेन्ह केने से फोरे के बा आ कवना दिने फोराई, सब बात सेट हो गइल...

सेन्ह फोड़े खातिर जब उ आंगन में कूदले तले छोटकी गोतनी उनकरा के देख लिहलस आ लागल चिचिआ चिचिआ के सभकरा के जगावें, तोहार दादा ओह दिन घरहीं में सूतल रहलन, उ ओकरा के अंगने में जांत के दू तीन फैंट मरलन बस ओतने में उ डेरा के हमार नांव ले लिहलस आ इहो बता देहिलस कि काहे खातिर आइल बा।

ओकरा के मन भर पीटला के बाद घर से निकाल के दूनो गोतनी आ हमार सँवाग हमरा के मूअली के मार मरले जा...हमार हाथ गोड़ के कई गो टुकी हो गइल रहे....मेनसेदू से सुख कम बाकिर दुख अथाह मिलल रहे!'...

ईआ कुछ घरी रूक के सिसके लगली, लाली उनकरा के कस के अंकवारि में लुकवा ले ली , जइसे छोटहन कवनो बच्चा के जब नींन में डर लागे ला आ उ सिंहके ला त माई अपना गोदी में लुकवा ले ले।

कुछ घरी बाद ईआ फेर सुरू कइली

सरकारी कम्पाउंडर रहुअन तोहार दादा, मुअतन त पेनसन त मेहरारूए के मिलीत, अभी जिअते में त एगो फूटल कउड़ी हाथ में नइखे भेंटात, आ मार लात अलगा से मिलत बा। प्रतिसोध के आग केतना बाउर होखेला इ हम आज बूझ पाइनले लाली।

ईआ कुछ घरी एकटके खिड़की से आसमान ओरी ताकत रहली, जइसे बुझाइल जे दादा के भीरी जाए से पहिले आपन गलती के स्वीकार करत होखस. ..आसमान के पूरूब ओरी चमकीला अँजोरिआ होखे लागल रहे, किरिन फूटे के तइयारी में रहे। कबो कबो मुरूगा भी बांग देत रहे, कउआ के काँव काँव भी सुनाइ परे लागल रहे...

ईआ फेर कहनी के तार जोड़ के कहे सुरू कइली

ओह दिन उनकर नाइट डिउटी रहे। हम मनही मने मय मनसउदा बना ले ले रहनी, आ इहो सोचले रहनी जे एह बेर केहू से मदद के गोहार ना लगाइब। नीक बाउर सोचे खातिर अब दिमाग ना रहे, बस बदला बदला इहे बात दिनभर दिमाग में गूँजत रहे।

सब केहूं खा पी के अंगना में आपन बिछावन लगा के सूत गइल रहे लोग। मध्य रात के हम गते गते उठ के किरासन तेल के छोरा आ दिआसलाई ले के अस्पताल के ओरी चल देनी मोसकिल से दू कोस प अस्पताल रहे। अन्हेरिया रात में बिना डर भय के हम मेड़े मेड़े चलत जात रहनी। ओइजा चहुँप के

मय जायजा लेहनी त दू चार गो कुकुर बहरी सूतल रहुअन सन। बाकिर एकहूं मरीज अस्पताल में ना रहे। अमरजेन्सी वारड के बगल के कोठारी में तहार दादा उंघत रहुअन, हम बहरी से उनकर केवाड़ी बन करिके, अस्पताल के पिछवाड़ा में चल गइनी आ तीन चार बोलत किरासन तेल खिड़की में से फेक के दियासलाई बार के खिड़की में फेक दिहनी आ अगिआ बैताल लेखा ओजुगा से भागल घरे चल अइनी, हमरा ओह समय इ होस ना रहे जे रूक के देखी कि जवन काम कइनी ह ओह काम में सम्पूर्णता मिलल ह कि ना। हमरा देह प भूत, दिमाग प खून आ मन में डर समाइल रहे।

घर में घुसला के बाद सीधे अँगना में चहुँपनी, आ आँगन में सूतल छोटकी के करेजा प बइठ के तकिया ले मुँह तबले जँतले रहनी जबले उनकर देह बरफ ना भ गइल। आ फेर जाके अपना कोठरी में चुपचाप सूत गइनी।

अस्पताल में आग अतना बरियार लागल रहे जे सब केहू इहे बूझल कि मलिकार खुदे छोटकी के मुआ के अपने आग लगा लिहले हऽ ...

ईआ के देह फेर से थर थर काँपत रहे, उ एक टक आसमान ओरी देखत रहली, लालीयो उनकरा के दूनो हाथे थमले आसमान ओरी देख के सिसकत रहली...

ईआ के थरथरी बन्द भ गइल रहे आ देह बरफ, लाली बूझ गइल रहली जे ईआ मन से हलुक होके ऐह झउँझार अदालती दाँवपेंच भरल जिनगी से मुक्त हो गइल बाड़ी, उ फेर ईआ के माथा प करेड़ चुम्मा लिहली...

चंदा के मदद से लाली ईआ के हलुक फुलुक देह के उठा के खाली पड़ल चउकी प सुतवली आ डाक्टर भीरी फोन कइला के बाद बिदेस में बसल भाई बहिन लोग किहाँ फोन मिलावे लगली।

पता

Mrs Bimmi Singh DD 14, TNPHC flats, Police quarters, Melakottaiyur , Chennai, Tamilnadu 600127

Mobile number – 8160492100

अशोक कुमार तिवारी के गीत

दुनिया हऽ भूल-भुलइया, सुनऽ रे भाई,
जिनिगी हऽ भूल-भुलइया

कहीं बाटे काँट, पड़ल कहीं पथरा,
सुगम कहां एह जिनिगी के जतरा
दुखवा के सागर कबो सुख के तलइया
जिनिगी हऽ भूल-भुलइया

कबहूँ हँसावेले, कबहूँ रोवावे,
किसिम-किसिम नित खेल-खेलावे
एके लेखा रहे नाहीं हरदम समइया
जिनिगी हऽ भूल-भुलइया

छावे निरास के कबहूँ कुहासा,
किरिन अस झाँके सुरुज कबो आश
असहीं चलत रहे, होला धूप-छँइया
जिनिगी हऽ भूल-भुलइया

... सूर्यभानपुर, बलिया

कुँवर सिंह इन्टर कालेज में ''पाती'' मंच के काव्यगोष्ठी (मई 2024)

श्री अरविन्द दुबे, शशि प्रेमदेव, नवचन्द्र तिवारी, अशोक द्विवेदी, अजित दुबे, विजय मिश्र, हीरालाल हीरा, कौशलेन्द्र सिन्हा, शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

अखबारी कोलाज

Email : bedagkesari2020@gmail.com

5 बिजनौर, गुरुवार, 30 मई 2024 आसपास

कुंवर सिंह इंटर कॉलेज में काव्य गोष्ठी में सुनाई गई एक से बढ़कर एक रचनाएं

बलिया, शशिकांत ओझा, बेदाग केसरी। कुंवर सिंह इंटर कॉलेज में विश्व भोजपुरी सम्मेलन की बलिया इकाई द्वारा एक स्वागत समारोह और काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजीत दुबे को माला पहनाकर स्वागत किया गया। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि बलिया की माटी उर्वरा और प्रतिभाओं की खान रही है। राजनीति, साहित्य और संस्कृति के उन्नयन में यहां के लोगों का राष्ट्रीय योगदान रहा है। यहां के अनेक साहित्यकार व कवि राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। उन्ही में यहां के डॉ अशोक द्विवेदी भी हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

काव्य गोष्ठी का शुभारंभ शिवजी पांडेय रसराज की सरस्वती वंदना और काव्य पाठ से हुआ। तत्पश्चात डॉ नवचंद्र तिवारी, हीरालाल हीरा, शंकर शरण काफिर, डॉ शशी प्रेमदेव, विजय मिश्र, फतेहचंद बेचैन एवं भोजपुरी के लब्ध प्रतिष्ठित कवि, लेखक, समीक्षक तथा पाती के यशस्वी संपादक डॉ अशोक द्विवेदी ने अपने काव्य पाठ से ... को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिय... व साहित्यकार डॉ नवचंद्र ति... उनके जन्मदिन पर मिठाई ... बधाइयां दी गई। इस अवसर ... एयरपोर्ट अथॉरिटी के पूर्व अधि...

उर्वरा, प्रतिभाओंकी खान रही है बलिया की माटी

बलिया। कुंवर सिंह इंटर कालेज में विश्व भोजपुरी सम्मेलन की बलिया इकाई द्वारा एक स्वागत समारोह और काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत दुबे को माला पहनाकर स्वागत किया गया। उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि बलिया की माटी उर्वरा और प्रतिभाओं की खान रही है। राजनीति, साहित्य और सरंकृति के उन्नयन में यहां के लोगों का राष्ट्रीय योगदान रहा है। यहां के अनेक साहित्यकार व कवि राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। उन्ही में यहां के डा अशोक द्विवेदी भी हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है। काव्य गोष्ठी का शुभारंभ शिवजी पांडेय रसराज की सरस्वती वंदना और काव्य पाठ से हुआ। तत्पश्चात डा. नवचंद्र तिवारी, हीरालाल हीरा, शंकर शरण काफिर, डा शशी प्रेमदेव, विजय मिश्र, फतेहचंद बेचैन एवं भोजपुरी के लब्ध प्रतिष्ठित कवि, लेखक, समीक्षक तथा पाती के यशस्वी संपादक डा अशोक द्विवेदी ने अपने काव्य पाठ से उक्त गोष्ठी को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया। अरविंद दुबे, विनोद कुमार, दिग्विजय सिंह, नागेंद्र सिंह, अजय कुमार, स्वामीनाथ रावत आदि उपस्थित रहे। संचालन एसबीआई के अधिकारी केके सिन्हा ने किया।

के उपायों पर चर्चा की गई। श्री शेखर ने कहा, को लाभ मिल सके।

बलिया : कुंवर सिंह इंटर कॉलेज में काव्य गोष्ठी में सुनाई गई एक से बढ़कर एक रचनाएं

...र सिंह इंटर कॉलेज में विश्व ...न की बलिया इकाई द्वारा ...रोह और काव्य गोष्ठी का ...या। उक्त अवसर पर विश्व ...न के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ...ला पहनाकर स्वागत किया ...बोधित करते हुए कहा कि ...र्वरा और प्रतिभाओं की खान ...ति, साहित्य और संस्कृति ...हां के लोगों का राष्ट्रीय ...यहां के अनेक साहित्यकार

उन्ही में यहां के डॉ अशोक द्विवेदी भी हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है। काव्य गोष्ठी का शुभारंभ शिवजी पांडेय रसराज की सरस्वती वंदना और काव्य पाठ से हुआ। तत्पश्चात डॉ नवचंद्र तिवारी, हीरालाल हीरा, शंकर शरण काफिर, डॉ शशी प्रेमदेव, विजय मिश्र, फतेहचंद बेचैन एवं भोजपुरी के लब्ध प्रतिष्ठित कवि, लेखक, समीक्षक तथा पाती के यशस्वी संपादक डॉ अशोक द्विवेदी ने अपने काव्य पाठ से उक्त गोष्ठी को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया।

चितईपुर, वाराणसी, में ''पाती'' मंच की काव्यगोष्ठी

टाउनहाल, बलिया में हिन्दी-दिवस समारोह मे साहित्कार लोगन के सम्मान

मनोज भावुक

गीत

उड़ि जाला सुगना पिंजरवा से अचके
सइ गो सवाल छोड़, सइ बात कहि के

जाई कुछु संगे नाहीं सब कोई जाने
तबहूँ त लूटे-पाटे, कहाँ केहू माने
हक मारे दोसरा के स्वारथ में परि के

केहू के सता के बाबू सुख कहाँ पइबे
अपने मकड़जाल में तू फँसि जइबे
लोरवा अंगार बने हिया में उबलि के

मुरुदन के गाँव ह ई, केहू नहीं रूके
माटी के खेलवना ह, मटिए में टूटे
लुकाछिपी खेले मौत, पँञ्जरे नू रहि के

अनकर कलेस-पीरा हरेला जे प्यार से
भोर के किरिन लेखा लड़े जे अन्हार से
ऊ त कबो मरे ना हजारो बेर मरि के

गजल

ऊ नामी आदमिन के साजिशन बदनाम कइलन स
एही तिकड़म से सारे खूब नू चर्चा में अइलन स !

केहू पूछल ना ओकनी के त एगो काम कइलन स
खुदे संस्था बनवलन स आ खुदही मेठ भइलन स !

दिया हम नेह के लेके सफर में बढ़ रहल बानी
ऊ नफरत के भयंकर आग में जर-जर बुतइलन स !

बेचारा का करे सन बम में दम त बा ना सिरिजन के
केहू के खींच के टङरी ऊ आपन कद बढ़इलन स !

बना देलन स सच के झूठ ऊ अपना थेथरपन से
मगर सच सच रहेला ई ना लबरा बूझ पइलन स !

जहाँ तक हो सके दूरे रहीं कींचड़ आ लीचड़ से
परल एहनी के पाले जे, ई ओकर नाश कइलन स !

कबो पनरोह से पूछीं जे जमकल पाँक के पिलुआ
दहइलन सन ना पानी से त बाँसो से कोंचइलन स !

भला असमान पर थुकला से ओकर का होई 'भावुक'
मगर बकलोल जिनगी भर बस ईहे काम कइलन स !

❑ फ्लैट 3017, टावर-17 महागुन माइवुड्स
ग्रेटर नोएडा-वेस्ट, गौतमबुद्ध नगर 201306,
मो. 8291633629

ललकार

विपिन बिहारी चौधरी

माई के भाग जगाईं जा
ना त लानत एह जिनगानी के।

कोटि कोटि पूतर जेकर,
एतना दुरगति होखे तेकर।
माई के लाज बचा लऽ तू,
बस हाथे-हाथ बटा ल तू।
संकल्प करऽ मिल के सभनी
हरदम एक रहब जा हमनीं
बस बोल गगन के गूँजे द-
भाषा-भेख सुवानी के।
माई के भाग जगाई जा
ना त लानत येह जिनगानी के।

उठऽ उठऽ जागऽ जागऽ
भोर भइल निनिया त्यागऽ।
घर-घर में एके बात चले,
ले अंगड़ाई हर घात तले।
आ गइल समय निहुरऽ मत तू
अपना हक से चूकऽ मत तू
ई कोटि-कोटि के भाषा ह-
लरिकाई-बूढ़-जवानी के
माई के भाग जगाईं जा,
नात लानत एह जिनगानी के।

हर-डगर-डगर पर डगरी जब,
हर मोड़-चउक पर रगरी जब।
हर षहर गाँव से भर उमंग,
हर घर अंगना से बहरी जब।
हर लोग प्रेम से बात करी
सबही सबका के साथ धरी।
तबही माई के लाज रही-
ई लाज दूध आ पानी के
माई के भाग जगाईं जा
ना त लानत एह जिनगानी के।

❑ द्वाराः अजित कुमार, रहेजा ग्रीन, विंग-बी (1705),
रहेजा एस्टेट, कुलुपवाड़ी, 400066, बोरिवली, मुम्बई

सन्धि सन्देश……।

योगेन्द्र शर्मा 'योगी'

पाँच गाँव दे दा बस,जिनगी गुजार लेब
अपने पसीना से ओके सँवार लेब
रार मत ठाना रउबार मत पाला हो
लेइ ला अँजोरिया कुल्ह हमहीं अन्हार लेब।

युद्ध क बिनास नास मय परिवार करी
कइ ला बिचार हाँथ कइसे कटार लेब
दम्भ क तियाग करि अँगना के लाज रखा
तोहीं न रहबा त हम कवन बहार लेब।

रणचंडी हहाइ जे आई रणक्षेत्र बीच
खप्पर में कइसे के लोहू उतार लेब
का कह चढाइब देखाइब फिर मुँह कहाँ
एसे त बढ़िया हव माथे पर हार लेब।

गरदन हमार भाय चाहे तोहार कटी
सिसकी करेज नेह केसे उधार लेब
अँखिया के आगे बिपतिया चिढाई जब
ओह छिन हमके के बतावा पुकार लेब।

दूध भात लोरी कटोरी जब पूछी त
दउलत क गठरी आ कइसन कठार लेब
हँसी जमाना निसाना बनाय हाय
कपरां मुकुटवा के हम कइसे के भार लेब।

एतना धियान धरा पुरखन के मान रहे
आन रखा मोरो हम तोहरो सम्हार लेब
अँगुरी के ओर पोर छूटै न छोर कउनो
पाहन न बना हवऽ दाही बेकार लेब।

साख के बचावा निभावा सम्बन्ध तनी
दूसरा के बूते ना अच्छा हव खार लेब
हानी नदानी में राउर या मोर होई
बाटै असान नाही जग कऽ धिक्कार लेब।

राज-पाठ आसन सिंहासन सब तोहीं ला
नेह छोह थोरिका सा तोहसे दुलार लेब
मानजा न जिद धरा 'योगी' तबाही क
जब घरवै न रही त हम कवन संसार लेब।

पाँच गाँव दे दा बस, जिनगी गुजार लेब
अपने पसीना से ओके सँवार लेब।।

❑ भीषमपुर,चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

देखीं नेतवन के महायुद्ध

राजेश ओझा
'धर्मशील'

असि परशु कुन्त बन्दूक तोप,
शस्त्रास्त्रन के बा भले लोप,
मुँहवे में बा बारूद भरल,
विस्फोट न बाटे शान्त रुद्ध।
देखीं; नेतवन के महायुद्ध।

सेना-सेना उत्साह भरल,
नायक खातिर बा जान परल,
मित्रो के मित्र न मित्र रहल
तनिको निन्दा सुन भइल क्रुद्ध।
देखीं; नेतवन के महायुद्ध।

पति-पत्नी आ भाई-भाई,
दल खातिर तजलें चिकनाई,
घरहूँ में उठा-पटक होला,
सुनिके तनिको बोली विरुद्ध।
देखीं; नेतवन के महायुद्ध।

ई राजनीति के गजब खेल,
बा स्वार्थ-रीति के घाल-मेल,
के जीती, के हारी बाजी,
पिठुआ दंडित, नेता विशुद्ध।
देखीं; नेतवन के महायुद्ध।

ई लोकतन्त्र ना ठेलतन्त्र,
जादू के कतने महामन्त्र,
के बा सच्चा, के बा झूठा,
सब राम बने आ कृष्ण-बुद्ध।
देखीं; नेतवन के महायुद्ध।

❑ डी 59/365 केएसडी, जयप्रकाश नगर, सिगरा,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 221010

भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति

✍ चंद्रेश्वर

(एक) हमनी के रहब जानी दूनों परानी

भोजपुरिया समाज आ संस्कृति के संरचना में खेती–किसानी के मुख्य भूमिका रहल बा। खेती –किसानी के असल आधार ह श्रम। भोजपुरिया समाज के लोग श्रम से, अटूट मेहनत से कबो अलग होखे के बारे में ना सोच सके। एह समाज के भूगोल में पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पश्चिमी बिहार के नियामक भूमिका रहल बा। एह क्षेत्र में लोग के जीविका के साधन खेतिए–किसानी रहल बा। एहिजा बड़हन उद्योग–धंधा के फरे–फुलाए के अवसर बहुते कम मिलल बा। ईहे वजह बा कि एह क्षेत्र से रोज़ी–रोज़गार के चक्कर में हरमेस पलायन आ विस्थापन होत रहल बा। अंग्रेज़ी राज में एहिजा से गिरमिटिया मजदूर बनि के बहुत लोग बाहर मारीशस, फीजी, सूरीनाम, गुआना आ नीदरलैंड गइल आ ओने के धरती के आपन मेहनत, खून–पसीन से सींच के आबाद क दिहल। भोजपुरिया समाज के पुरबिया समाज कहे के भी चलन रहल बा। पुरबिया समाज के बारे में कहल जाला कि एहिजा के लोग भावुक होला आ आपन परंपरा, जड़–ज़मीन,जगह, गाँव–जवार, रीति–रिवाज़, तीज–त्योहार से जुड़ल रहेला। एहिजा के लोग देश–विदेश के केवनो कोना में जाई बाकिर आपन मूल पहचान के मिटे ना दिही। आपन बोली –बानी आ भाषा के लहज़ा आ ख़ूबी के बचा के राखी। एह सब के बावजूद एहिजा के लोग स्थानीयता में क़ैद हो के ना जियल चाहे। एहिजा के लोग हरमेस भाषाई अस्मिता आ संस्कृति के मामला में कट्टरपन से दूर रहल बा। एहिजा के लोग भोजपुरी से प्यार करेला बाकिर हिन्दी के आगे कइ के। आपन समाज से एहिजा के लोग मुहब्बत करेला बाकिर राष्ट्र आ देश के क़ीमत पर ना। भोजपुरी में सन् 1911 में रघुवीर नारायण 'बटोहिया' गीत के रचना कइले रहलन जेवना में भारत देश के भूगोल आ सांस्कृतिक विरासत आ ख़ूबी के वर्णन कइले बाड़न––"सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से, मोर प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया।" भोजपुरी के अधिकतर गीतन में भारत के नाम बेर–बेर आइल बा।

भोजपुरिया समाज के लोगन के जीवन प सगुण भक्ति काव्य से ज्यादा निर्गुण भक्ति काव्य के प्रभाव रहल बा।

एह समाज के रचे–गढ़े, शिक्षित आ संस्कारित करे में गोरखनाथ, कबीर, रैदास, भरथरी, भिनक. राम अस संत–महात्मा के योगदान विशेष रहल बा। भोजपुरिया समाज एगो जुझारू समाज रहल बा। एह समाज के ऊपरी तबका प तुलसी आ "रामचरित मानस" के प्रभाव लक्षित कइल जा सकत बा।

भोजपुरिया समाज के लोग के सुभाव अक्खड़ होला। एहिजा के लोग जेतने भावुक होला ओतने साफ़ बोले वाला भी। एहिजा के लोग के जीवन शैली में गीत–संगीत के प्रधानता रहल बा। एने के लोग अपना जीवन के हर मोरचा प लड़त–जूझत मिली त गुनगुनावतो मिली।

भोजपुरिया समाज के लोग रोज़ी–रोज़गार के चक्कर में विस्थापित भइल बा त भोजपुरी साहित्य में जेवन मुख्य धारा बा ओकरा प एकर असर देखल जा सकत बा। भोजपुरी पूर्वी गीतन के जनक आ स्वंतत्रता सेनानी महेंदर मिसिर के लिखल पूर्वी गीतन में विस्थापन के दरद आ टीस के पुरजोर अभिव्यक्ति भइल बा। उन्हुकर एगो पूर्वी गीत प्रस्तुत बा जेवना में एगो गंवई मेहरारू के विरह–वेदना के महसूस कइल जा सकत बा –

अतना बता के जइहे कइसे दिन बीती राम।
हमनी के रहब जानी दूनो परानी
आंगना में कींच–कांच दुअरा पर पानी।
खाला–ऊँचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी। हमनी।
देस–बिदेसे जाले जाले मुलतानी।
केकरा पर छोड़ के जाले टूटही पलानी। हमनी।
कहत महेन्दर मिसिर सुने दिलजानी।
केकरा से आग मांगब केकरा से पानी।
हमनी का रहब संगे दुनो हो परानी।

आगे चल के भोजपुरी के मशहूर लोककलाकार, कवि–नाटककार आ अभिनेता भिखारी ठाकुर एही विस्थापन आ विरह–वेदना के आधार बना के "बिदेसिया" नाटक के रचना कइले बाड़न। भोजपुरिया समाज के जीवटपन आ भोजपुरियत के, ओकर ठेठ संस्कृति के जांच–परख करे के होखे त पौराणिक पात्र विश्वा. मित्र, बुद्ध, गोरखनाथ, भरथरी, कबीर, रैदास, महेंदर मिसिर, भिखारी ठाकुर, भोलानाथ गहमरी,मोती बीए,राम जियावन दास बावला से ले के विजेन्द्र अनिल आ गोरख पाण्डेय तक के रचना आ चिंतन के मरम के समझे के परी ।

भोजपुरिया समाज के संस्कृति आरंभ से प्रतिरोध के चेतना से जुड़ल रहल बा ––विश्वामित्र से लेके समकालीन समय तक। भोजपुरी में हर समय में ग़लत बेवस्था के विरोध में आवाज़ उठत रहल बा।

एहू समय में भोजपुरी में नीमन आ बाउर दूगो धारा के बीच संघर्ष देखल जा सकत बा। एक ओर बाजारवाद के चक्र व्यूह में फँस के लोभ–लालच में फूहड़ सिनेमा बनि रहल बा, द्विअर्थी के नाम प बाउर गाना लिखा रहल बा त स्वस्थ परंपरा से जुड़ के भी काम हो रहल बा। सोशल मीडिया प एह दूनो धारा के बीच टक्कर दिखाई परत बा।

भोजपुरिया समाज के सर्व स्वीकृत महानायक–नायक के रूप में विश्वामित्र, बुद्ध, गोरखनाथ, कबीर, रैदास, लोरिक, वीर कुँवर सिंह, मंगल पाण्डेय, कवि कैलाश, महेंदर मिसिर, भिखारी ठाकुर, हीरा डोम, रसूल मियां, मुहम्मद खलील, राजेन्द्र प्रसाद, जगजीवन राम आदि के नाम सहज रूप से गिनावल जा सकेला। भोजपुरी भाषा हरमेस जाति,वर्ण, धर्म आ मज़हब के संकीर्ण दायरा से बाहर रहल बिया। एकर ईहे उदार सोच एकर बोले–लिखे वाला समाज के सदियन से ताक़त रहल बा।

(दू) गरब ना करिबा,सहजे रहिबा

दुनिया भर में एह बात प लोग ज़रूर राजी होई कि आपन बोली आ भाषा में बोलल–बतियावल अवरू लिखल –पढ़ल सबके नीमन लागेला। आपन हिरदय के भाव–संवेदना, विचार से सिंचल गईल अनुभूति के साफ़गोई आ सहजता के साथ आपन मातृभाषा माने आपन बोली में व्यक्त कइल जा सकत बा। मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में एक से बढ़ि के एक संत–भक्त कवि पईदा भइल लोग; ऊ सब लोग आपन स्थानीय बोली में कहल– लिखल, जेकरा के आजु पुरान हिन्दी कहल जाला। गोरखनाथ, कबीर, रैदास भोजपुरी में लिखल–कहल लोग त मल्लिक मुहम्मद जायसी, तुलसी,रहीम अवधी आ सूरदास, रसखान,मीरा आदि ब्रजभाषा में लिखल –कहल लोग। ओह दौर के काव्य में लोक संस्कृति के जीवंत छाप आ असर के गहिरारे देखल जा सकत बा। ओह दौर के काव्य के महत्ता आ लोकप्रियता के पीछे एगो कारन बोलियो में लिखल–कहल रहल बा। "मेरा दागिस्तान" जइसन पुस्तक के सोवियत रूस में सन् पचास के दहाईं में रसूल हमजातोव आपन बोली "अवार" में लिखले रहलन जेवन आजु संसार में एगो सेसर लेखक के रूप में गिनालन। एह पुस्तक के असंख्य पाठक आजु दुनिया के कोना–कोना में फइलल बाड़न। आपन बोली भोजपुरी के सुनते हमरो चेतना उजियार हो उठेले। दिल –दिमाग़ के रस मिले लागेला। एकर सबदन के कान में घुलते जबदलो कान सही हो जाला।

सबद आ अरथ के संगति समुझ में आवे लागेला। हम जब आपन गाँव–गिराँव से निकसली त शुरू में भोजपुरी से दूर निकल जाए के बारे में खूब सोचलीं। हिन्दी से आगे बढ़के बिलायती बोली अँग्रेज़ी के अपनवलीं। का ना कइलीं मोर बबुअवो! बाक़ी सब बोली–बानी के रचल–बसल संस्कार हमरा भीतर जस के तस। भोजपुरी सुनते फुरहुरी होखे लागेला, हमार सरीर में। अगर एकरा के बोलला ढेर दिन हो जाला त हमार जीभिया अँइठाए लागेले। तबीयत उदास हो जाला। ढेर दिन प गाँवे गइनी त लोगन के भोजपुरी में बतियावल सुननी। मन हरियराए लागल। चेहरा खिले लागल। अइसन लागल कि जइसे नाक में जनेरा भा बूँट के लावा भा चबेनी के सोंधाई समा गइल ...

मकइया रे तोर गुन गवलो ना जाला,
आगे –आगे हर चले पीछे ले बोआला,
मकई के खेत रगड़ –रगड़ जोताला ।

दाल करे फटर–फटर भात उधियाला,
भइंसी के माठा जोरे सर–सर घोंटाला,
मकइया रे तोर गुन गवलो ना जाला।

भिखारी ठाकुर के गावल गाना मन परे लागल ।

अपना बोलिया में बोलला प सभ दिल के बतिए उपरियाए लागेला। पता ना ई कँवन जादू ह बबुआ। अब बेरि–बेरि बबुआ कहला प कवि गोरख पाँड़े ईयाद आवत बाड़ें। उन्हुकर एगो गीत के अंतरा इयाद आवत बा ––

" समाजबाद बबुआ धीरे –धीरे आई !
हाथी से आई,घोड़ा से आई
अंग्रेजी बाजा बजाई,
समाजवाद बबुआ ––!

हमरा जब भोजपुरी मे बोले के होला त बाबा गोरखनाथ से ले के गोरख पाँड़े के इयाद स्वाभाविक रूप से आवेला । साथे –साथे बाबू रघुवीर नारायण के बटोहियाश, प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के "फिरंगिया" आ भिखारी ठाकुर के "बिदेसिया" के इयाद अपने–आप आ जाला । ईहे लोग काहे, भोलानाथ गहमरी, मोती बीए से ले के कैलाश गौतम आ केतने पुरान–नवहा कवियन –गीतकारन के लाइन इयाद परे लागेला – अशोक द्विवेदी, प्रकाश उदय से ले के मनोज भावुक तक एगो लमहर लिस्ट बनि जाई ।

फिरंगियन के भगावे में "फिरंगिया" गीत के बहुत महत्व रहल बा। ऊ अपना समय के सचाइयन के बटोरले बा आ फिरंगियन के अंत में ख़ूब सरापतो बा। जनगन के दुरदसा प। "बटोहिया" में करुन रस आ बीर रस एगो –दोसरा से बिलग नइखे हो पावल। एकरा में करुन रस त रहबे करी काहे से कि देसवा बाबू रघुवीर नारायण के बेर गुलामे नू रहे; बाकिर जँवन आज़ादी के लड़वइयन के हुँकार रहे, आस आ भरोस रहे, ऊ उत्साहे का चलते। ओकरे चलते देसवा के भावुक अंदाज़ में बड़ाइयो भइल बा। बड़ाई के हक़दार त हमार देसवा हइये ह। अब दीगर बात बा कि कुछ लोग ओकर "इमेजवा" बिगाड़ल चाहत बा। अजबे रार मचल बा। कोई साँच पतियाते नइखे ––

" साँच कहत जग मारन धावै,
झूठे जग पतियाना ।
रे साधो देख ई जग बउराना ।।

भोजपुरी में ई सब भाव आ बिचार के देखल जा सकेला। एक बेरि हमार एगो चेला जे गवइया हो गइल बाड़न, हमरा से कहलन कि गुरु जी रउरा मंच प हमरा बारे में बोले के बा भोजपुरिए में। हम बोले सुरू कइली त हमरा कबीर आ गोरखे इयाद परल लोग। हम कहलीं कि ई भोजपुरी के महतारी संसकि. रते के कहल जाला। ई लड़वइन के पुकार आ ललकार के बोली ह। ई प्रतिरोध के बोली ह त सिंगारो के सिंगार ह ई बोली। गोरखनाथ एगो दोहा में कहले बाड़न कि –

'हबकि ना बोलिबा, ठबकि ना चलिबा, धीरे धरिबा पाँव ।
गरब ना करिबा, सहजे रहिबा ,भणत गोरख रॉंव ।।

त भोजपुरिया के सुभावे गोरखनाथ के सुभाव ह। कबीर गवले बाड़न कि 'तोर हीरा हेराइल बा कचरे में।' त ई लहज़ा भोजपुरी के ह ए बबुआ। सीधे –दू टूक बात । घुमावदार बात ना। अभिधा ढेर आ बेंजना कम। ईहे त लालित्य ह हमार माईबोली भोजपुरी के।

(तीन) अब केहू गांवे लवटल नइखे चाहत

गाँव में जब केहू के बेटी के बारात आवत रहे त सब केहू जाति,धरम आ मज़हब के खोल भा केंचुल उतार फेंकत रहे। सब सहकार आ सहयोग के भावना से भरल रहत रहे। पहिले केहू के परिवार में काज–परोजन परे त ऊ बिना संकोच आ हिचकिचाहट के सब से मदद लेत रहे। केहू से चौकी त केहू से बरतन, केहू से तोसक–चादर आ दरी–तिरपाल त केहू से कुरसी आ मेज़ माँगल जात रहे। आजु लेखा ना कि सब किछु ठेका प आवत बा अब त लागत बा कि शहरी राछस ठाढ़े सोगहग गाँव के चबा गइल बा। अँजरी–पँजरी किछुओ नइखे छोड़ले। पहिले पता कइल जात रहे कि गाँव में केकरा –केकरा दुवार प लगहर गाइ आ भईं बाड़ी स। दू दिन पहिलहीं से दूध–दही माँग–माँग के बटोरल जात रहे। अब त नकली पनीर आ खोवा के खपत गाँवों में बढ़ गइल बा। ई नकली पनीर आ खोवा मुँह में ले जा त ज़ल्दी घुलते नइखे। ह त, पहिले जब केहू के बेटी के बारात आवे त किछु खल लोग खलई आ गुंडा लोग गुंडइयो करे से बाज ना आवत रहे। ऊ लोग पसन से आपन चाल भा छाव देखा देत रहे। एक बेर के घटना ह कि फलाना पाँड़े के बेटी के बारात आइल त किछु लोग सामियाना के दरी प चुपके से जा के कवाछ छिरिक दिहल।

कवाछ एगो पौधा होला जेवना से पाउडर लेखा पदारथ निकलेला ।ओकरा के केहू प फेंक द भा कहीं बिस्तर प, कुरसी प गिरा द त देह के जेवना अंग से कवाछ के इचिको "टच" हो जाई त सच में नोचनी (चुनचुनाहट) उठ जाई। ओह पूरा बारात के बाराती लोग के चूतर में नोचनी उठ गइल रहे। दुआरे बारात के लगावो जाके, सब केहू एने –ओने भागे लागल। ओही बारात में पानी पिए वाला डराम में केहू नीम के पतई पीस के ओकर गोला बना के डाल देले रहे। बहुत छानबीन भइल रहे बाक़ी शातिर अपराधी के पता ना चलल। क बार त लोग पानी में जमालगोटा डाल देत रहे आ बाराती लोग के हालत ट्रक के टायर लेखा पंक्चर हो जात रहे। फलाना पाँड़े कहिहे बराबर कि जे गाँव के राजनीति बूझ ली, ऊ देस–दुनिया में कहीं फेल ना हो सके, कँवनो इम्तहान में।

गाँव में बारात के खिया के भवदी के लोग खात रहे,

बाद में सब केहू। एह कुल्हि मोका प बहुत सामाजिक भेदभाव देखे के मिलत रहे। अब एने एह जातिगत भेदभाव के मामला में किछु ढीलापन आइल बा। अब गाँव में बेगार करेवाला लोगन के संख्या कम भइल बा पहिले एह जातिवादी व्यवस्था में एगो सहकार आ समंजन के भावो जत्र –तत्र लखाई पड़त रहे, अब ई भाव त सिरे से नदारद बा। अब केहू बिना पइसा के केवनो सलाम नइखे सुनत। केहू काम के बदला में टका खोजत बा। गाँव में जाति व्यवस्था में किछु ढीलापन आइल त शहर के पइसवा के रोग ओकरा के अवरू बुरा बना देलस। ना आदमी एने के रह गइल ना ओने के। ज़हरबाद फइल गइल।

पहिले गाँव के नोकरिहा लोग बेटा–बेटी के बियाह गाँव से करत रहे, अब गाँव के नाव प सबकर ईमान काँपे लागत बा। गाँव जे पहिले छोड़त रहे त गाँव से ओकर एगो सनेह आ सहज लगाव के धागा जुड़ल रहत रहे; बाक़ी अब त केहू गाँवे लवटल नइखे चाहत। 'इतते हीं सब जात है, आवत कोऊ नाहीं।' ई जेवन "ग्लोबलाइजेसनवा" के आन्ही चलल आ झूठ –फूर "ग्लोबल गाँव" के बतकही चलल गाँव अवरू कमज़ोर होत गइले स। ई बतिया हमार बार –बार पीछा करेला। खलिसा गाँव के दोख नइखे, जे बड़ शहर में जा के बस जाता ऊ गाँव में लवटलो नइखे चाहत।

हमनी के देस में दू गो चीजू परधान रहे ––– गँवई जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान आ कृषि संस्कृति। ई दूनो प जबरजस्त चोट भइल बा। गांधी बाबा कहले रहन कि भारत के आतमा गाँव में बसेला द्य ई देस गाँवन से बनल बा। गाँव रही त देस बाँची; बाक़ी होत बा एकरा उलटा; जइसे तारक मेहता के उलटा चश्मा। सब ज़ोर शहर प बा–– गाँव, ग़रीब आ किसान के सब भूलत जा रहल बा। कबो हिन्दी के महाकवि सुमित्रानंदन पंत कविता लिखले रहलन कि "अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है !" अब त ऊ गाँव स्मृति के हिस्सा होत जा रहल बाड़े स।

एने गाँव से ढेर ख़बर ख़राबे मिलल। लागत बा कि गाँव बंबई महानगर के केवनो मुहल्ला होखे; जेवन केवनो डॉन भा माफिया के निगरानी में होखे। एक दिन बाबूजी मोबाइल प कहलन कि अब गाँव में दिनवे में डकैती हो जात बा। किछु लोग एह मानसिकता के हो गइल बा कि केहू के घर में कबो कूद जात बा। गाँव में पहिले कबो –कबो पुलिस –दरोगा आवत रहे लोग; बाक़ी अब ई एगो धंधा हो गइल बा। साँच पूछल जाय त लोग पुलिस –दरोगा से डेरातो नइखे। ●●

❑ 631 ⁄ 58, सुयश, ज्ञानविहार कॉलोनी,
कमता-226028, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल नंबर - 7355644658

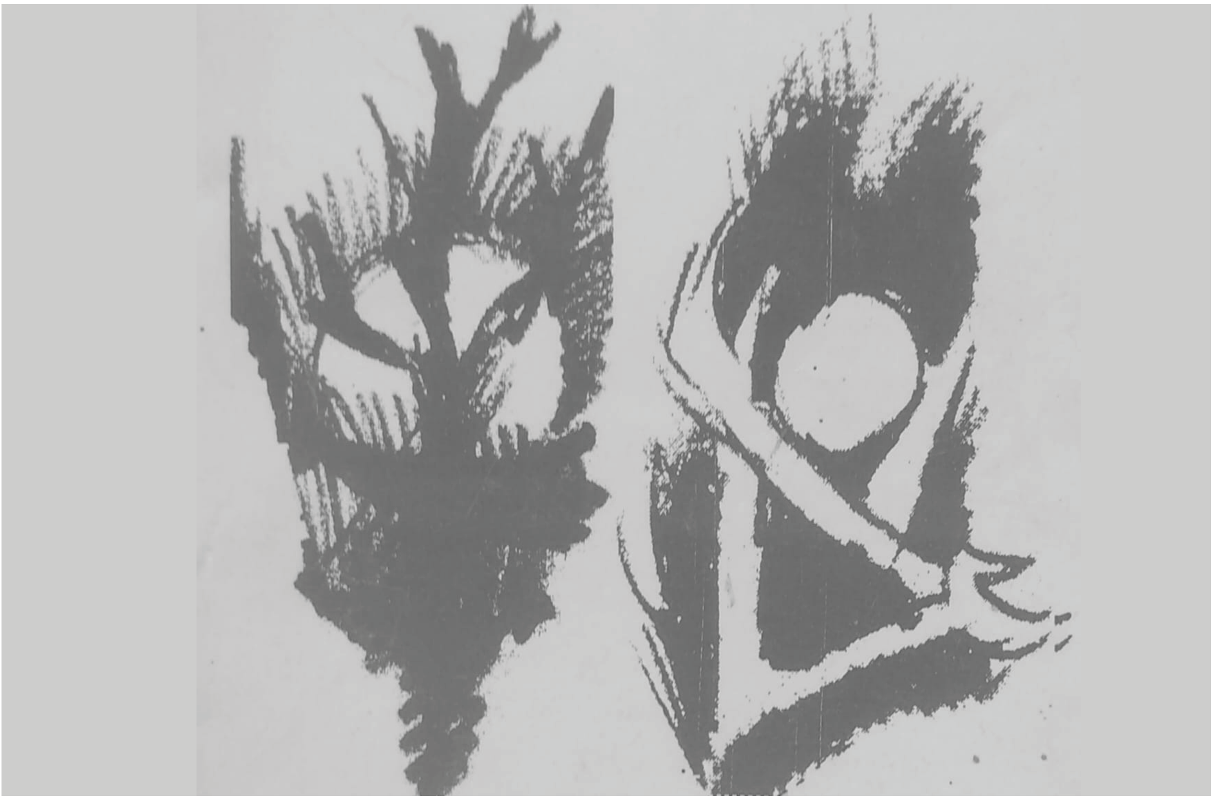

कहल आ सुनल आ सुनावल
लोककथा के वितान

डा0 प्रकाश उदय

कहे–जोग के कहला से कथा बनेला। ई कवनो आधा–तिहा बात त ना ह, बाकिर पूरा बात बुला ई ह कि ना–कहे–जोग के ना कहत, कहे–जोग के कहला से कथा बनेला। जबकि कथा त कहे–जोग के नाहिंयो कहलका के होला, ना–कहे–जोग के कहलको के होला। बाकिर, ईहो बुला आधे–तिहा बात भइल, काहेकि पूरा बात त बुला ई ह कि कथा कहला से ना बने, सुनला से बनेला। सुन के सुनवला से बनेला। सुनते–सुनावत रहला से बनल रहेला। आ ईहो बा कि ईहो बात अगर पूरा बा त तबे ले पूरा बा, जबले, एकरा आगे के कवनो पूरा बात नइखे आ जात। आ ओहू बात के, जाहिर बात, कि हमेशा खातिर पूरा त रह नइखे जाये के !

बात कवनो कहाँ कबो पूरा होला। बात के कहाँ कबो केकरो से पूरम्पूर पूरा होना बा ! अइसना में, करी त बाते करी केहू, पूरा बात भला के करी, कइसे करी ! त पूरा त एको ना, आधे–तिहा बात कुछ बाटे बतियावे के हमरो। एगुड़े एह अरज–निहोरा के साथे कि ना–सुने–जोग के नाहिंए सुनत, सुने–जोग जवन होखे, जतने, तवना के, ततने, सँपरे, सुनत बने, त सुन लेहल जाय...।

त एक त ई कहे के बा कि लोक के लेके कुछ नइखे कहे के। दोसरे ई कहे के बा कि कथा के लेके कुछ नइखे कहे के। नइखे कहे के, माने सँपर के कुछ नइखे कहे के। लोककथा के लेके, बाकिर, जरूर कुछ कहीं, अगर्चे जे कह पाईं, हालाँकि जवन कहे के बा तवन ई कह के कहे के बा कि जवना लोक के कथा के हमन 'लोककथा' कहीं ले, तवन लोक अपना कथा के 'लोककथा' ना कहे, ऊहो ओकरा के ऊहे कहेला जवन सभे कहेला, 'कथा', 'कहानी', 'कहनी'। ओकरा त पता ना, ईहो पता बा कि ना कि ऊ जवन ह तवना के बजाय 'लोक' ह, भा ई, कि ऊ जवन ह तवना के अलावा जवना के 'लोक' कहल जाला, तवनो ह।

बाकिर अब कइल का जाय ! लोक के अध्ययन करे के होखे, त लोक त कम–से–कम चहबे करी। चाहीं, बाकिर ईहो बा कि कमको से कुछ कमके चाहीं, जादे–से–जादे वाला तवन लोक ना चाहीं जवना में इहलोक–उहलोक, जड़–चेतन सबके समाई, जवन सबमें बेयापेला, जवना में सब–सब बेयापेला। जवना से ना कुछ बाहर, ना अपने जवन कुछुओ से बाहर। ई अजब बा, बाकिर बा त बा, कि लोक के पढ़े खातिर जतना जरूरी बा लोक, ओतने जरूरी बा लोक के लोक से काटल, छाँटल, छिनगावल। पढ़ाई–लिखाई के काम बिना कवनो काट–छाँट के चलबे ना करे बुला। लोक में अइसन काट–छाँट तब होला जब गारी गवाला। गारी गवाला त सब–सब हित–नात के साथे–साथे तिलक–बियाह करवावे वाला जवन बाबाजी लोग होला, ओहू लोग के गारी गवाला। तिलक में जब बेटहा किहाँ गारी गवाला त बेटा के बाबाजी के काट के गवाला, भहम बेटहा के बाबाजी के नइखीं गावत, हम बेटिहा के बाबाजी के गावऽ तानी...। आ बियाह में जब बेटिहा किहाँ गवाला त बेटिहा के बाबाजी के छाँट दियाला, भहम बेटिहा के बाबाजी के नइखीं गावत, हम बेटहा के बाबाजी के गावऽ तानी। जब बाबाजी के कवनो जायज–नाजायज फैदा करावे के बात होला त बेटहा किहाँ बेटिहा के बाबाजी के छाँट दियाला, बेटिहा किहाँ बेटहा के बाबाजी के छाँट दियाला।

गनीमत कहीं कि लोककथा, बलुक लोकसाहित्य मात्र के ममिला लिखापढ़ी के हइए ना ह, कहासुनी के ह। एकर एक मतलब ईहो भइल कि ई जवन 'भाषा' बा, 'भाष्' धातु से निष्पन्न, तवन अपना असल रूप में एही लोकसाहित्य वाला इलाका में बिचरेला। अपना एही असल रूप में बिचरला के चलते ऊ 'बोली' ह, 'बानी' ह, 'वाग्व्यापार' ह। एकरूप 'लिखतंग' ऊ ना ह, बहुरूप 'बकतंग' ह। एक के लिखलका के केहू दोसर जब पढ़ेला त जवन पढ़ेला, तिसरको केहू तवना के पढ़ेला त भरसक ऊहे पढ़ेला जवन दुसरका पढ़ले रहे, बाकिर एक के कहलका के जब केहू दोसर सुनेला, आ फेरू केहू तीसर से सुनावेला, त ना ऊहे सुनावेला, ना ओसहीं सुनावेला, जवन ऊ सुनले रहे, जइसे ऊ सुनले रहे। जाहिर बात, कि जवन हलचल बा लोककथा के लोक में, अपना हर कहवाई, हर सुनवाई के साथे नवहर हो जाय के जवन अवसर बा, अपना कहन में, आ अपना कहला में, तवन लिखल जाय वाला कथा–कहानिन के नइखे हासिल। नइखे हासिल त ना सही, बाकिर ओकर ललक त कम–से–कम लागे ! ललक लागे त हो सकेला कि कवनो–ना–कवनो बिध, कवनो–ना–कवनो बहाने, एहू कथालोक में जनगर आ मनगर कुछ होखे। रेणु जी मतिन कहानीकारन किहाँ भइबो कइल। हालाँकि ईहो भइल कि तब, लोककथा में रचल–बसल कवनो मनई के रेणु जतना आपन लगले, जतना अपनाइत लगले, ओतना आउर लोग के ना लगले। एह आउर लोग में से कुछ त अपना एह आपन ना लगलका के कमोबेस कहबो कइल, बाकिर अचरज ना, अगर एह आउर लोग में कथालोचन के कुछ तल्ख आ ओतने तल्खी से चुप्प चेहरन तक नजर उठ जाय।

इहँवे बुला, लोककथा के वितान के कुछेक तान के, कुछेक ताना, कुछेक बाना के सुन–गुन लेबे के चाहीं। बेशक लो. ककथा के मतलब से ना, अपने मतलब से, लोककथा के अलावा जवन कथा–कहानी, जवन कथा–कहानीकार, ओनहने के मतलब से। एक त ईहे कि कथा–कहानी के गहे वालन के दिलदारी कथा–कहानी के कहे वालन के दमदारी से बढ़ के, चढ़ के। एगो ईहो कि कहासुनी के चीज ह कहनी–कहानी, त ऊ लिखइबो करे त अँइसे, जइसे कि कहात होखे, पढ़लो जाय त अँइसे, जइसे कि सुनात होखे। ईहो एगो कि जइसे कहलका निफल, सुनला बिना ; ओसहीं सुनलका निफल, सुनवला बिना। एगो ईहो कि खाली एही भरोसा में मत रहे केहू कि कहानी प्रेमचंद जी के, कहानी प्रसाद जी के, भरोसा रखे कि कहानी मधूलिको के, कहानी बंशियोधर के आ एहू भरोसा के टूटे त मत देबे केहू कि कहानी मगध के बागी जवन राजकुमार अरुण, तिनिको ; जवन काला कारोबारी पं. अला. ्पीदीन, तिनिको। आ एक तान ईहो कि कथा–कहानी के भितरिए से खलिसा ओकरा प्रयोजन के मत उपरावल जाय, बहरियो आवल जाय, हो सकेला कि ओकर एगो बहुते खास प्रयोजन खरिहान में परल धान के अगोरिया होखे, जवना से दूर–दूर तक कवनो रिश्ता ना जुड़े, कहानी के भीतर के 'सीत–बसंत' से, भा 'भरबितना' से, भा 'कउआहँकनी' से। एकर एक मतलब कि लोककथा के एक तान ईहो कि रिश्ता जहाँ जुड़त होखे, जुड़िए जात होखे, तहँवे अगर ओकरा के जोड़े पावे कथवो, कहनियो; त कथा–कहानी भला कवना बात के कथा–कहानी !

संबंध आ संवाद–– सबके आ सबसे –– होला आ हो सकेला –– ईहे जानत आ ईहे मानत –– लोककथा, बलुक लोकसाहित्य मात्र के सब–सब उधामत। ओही संबंध आ संवाद के जोहत, ओकरे के साधत आ थापत। ई संबंध आ संवाद जहुआय मत, उँघाय मत एही खातिर एकरा के कहत रहे के बा, अपना लोककथवन में; गावत रहे के बा, अपना लोकगीतन में; गुँजावत रहे के बा, अपना लोकगाथा में; लउकावत रहे के बा, अपना लोकलीला में, उकसावत–उटकेरत रहे के बा, अपना लोक–उक्तियन से, लोकवार्ता के तमाम सारा सांगह–सरंजाम से। जाहिर बात कि एह कहला, गवला, गुँजवला, लउकवला, उकसवला, उटकेरला के मंद भा बंद भइलका, ओही संबंध, ओही संवाद के मंद परला के, बंद भइला के –– प्रमाणो आ परिणामो।

अइसनका में, एनहन के लेके अगर कवनो तड़प उठे हमन के मन में, अपना लोकगीतन के, अपना लोकगा. था, लोककथवन के बनवले–बचवले राखे के कवनो कोशिश करवट लेबे हमन के भीतर, त एह भरम में रहे के कवनो जरूरत नइखे कि ओनहन खातिर, बिलकुल ना, अपना खातिर, अपने खातिर। अपने ओह संबंध–संवाद के बनवले–बचवले जियवले–जगवले राखे खातिर जवना के बिना ई जीव–जगत हमन के लायक बहुत कम बा, आ बहुते कम बानी हमन के एह जीव–जगत के लायक। पता बा, आ ना बा, त होखहीं के चाहीं, कि कुत्ता–भुनगा–आदमी–गिलहरी–गाय से लेके उपवन–सर–सरित–गहन–गिरि–कानन तक से अबोला क के, रिश्ता सिरा के, हमन के कतना कुछ गँवा देले बानीं, कतना कुछ गँवावत जात बानीं। बाकिर, अतना कुछ गँवा देला के बादो अगर लोककथादिक के बचावे के मतलब हमन खातिर ईहे बा कि लाग–भिड़–जुटा–पटा के उनहन के संग्रह–संपादन क दिआय, त जवना के हद–हो–गइल कहल जाला, तवनो अभी भइल नइखे, ऊहो होखे में अबहीं कुछ बाकी बा। खोंपड़िया वाला कथवा सुनलहीं होखब सभे। जोतखी जी के रस्ता में एगो खोपड़ी लउकल, देखले कि ओकरा लिलरा प लिखल बा कि अबहीं–कुछ–बाकी–बा। अचरज में पर गइले कि परान निकल

गइल, चाम छूट गइल, माँस गल गइल, भला अब का बाकी बा ! उठा के धोकरी में ध लेले कि हमहूँ तनी देखिए लीं कि का बाकी बा। घरे आके धोकरी खूँटी में टाँग देले, अपने चल गइले संधा–बंदन में। मेहरारू देखे चलली कि जोतखी जी धोकरी में कुछ खान–पियान लायक ले आइल बाड़े कि ना, त पवली कि हाय राम, बुढ़वा सनक गइल का, कि खोपड़ी उठवले आ गइल ! खीसी खोपड़ीराम के ओखरी में पटक के मूसर से कूटि देली। जोतखी जी जब संधा–बंदन से लवटि के देखले त बूझि गइले कि खोपड़िया के का बाकी रहे।

नइखे जायके एह आकी–बाकी पुरवावे के पँजरा, त मान के चलीं कि जतना जरूरी बा लोकसाहित्य के सँचल–जोगावल, ओकरा से जादे जरूरी बा ओकरा के बरतल, आ तय बात कि एह बरतला के एगुड़े कवनो ढंग–ढर्रा ना हो सके, देश–काल के हिसाब से ओकरा बनते–बदलत रहे के बा। बाकिर का, कि ई तबले नइखे होके के, जबले अपना सब–सब संबंधन के, सबसे सबके संवाद के सब–सब संभावना के जियावे–जगावे के अपना उधामत में हारियो जाइल जाय त हारल मत जाय, हारियो के हार के मानल मत जाय। कब तक ? एगो भोजपुरी लोककथा के हवाले से कहीं त महज एगुड़े दाल के सवाल को लेके बढ़ई से, राजा से, रानी से, साँप से, लाठी से, आग से, पानी से, हाथी से, महाजाल से, मूँस से, बिलाई से –– सबसे, अरुक आ अथक –– जब तक सुन ना लेल जाय सवाल, सुनवाई ना हो जाय एह ममिला के कि 'का खाईं का पीहीं का लेके परदेस जाईं', तब तक। तब तक जब तक लोककथा के संरक्षण के मतलब ओकरा के कहलके–सुनलका के मान लिहल जाय। आ कहल, कहे लायक के। ना कहे लायक के नाहिंए कहत, कहे लायक के कहल, कहिए के मानल। आ कहल, सुने लायक। आ सुनल, सुनावे लायक। जाहिर बात कि ई मैसेजन के 'अँखमुँद फारवर्डीफिकेशन' से नइखे होखे के।

अँखमुँद ना कहल जाला लोककथा, ना सुनल जाला। सुने वाला के सुनलका के देखते–निरेखत ऊ कहल जाला, तब्बो जब ऊ खास एही मकसद से कहल जाला कि सुने वाला सुनत–सुनत सुति जाय, सब कुछ बिसार के। दिन भ जवना बाल–बुतरुन के उछरते–कूदत बीतल, धउरत–भागत, उन्हनी खातिर लोरी भा लोककथा, लगातार एह बात के अंदाजते गवाला, भा कहाला, कि निनन बन से चलके निनरिया रानी कहाँ ले पहुँच आइल बाटिन, एँड़ी ले कि ठोढ़ी ले –– उनुके स्वागत में, उनुके अवाई के मोताबिक लय–सुर के उतार–चढ़ाव, घटाव–बढ़ाव के साथे लोरी गवाला, कथा कहाला। एहू खातिर, ऊ सुने वालन के हुँकारी परला के सुनते–सुनत सुनावल जाला। ईहे ना, ऊ सुनलो जाला सुनावे वाला के सुनवला के लखत, परखत ; जरूरी जनाय त रोकतो–छेंकत, टोकतो–टिकावत। असहीं त ना कि लोककथा के कथक्कड़े ना, कबो–कबो कवनो–कवनो सुनक्कड़ो लोग चर्चा में आवत रहेला। गाँवा–गाँई एकाध गो अइसनको फलना–चिलना भइल करस रहन, जिनिका सुननिहारन में शामिल रहला से कहवइयन के कहलको में कुछ 'औरे कछु' वाला आस्वाद आ जाय, सुनवइयन के सुनलको में। अतना त तय बात कि कथा के कहवाई कवनो एकतरफा ममिला ना ह, आ लोक के एक मन ईहो कि ओकरा एकतरफा रहहूँ के ना चाहीं। अइसन मत होखे, कथा खाली कहइबे मत करे, ओकरा कुछ–ना–कुछ रोक–छेंक, कुछ–ना–कुछ टोका–टोकी से गुजरहीं के परे, एकरा खातिर कथक्कड़ लोग अपना–अपना तरीका से कुछ–कुछ कथहुज्जत रचले रहत रहे। अइसन एकाध गो कथहुज्जत के हमहूँ सुनले बानीं। एगो रउरो सुन लीं। अस. हीं, कथा के चुपचाप सुने के सहूलियत ना देबे के ठनले एगो कहन–शैली के उदाहरण के तौर प ––

–– एगो हनुमानजी रहन...।

–– एगो हनुमान जी रहन ! एकर का मतलब ? हनुमानजी त एक्के गो बड़ले बाड़े। हनुमानजी कवनो दूगो त बाड़े ना कि तूँ सँपर के कहऽ कि एगो हनुमानजी रहन !

–– हँ त हम कहाँ कहलीं कि हनुमानजी दूगो बाड़े ? हमहूँ त ईहे कहत बानीं कि एगो हनुमानजी रहन !

–– बाकिर 'रहन' कइसे हो ? हनुमानजी 'रहन' कि 'बाड़े'? तहरा अतना बेंवत कि तूँ हनुमानजी के कहऽ कि 'रहन' !

–– अरे, हनुमानजी बाड़ेश, त एकर का माने कि ऊ 'रहन' ना ? ऊ का हमन मतिन अइसन–ओइसन, जइसन–तइसन, कि बानीं त बानीं, नइखीं त नइखीं, कि बानीं त नइखीं–ना, नइखीं त बानीं–ना ! हनुमान जी त ओ में के कि एक्के साथे बड़लो बाड़े आ नाहिंयो बाड़े। कि नइखन तब्बो बाड़े, बाड़े तब्बो नइखन। हिम्मत कइसे भइल तहरा हनुमान जी के 'बाड़े' में राखे के, बाकिर 'रहन' में से निकाल देबे के ?!

–– ठीक बा भाई, ठीक बा कि एगो हनुमानजी, आ हनुमान जी रहन, त आगे का भइल...

–– आगे ई भइल कि दूनो जना नहाय चलले।

–– बाकिर दूनो जना कइसे, हनुमानजी त एगुड़े रहन ?

–– हँ, बाकिर का, कि उनुका के अकेले नहाय जात देखले, त गणेशोजी साथे लागि गइले...

–– अब अँइसे भला कइसे कि गणेशोजी साथे लागि गइले एकदम्म–से !

–– असहीं ना लागि गइले भाई, तनी अपने सोच के देखऽ कि बानररूप हनुमानजी नहइहें, त का हाथीमुँह गणेशजी बिना नहइले रहिहें...!
–– हँ, कइसे भला, त आगे ?
–– आगे ई कि चलत–चलत गंगाजी के किनारे पहुँच गइले तीनो–के–तीनो।
–– तीनो ? तीनो कइसे ? ई तनी जादे नइखे होत ?
–– जादे कइसे ? गणेशजी जइहें त गणेशजी के मुँसवा का घरे बइठ के माला जपी ?
–– हँ, कइसे भला, त आगे ?
–– आगे ई कि चारो जना नहाय लगले।
–– चारो ? चारो कइसे ? अब ई मत कहे लगिहऽ कि जब मुँसवा चल देलस त मुँसवा के मउगी का घरे बइठ के माला जपित..
–– काहे कहब भाई, हम का जानत नइखीं कि भगवानजी के कथा–बात में झूठ जो कढ़ाइब त लोक–परलोक दूनो नसाइब ! भइल ई कि मुँसवा के पीछे एगो बिलाई लागि गइल...।
–– गणेशजी के मूँस के पीछे बिलाई ? ओकर अतना हिम्मत !
–– अरे ना भाई, बिलइया के पता ना रहे न, कि ई मुँसवा गणेशजी वाला ह...। बाद में पता चलल। पता चलल त ईहो पता चल गइल कि बाप–रे–बाप, ई कतना भारी पाप हो गइल...! ओही पपवा के धोए खातिर बिलइया गंगाजी में कूद के नहाइल, ना त तूहीं बतावऽ, कबो सुनले बाड़ऽ कि एक त बिलाई, ऊहो गंगाजी में, ऊहो अपने से कूद के नहाइल ?
–– ना, अभी आजे सुनलीं, त आगे ?
–– आगे ई कि नीके तरी नहा के पाँचो जना निकल अइले।
–– बाकिर नहाय त उतरल रहन चारे जना...
–– हँ–हँ, नहाय त उतरल रहन चारे जना, बाकिर भइल का, कि गणेशजी के धोतिया में अझुराऽ के एगो मछरियो निकल आइल...
–– आछा त आगे ?
–– आगे ई कि चारो जना चल देले।
–– बाकिर निकलल त रहन पाँच जना...
–– त गणेशजी का मछरी लेके घरे जइते ? ऊ मछरिया के नदी के हवाले कइले।
–– ठीके कइले, बाकिर अब ई मत कहिहऽ कि चारो जना घरे ना पहुँचले।
–– चारो जना कइसे पहुँचिहें भाई, बिलाई भींजल रहे, भाग गइल।
–– त तीनो त पहुँचले ?
–– ना, पहुँचले त दुइए जना।
–– त का मूँस बिलाई के पीछे भाग गइल ?
–– भला कहऽ, अइसन कहीं होला ? कथा सुनावत बानीं भाई, लंतरानी थोरे ? मुँसवो घरे पहुँचल, गणेशोजी घरे पहुँचले, हनुमानेजी निकल गइले।
–– बाकिर कथा त हनुमानजी के रहे...
–– त तूहीं बतावऽ कि बस अतने बात से कि कथा हनुमानजी के ह, गणेशजी के मूँस के साथे बीच रस्ता में अकेले छोड़ दीं...!!
–– बाकिर हनुमान जी के त छोड़िए नू दिहलऽ अकेल...।
–– राम–राम... ई त भाई, भुलाइयो के कबो कहिहऽ मत। हनुमान जी आ अकेले ? सुनले नइखऽ तू, भजासु ह्रदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर ...?

एह कथहुज्जत के इहँवें छोड़ल जाय, बस अतने कहत कि कहवइया जब कथा छेड़ेला त ईहो चाहेला कि कथवो सुनवइयन के छेड़े, आ जरूरत जान पड़े, आ जरूरत आन पड़े, तो सुनवइयो कहवइया के छोड़े त नाहिंए। खुश होखे के चाहीं कि एहर–बीच, कथा–कहानी के जवन लिखापढ़ी वाला इलाका बा, तवनो में कथा–कथन जइसन कुछ आयोजन के जरिए एह दुतरफापन के साधे के जतन लउके लागल बा। आज–काल्ह, दास्तानगोई के परंपरा के, वाचिक आ लिखित दूनो तरह के कथा–कहानी से जोड़े के, कुछ अब्बर कुछ जब्बर कोशिश के खबर जवन एहर–ओहर से आवत बा, तवनो से, उमेद त बनते बा कि कवनो 'नव गति' आई। 'नव लय'। 'ताल–छंद नव'। जइसे कि ईहे कि कहन–सुख आ सुनन–सुख के चस्का जब लागी, एक बेर फेर, त कहे–सुने के जवन सुख, बोले–बतियावे के, बत–रस के, तवनो के चाहत जागी, एक बेर फेर, आज–काल्ह अद–बद के सुत्ते–उँघाय जवन लागल बा। अउरू ना त अधिका में अभुआय ! बउआय !

एकरा खातिर, जहँवे, जइसनके, जवने जे जतन बा, जतने, ओकर, बने भ बड़ाई बतियावे के चाहीं। एहू से कि एह बहाने लिखा–पढ़ी के कहानी के कहा–सुनी में आवे के जवन अवसर मिलत बा तवना से ईहे ना कि ओकरा एक से चल के अकेले एक तक, अकेले–अकेले एक–एक तक पहुँचे के जवन नियत नियति बा, तवना से एक हद तक मुक्ति मिलत बा, ओकर एगो सहभोग कायम होता, एहू से कि ओकरा में एगो खास तरह के हिल–डुल के गुंजाइश बनत बा। अँइसे, कि ओ. करा के पढ़ के, बहुत करी केहू, त केहू से कही कि तनी तूहूँ पढ़ लिहऽ, बाकिर सुनी, त सुनहीं के कही, ई कवनो जरूरी नइखे, सुनाइयो सकेला, कुछ छोड़त, कुछ जोड़त, अनभावते कुछ बदलत, बढ़ावत। ई त खैर, ना हो सके कि जइसे लोककथा के

बारे में कहल जाला, ओसहीं, अपना कवनो कहानी के बारे में केहू कबो ई कहे कि हमरा एह कहानी प अदद एगो हमरे दावा नइखे। अइसना में, अतनवो अगर कहत बा केहू कि रचाय तक ई हमार रहे, रचइला के बाद ई खलिसा हमरे ना रह गइल, त ईहो 'एक डेग लोककथा के ओर' त बड़ले बा। लोककथा के साथे ईहे ना खाली कि ओकरा रचना प केहू एक के दावा ना, ईहो कि एह नाते ओकरा प एकेक के दावा। कवनो एक मनई के रचना ऊ ना ह, आ एही नाते मनई–मनई के रचना ऊ जरूर ह। ओकरा के एगो केहू ना रचल, आ जे–जे कहल ओकरा के, से–से रचल। जे–जे सुनल, से–से रचल। जवना 'जब' में ऊ कहाइल, तवन 'तब' रचलस ओकरा के, जवना 'जहाँ' प कहाइल, तवन 'तहाँ' ओकरा के रचलस। ओकरा कहवइयन–सुनवइयन के घर–परिवार, उन्हनी के सुदिन–दुर्दिन, उन्हनी के चाहत–राहत, उन्हनी के भीतर भरल नेह–छोह, गम–गुस्सा –– सब–सब ओकरा के रचलस, आ तब्बो ओकर रचाइल अभी पूरा ना भइल। ऊ अबहिंयो बाकी बा आ कबहिंयो बाकिए बा ...। ओकर ई बाकी भइल सनातन बा, सदा सनातन। ओकरा एह बाकी बचल के रचत रहे के, सतत रचत रहे के, जवन जिम्मेवारी बा, ऊहो सदा सनातन बा। ई जिम्मेवारी, फिलहाल, हमन के बानीं जा एह समय में, त हमन के बा। एह जिम्मेवारी से भागब जा हमन के, त बेशक ई कहत पावल जाइब जा, भरसक त एगो हहास बन्हले 'हाय के साथे, कि हाय, अलोप होत जात बाड़े जा हमन के लोककथा, बिलोप भइल जात बाड़े जा हमन के लोकगीत, बिलात जात बाड़े जा हमन के लोकलीला, अब–तब में बाड़े जा हमन के लोकगाथा, अलप होत जात बाड़े स हमन के, महाप्राण रहले जा जवन, तवन कुल्हि कहाउत ... !

ई कुल्हि हमन के कह सकींले, ई विलाप–धुन हमन के हो सकेला, विजयदान देथा के, बिज्जी के, ना हो सके। लोककथा के ऊ जब–जहाँ–जइसन–जइसे–जतना जोहले तब–तहाँ–तइसन–तइसे–ततना पवले। ना ऊ कवनो लोककथा के, ना लोककथा कवनो उनकर कवनो बात के अनसुन कबो कइलन। दूनो जन एक–दूसरे के कहत रहल, कहत रहल आ रचत रहल, रचत रहल आ कहत रहल। रच–रच के बिज्जी, ओनहन के रचबो ना कइले, कहले में रचले, अँइसे रचले जइसे कहे वाला ना रचत होखे, कहाय वाला कहानिए रचत होखे अपना के, अँइसे रचले, कि उन्हनी के रचात रहला के कहे पवले।

बाकिर, एकरा के लेके नाउमेद भइला के खास कवनो जरूरतो नइखे बुला। लोक–लगल सब–सब भा ाा के देथा ना मिलले, त एकर मतलब ईहो ना कि मिलबे ना करिहें ,मिलिहें, ई सृष्टि अबहीं कतना दिन के भइबे कइल ! ओंइसे, बिज्जी राजस्थानी लोककथा कहले, ई कहल जतना सही बा, ईहो कहल ओसे कम सही नइखे बुला, कि ऊ भोजपुरियो लोककथा कहले, बुंदेली आ गढ़वाली आ अउरियो–अउरी लोककथा कहले। कवनो लोककथा जवना भाषा–भूगोल के होला, ओह भाषा–भूगोल के त होइबे करेला, बाकिर खाली ओही भाषा–भूगोल के ऊ होखे, अउरी कवनो भाषा–भूगोल के ऊ होइबे ना करे, अइसन त ना होला। ऊ तनिका बढ़ के भा घट के भा बदल के कवनो भाषा–भूगोल के हो सकेला। आ तय बात ईहो कि ई बढ़ाव भा घटाव भा बदलाव खलिसा भाषा–भूगोल के बदलला से ना आवे, कथा के कहवइयो–सुनवइय के बदल गइला से आ जाला। इहाँ ले कि ईहो जरूरी नइखे कि ऊहे कथा, ओही से, दोहरियाइयो के, ऊहे सुने, तब्बो, ओकरा ऊहे कथवा सुने के मिले जवन ऊ पहिला बेर में सुनले रहे।

तब्बो, लोककथा के कहन के जवन तौर, जवन तरीका, जवन कहन–लत, तवन हर लोक–लगल भाषा के आपन, आ हिन्दी खातिर, खड़ी बोली हिन्दी खातिर, ई अनमोल एगो अवसर। हिंदी के अगर सचहूँ 'हिंदी' होना बा, 'हिंद–के', 'हिंद–का', 'हिंद की' होना बा, त एह तमाम–तमाम कहन–तौर के, कहन–लत के, ओह सब–सब भाषा–बोली से सँचे–सहेजे के होई। बड़ा आ कड़ा मशक्कत से ओकरा के अरजे के होई, ओह अरजल से सिरजे के होई। बाकिर विद्वज्जन ! अतने ले त नइखे। हमन के कहन–कला के छिजला में, आ लगातार छिजला में ओह बड़–बड़ छरदेवालन के बड़हन हाथ जवना से हमन के अपना विश्वविद्यालयन, महाविद्यालयन से लेके संसदादिक तक तमाम संस्थन को घेरवट के रखले बानीं जा, अपना लोक से उन्हनी के, आ उन्हनी से अपना लोक के भरसक बेलाग कके रखले बानीं जा। अपना खातिर विकास के जवन रूपरेखा हमनी के तय कइले बानीं ओमें लोक से परे आ परहेजी अइसन इलाकन के मात्रा आ आयतन में इजाफा त दिने–दिने होखते जाय के बा, जवना के तरफ रुख करत आम आदमी के कलेजा काँपत रहेला, गोड़ थरथरात रहेला, जुबान तालु से चपक जाला।

अइसना में, कहे के त कहले जा सकेला कि कहन–कला त तब जागे जब जुबान तालु से छूटे ! बाकिर कहे के बात बुला ई बा कि बाहर के कवनो भयावन–भेयरनक नइखे चपकवले जुबान के तालु से। भितरवे के भय चपकवले बा। भइल बस अतनवे बा कि ओह भीतर के भय के 'ना' कहे के, ओकरा के बरिजे–बहरियावे के कला से, लूर–सहूर से हमन के बिछड़ गइल बानीं। सुदूर बचपन में कवनो कथा के कवनो बित्ते भर के 'भरबितना' के कवनो "आ जा बा जा कान में समा जा 'जइसन अमोघ मंत्र के, पता ना, दिहले ना गइल हमन के, कि लेबे ना

कइलीं जा हमनी के, कि लेले ना गइल हमन से ! पता ना, "का खाईं का पीहीं का लेके परदेस जाई" वाला अपना सवाल के साथे बड़े–बड़न से चोंच लड़ावत चिरई के महाभियान में हमन के शरीके ना कइल गइल, कि शरीक भइबे ना कइलीं जा हमन के, कि हमन से भइले ना गइल !

कुछ त अइसन भइबे कइल, जवन होखे के ना चाहत रहे, आ भइल; आ अ कुछ त अइसन होखे से रह गइल, जवन होखहीं के चाहत रहे, आ ना भइल। जवना के चलते हमन के ई देश अक्सर बोले के जगहा प चुपाय लागल, चुपाय के जगहा प चिकरे–चिचिआय लागल। बाकिर ईहो बा, कि एके लेके अगर एह देश में कहीं कवनो चिन्ता बा, चिहुँक बा, तो निचिन्त भइल जा सकेला कि ईहे अन्त ना ह।

त अन्त में, ईहे कहे के बा कि अन्त ई ना ह। हमन के पता बा कि कथा बन में चल जाला, तब्बो सोचे खातिर मन में रहिए जाला। त तय बात कि अन्त ना ईहे, ना इहँवे, ना कतहीं। ना अबहीं, ना कबहीं।

एह अन्त के ना भइला के लेके अनन्त कथा–कहनी। उन्हनिए में से एगो, छोटी–मुटी, रउरो सुन लीं। असहीं। एगो जवन 'कथा–वार्ता' ह, कथा आ वार्ता के जुगल जोड़ी, ऊ कायम रहे हमन के एह लोक में, कि कायम रहे हमन के ई लोक, आ हमनियो के, कुछ आउर ना, त बस एही नेवर्तक।

त कथा ह कि एगो राजा रहन। एगो उनकर बेटी रहे। राजा बेटी के मानें बहुत। बेटी सेयान भइल। रानी राजा से कहली कि राजा जी, बेटी सेयान भइल, शादी करा दीं। राजा बेटी के मानें बहुत, राजा ना सुनले। तब मंत्री–संत्री कहले, टोला–पड़ोस कहल, हीत–मीत कहले, आवत–जात राही–बटोही कहले कि राजा जी, बेटी सेयान भइल, शादी करा दीं। राजा बेटी के मानें बहुत, राजा ना सुनले। अंत–पंत बेटिए कहली कि बाबूजी, हम सेयान भइलीं, हमार शादी करा दीं। राजा बेटी के मानें बहुत, राजा के सुना गइल। राजा बरतुहार में निकलले, पूरुब गइले, पच्छिम गइले, उत्तर गइले, दक्खिन गइले, बाकिर, राजा बेटी के मानें बहुत, लायक कवनो बर मिलल ना, घरे आके बइठ गइले। बेटी से कहले कि बेटी, हम पूरुब गइलीं, पच्छिम गइलीं, उत्तर गइलीं, दक्खिन गइलीं, तहरा लायक कवनो बर मिलल ना, घरे आके बइठ गइलीं। बेटी कहली कि बाबूजी, रउरा मत जोहीं, पंडित से जोहवाईं। राजा बेटी के मानें बहुत, पंडित के बोलवा लेले। उनुका के खाना खियवले, पानी पियवले, पान चभवले, दछिना देले। पंडित खाना खइले, पानी पियले, पान चभले, दछिना लेले। पूछले कि राजा जी, का हुकुम ? राजा कहले कि पंडित जी, हमार एगो बेटी। बेटी के हम मानींला त बहुते, बाकिर का, कि एक दिन ऊ सेयान हो गइल। जवना दिने सेयान हो गइल ओह दिन ऊ कहलस कि बाबूजी, हम सेयान हो गइलीं, हमार शादी करा दीं। हम पूरुब गइलीं, पच्छिम गइलीं, उत्तर गइलीं, दक्खिन गइलीं, लायक कवनो बर मिलल ना। घरे आके बइठ गइलीं। बेटी से कहलीं कि बेटी, हम पुरुब गइलीं, पच्छिम गइलीं, उत्तर गइलीं, दक्खिन गइलीं, तहरा लायक कवनो बर मिलल ना, घरे आके बइठ गइलीं। बेटी कहली कि बाबूजी, रउरा मत जोहीं, पंडित से जोहवाईं। हम रउआ को बोलवा लेलीं। रउआ के खाना खियवलीं, पानी पियवलीं, पान चभवलीं, दछिना देलीं। रउआ खाना खइलीं, पानी पियलीं, पान चभलीं, दछिना लिहलीं। पुछलीं कि राजाजी, का हुकुम ? हम कहलीं कि पंडित जी, हमार एगो बेटी। बेटी के हम मानींला त बहुते, बाकिर का, कि एक दिन ऊ सेयान हो गइल। जवना दिने सेयान हो गइल ओह दिन ऊ कहलस कि बाबूजी, हम सेयान हो गइलीं, हमार शादी करा दीं। हम पूरुब गइलीं, पच्छिम गइलीं, उत्तर गइलीं, दक्खिन गइलीं, लायक कवनो बर मिलल ना। घरे आके बइठ गइलीं। बेटी से कहलीं कि बेटी, हम पुरुब गइलीं, पच्छिम गइलीं, उत्तर गइलीं, दक्खिन गइली, तहरा लायक कवनो बर मिलल ना, घरे आके बइठ गइलीं। बेटी कहली कि बाबूजी, रउरा मत जोहीं, पंडित से जोहवाईं। हम रउआ के बोलवा लेलीं। रउआ के खाना खियवलीं, पानी पियवलीं, पान चभवलीं, दछिना देलीं। रउआ खाना खइलीं, पानी पियलीं, पान चभलीं, दछिना लिहलीं। पुछलीं कि राजाजी, का हुकुम ? त हम कहलीं कि पंडित जी, हमार एगो बेटी। बेटी के हम मान.ींला त बहुते, बाकिर का, कि एक दिन ऊ सेयान हो गइल। जवना दिने सेयान हो गइल ओह दिन ऊ कहलस कि ...

त कहत रहीं, सुनत रहीं। जेकरा से जतना बने। हमरा से त अभी अतनवे बने पावल। ●●

❑ शिव, 5/41ए आर–2, लक्ष्मणपुर पो0 शिवपुर, वाराणसी–221002, मो.नं. 9415290286

सधल आ सचेत रचनाशीलता के कवि

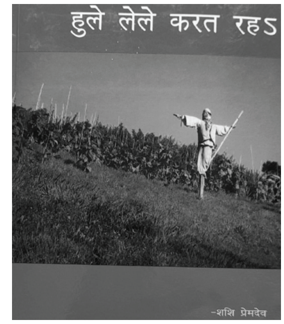

अशोक द्विवेदी

शशि प्रेमदेव, अपना कविताई, खासकर ग़ज़ल का शिल्प (फार्म) में, छान्दसिक अनुशासन का दिसाईं सचेत कवि हउवन। असरदार भाव–अभिव्यक्ति खातिर जवना हुनर आ अभ्यास के जरूरत होला, ऊ उनका में बा, एकर प्रमान ऊ अपना सुनियोजित शब्द चयन आ सधल कलम से देले बाड़न–

साँच के कइसे छिपावल जा रहल बा : देखि लऽ
लाश के पानी चढ़ावल जा रहल बा : देखि लऽ
भूख से छपिटात ओ लरिका के फुसिलावे बदे
चूल्हि पऽ कंकड़ सिंझावल जा रहल बा : देखि लऽ

संवेदन आ अनुभूति के अपना कल्पक–शक्ति (फैन्सी) से सँवारे आ बयान करे क हुनर शशि जी में नैसर्गिकरूप से मौजूद बा। 'पाती'–71 (मार्च, 2014) प्रेम कविता विशेषांक में छपल उनका रचना में स्मृति–बिम्ब का अरथवान उरेह से, शेरन के सुघराई त बढ़ते बा, बयानो पुरअसर बनि जात बा! भोजपुरी भाषा का भाव–गति का साथ, पहिले से कहलको के नया करे क काव्य–प्रतिभा शशि प्रेमदेव में, उनकर खूबी बनिके उभरत बा–

तड़पल आ छपिअटाइल होई, असहीं राति ओराइल होई
मन के ठेस लगा के हमरा, ओकरो नीन न आइल होई

जइसे हम लाचार परिन्दा, मरजादा के पिंजड़ा कऽ
ओसहीं शायद लोक–लाज में, ओकरो गोड़ बन्हाइल होई

प्रेम के पाग में पगाइल उनकर कुछ अउर शेर देखीं–

नेहि बरसल, तरी हो गइल/धूर जिनगी धनी हो गइल
आँखि में आँख जब डालि के/ ऊ हँसल.....झुरझुरी हो गइल

एतने ना; अपना मौलिकता आ प्रयोगधर्मिता से अक्सरहा चौंकावे वाला ई कवि जब कवनो गीत–एलबमो खातिर गीत लिखे चलल बा, तऽ उहँवों ओतने प्रभावित करत बा–

'ए जी, सुनीं' कहि के बोलावेलू तऽ, साँचो बड़ा नीक लागेला!
मीठि बोलिया क मदवा चुवावेलू तऽ, साँचो बड़ा नीक लागेला!!

समय का सचाई के समुझे–बूझे आ जाने के बाद, ओपर सीधा कमेन्ट ना कइ के, परोक्ष कहल आ सांकेतिक 'टोन' में कहल, ग़ज़लकार के खासियत होला, आ ई खासियत शशि प्रेमदेव का कविताई में बा–

दरिन्दा त बाटे लुकाइल 'सदन' में/शिकारी के भेजल गइल बा विजन में
गइल ना सिवाने से दुर्गन्ध तब्बो/ जरावल गइल घीव केतनो हवन में

समाजिक, राजनीतिक आ जीवन–सन्दर्भ में, बिसंगति आ जथारथ के सचाई, कवि अपना शैली में अपना ढंग से

बयान करेला। ई बयान अगर मौजूँ आ सटीक ना होई त पढ़वइया–सुनवइया में असर ना पैदा करी। शशि प्रेमदेव में ई हुनर बा कि का कहल जाव केतना। ईहे ना, उनका में लोक राग आ प्रचलित लोकगायिकी का लय– बिधान में गीतो लिखे के कला, अपना भाषाई–टोन का साथ मौजूद बा। चिउँटी काटे वाला ढंग से, राजनीतिक व्यंग करत उनका एगो गीत के आनन्द लीं–

मीलल बा कुर्सी त फैदा उठा लऽ!
कीनि लऽ ना, सइयाँ, जहजिये हवाई!
–समाजवाद सइकिल प कबले ढोवाई?

एह् गीत में समाजवाद के दुसरका ऊ चेहरा देखावे क कोसिस बा कि जेकरा आड़ में बिधायक/सांसद बनला के माने–मतलब का बा! जनभावना में बिधायक जी के घरनी क सोच का बा! शशि जी प्रचलित लोक धुनन पऽ अउर कइ गो गीत लिखले बाड़न जवना में राजनीतिक भ्रष्टाचार, नव सामन्तवाद आ लइकिन का सँगे होखे वाला भेद–भाव जइसन विसंगतियन के धारदार आ जियतार चित्रण बा।

अपना समय आ सन्दर्भ का दिसाईं जागल कवि ओह् सचाइयन आ ओकरा भीतरी छिपल ओह् असलियत के उजागर करेला, जवन मनुष्य आ ओकरा समाज के दिशाहीन, दिग्भ्रमित आ मानव–मूल्यन के ह्रास करत होखे। ऊ हर बदलाव के रेघरियावत, मनुष्य का चेतना के जगावेला। शशि प्रेमदेव अपना कविताई से ई साबित करत बाड़न कि ऊ देश–काल का दिसाई तटस्थ नइखन आ हर अनेत–अन्याय पर निडर होके उनकर कलम एही तरे रचनात्मक दखल देत रही.....

अंत में हम शशि प्रेमदेव के सुखमय, सक्रिय अउर दीर्घ जीवन कऽ आशीष देत बानीं आ आशा करत बानीं कि उनका एह् संग्रह "हुले लेले करत रहऽ!" के भोजपुरी साहित्य जगत से खूब नेह–छोह आ सम्मान हासिल होई!●●

शशि प्रेमदेव के पाँच गो कविता

(एक)

मोथा कऽ का खाक बिगारी।
आन्ही महुआ - आम उखारी।

घर में सुघ्घर बेटी....मतलब
साँसत में बेवा-महतारी।

आँगन से लउकी ना जल्सा
छत पर गइले लोग निहारी।

हाहाकार मचल जंगल में
जसहीं चलल शहर से आरी।

हमरा-तहरा छपिटाइल से
मउवत आपन 'डेट' न टारी।

खोंता में जगहे कतना बा
कइसे चिरई पाँखि पसारी।।

(दू)

भले ऊ डकइती करत खा मराई।
शहीदे क ओकरो के दर्जा दिआई।

रहल जे कसाई, इलेक्शन का पहिले
इलेक्शन का बादो रही ऊ कसाई।

मुहब्बत अयोध्या क झगड़ा त हऽ ना
कि राजा से परजा ले फैदा उठाई।

बइठि के जो खाई त कहिया ले केहू
नवरसा का बल पऽ 'बड़कवा' कहाई।

बजट तऽ सितम्बर में जारी भइल बा
मई में, गरीबन ले पहुँची रजाई।

देखइहऽ कबो जिन उ दिन, ए विधाता
जरीं देखि के, आन कऽ हम कमाई।

बना के 'शशी', फेरु जनता के उल्लू
सियासत, तवायफ-मतिन मुस्कियाई।

(तीन)

आबादी पऽ जबले अंकुश लागी ना
तै बाटे भारत कऽ किस्मत जागी ना।

ईहे टीपन में एकरा लिक्खल बाटे
ए धरती से दुक्ख-दलिद्दर भागी ना

लार चुवाई ऊ असहीं-कश्मीर बदे
कुक्कुर हऽ....हड्डी कऽ मोह तियागी ना।

मन्दिर, मस्जिद में पटरी खाई कइसे
पानी के कब्बो सहि पाई आगी ना।

हम तऽ बुझलीं-जब आपन सरकार बनी
एक्को पइसा घूस-कमीशन लानी नां

साँड़ कहइहें कइसे ऊ जबले केहू
धिक्कल सरिया से उनुका के दागी ना।

(चार)

सज्जी कसूर सरकारे कऽ बाटे.....
हँ हजूर
सज्जी कसूर सरकारे कऽ बाटे!

का आन्ही-तूफान, बाढ़ि
का गरमी, का सरदी
हर बीपत-बलाई का पाछा
ऊहे बे-दरदी
ओकरे कारन चटकत जीभ इनारे कऽ बाटे!

ओकरे चलते भीड़-भड़क्का
मइल् भइल गंगा
ऊहे बिया नचावत
नारी अस्मत के नंगा
हमनी खातिर ऊहे बोझ कपारे कऽ बाटे!

सरकारे का डरे पराइलन
देवर-भउजाई
अउर गबन में जेहल गइलन्
जुम्मन कऽ भाई
सरकारे नूँ बैरी गाँव-जवारे कऽ बाटे!

सूध-दूध कऽ धोवल
परम-पबित्तर हम जनता
चिक्कन-चाकन
शालिग्राम कऽ पत्थर हम जनता
कद, हमहन से ऊँचे इहाँ, अवतारे कऽ बाटे!

(पाँच)

‘समाजवाद साइकिल प’ कबले ढोवाई?
मीलल बा मोका त फैदा उठा लऽ!
कीनि लऽ ना सइयाँ, जहजिए-हवाई!
-समाजवाद साइकिल प’ कबले ढोवाई?

साइकिल बा अब्बर, निकसि जाई हावा!
नेता जी, एकरा के रखि दऽ फलाँवा!
-साइकिल के अब्बो जो करबऽ सवारी
बाड़ऽ विधायक- इ कइसे जनाई?

जिप्सी, बुलेरो, पजेरो, सफारी...!
पलड़ा जहजिया क ‘सबका प’ भारी!
-गँउवां निहारी, नगरिया निहारी
मूँहे देआदन के करिखा पोताई!

सरधा पुरावे क ईहे बा मोका!
करबऽ जो देरी त हो जाई धोखा!
-बेरि-बेरि किरपा ना करिहें भवानी
फेर-फेर अइसन सुतार ना भेंटाई!

कुर्सी के तूहूँ कलपबृच्छ बूझऽ!
गाँधी के छोड़ऽ, तिजोरी के पूजऽ!
-बनि जा बे-सरम, ‘शशी’, दूनो हाथे
लूटऽ बिटोरऽ कि सात पुश्त खाई!
-समाजवाद सइकिल प’ कबले ढोवाई!

(छह)

-जेकरा पऽ इल्जाम रहल कि ईहे बाग उजरले बा
फर लागल त देखलीं सबसे पहिले फाँड़ पसरले बा

अब का बाँचल बा जवना पऽ आँख गड़वले बा दुनिया
सज्जी साध निछावर कइलीं तब्बो मूँह उतरले बा

फरका से ऊ केतना चिक्कन गुदगर आ रसगर लागल
बखरा में आहत त देखलीं कउवा ठोर रगरले बा।

नेह छोह ले बढ़ि के कवनो ताकत नइखे दुनिया में
तितली के आन्हीं में देखऽ, कइसे फूल सम्हरले बा।

कारन का बा-पात पात पऽ आज छिटाइल बा मोती
सुसुकल बा आकाश कि भींजल केस केहू झटकरले बा।

❑ प्राचार्य, कुँवरसिंह इ० कालेज, बलिया

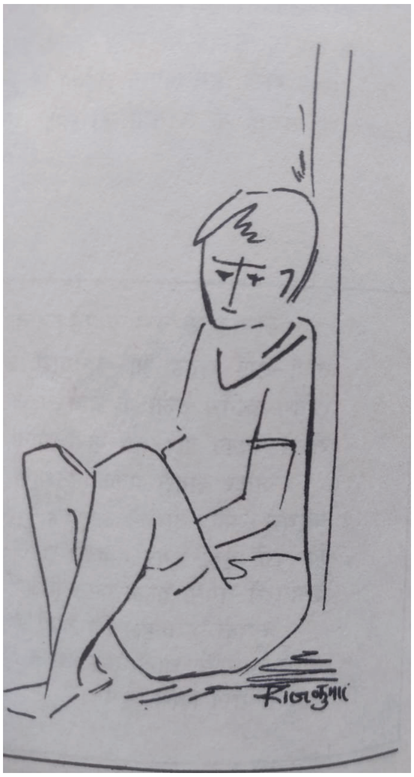

सन्यास के नेवता

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

नेवता देखते मन चकट गइल। आहि दादा, हे भदवारी में ई बिआह के नेवता कहाँ सं गिरधारी भगत बहरा के नेवता जल्दी दुअस ना, दोसरे से पढ़वा लेस। अपने छूइहें त ओकरा पहिले हाथगोड़ धो के मुँह में कुछ डलिहें–मुँह मीठ मरिहें तब भोले बाबा` नाम लेके नेवता के लिफाफा खोलिहें। अब त नेवता लेके आवे वाला हजाम ठाकर लोग दुलुम हो गइल।

समाचार रहे कि गजेन्दर बाबू आपन घर–दुआर त्याग के साधू बने जात बाड़े। इलाका के जानल मानल आदमी कवनो काम करेला त होल पब्लिक के खबर कर देलां एह से हित–कुटुंब के नेवता पेठवले कि अगिला दस तारीख के सभे भोज में सामिल होखो। एह नाशवान देह के कवनो ठीक नइखें, देश आ दानाई कवनो रसातल में डूबल जाला। एह छहतरी दुनिया के देखहीं में उमिर तिरपन साल पर जा चहुँपल। सगरो से नेहनाता तोड़ के अब भगवान से लौ लगवले में भलाई बा। ई अनाज–पानी, धन–दौलत आ बाल बच्चा में आदमी कबले भरमाइल रहीं। सभे पधारो आ दावत में खा–पी के गजेन्दर जी के आसीरबाद देव जवना से उनकर संन्यास मार्ग के विघिन–बाधा दूर होखे।

बिआह के नेवता ना भइला से बहुत लोग के चित्त के शांति मिलल। ना त एह साल के कड़ा लगन में एके दिन में चार–चार, पाँच–पाँच गो नेवता–शगुन करे में चेंट के हालत खस्ता हो जात रहे। गजेन्दर बाबू के नेवता में खाली भोजन आ सन्यास के जिकिर रहे। अब ई पता नइखे चलत कि ऊ अचानके साधु बने के काहें सोच लिहलन। परिवार में आपन मेहरारु आ लड़िकन से कवनो खटपट त सुने में आइल ना। एगो बात बहुत साल पहिले पता चलल रहे कि मोकदमा में हरला के बाद ऊ इनार में कूद के जान देबे पर तइयार रहले। एगो गोड़ लटका के अबहीं ढेंकुल के रसरी पकड़लहीं रहले, तबे लोग देख लीहल। पाँच जाना उनकरा के घींचघांच के बाहर कइलें। ओही घरी इनार से मुक्ति मिल गइल रहित त आज हई संन्यास के कवन जरुरत रहे।

गिरधारी भगत तइयार भइले। नाहियों त तीन कोस जमीन नापे के रहे। आपन मो. टर साइकिल के पेट्रोल टंकी लीक करत रहे। ऊ मेकेनिक के दोकान में पड़ल रहे। पड़ोसी के जीप रहे मगर एह घरी ओह लोग से बोल–चाल बंद रहे। एह से जीप माँगल जायज ना रहे। अब अन्हार होखे लागल। तले उनकर सरपुत आपन मोटर साइकिल दउड़वले आ गइले। नया मोटरसाइकिल पा के ओकर आवारागर्दी बढ़ गइल रहे, रास्ता में केहू के ठोकर मार के, फूफा के लगे लुकाए आइल रहे। गिरधारी भगत दोसरा राह से ओकरा के साथे लेके निकल गइले।

गजेन्दर बाबू के दुआर पर साँझ होत–होत डेढ़ सौ लोग जुट गइल। आस–पास के साधू–संन्यासी भी कम ना रहले। साधू लोग के झुंड में निर्गुन भजन चलत रहे। अब गजेन्दर बाबू के नया गेरुआ बाबा पेन्हावे के तइयारी होखे लागल। मेहरारु लोग के आँख लोर से डबडबा जात रहे। एक जानी बुढ़ियो बोलली– 'गजेन्दर त आपन जवानी माटी में मिलावे जात बाड़े। लोग पैंसठ साल के उमिर तक आपन घर गृहस्थी सँभारेला तब कहीं संन्यासी बने के सोचेला। पता ना असली कारण का बा जे ऊ साधू बने के एक ब एक ठान लेहले।'

एगो दोसार अकिला बुला लोगन के बात पर हँसली। अभी दम धरी सभे। दू दिन मे ंसब बात फरिया जाई। अभी हड़बड़ाइल नोनिया नियर माटी मत कोड़ऽ लोग। ओने गजेन्दर बो भारी उदासी में डूबल रहलीं। आज उनकर हीरा नियर मरद माटी बने जात बाड़े। गेरुआ पेन्हा के कमंडल थमले ऊ दुनिया के कवन भलाई क दिहें। अपने घर में एतना काम पड़ल बा उहाँ के मुँह से हमरा सामने झूठो ना निमलल ह कि तुहूँ साथे चलऽ। हमरा साथे सधुआइन बन के रहिहऽ। बड़–बड़ साधू–महंथ लोग आपन–आपन सधुआइन साथे रखेला। आ एने आपन कानून इहें का अलगे रखींलें।

भोज में लोग खूब अड़च के खाइल। हलवाई लोग के दल, पूड़ी–कचौड़ी, खीर, सब्जी बनावे में जुटल रहे। तबले हल्ला हो गइल कि आसमान बदरी से लदर गइल बा। कहीं भगवान जी आ गइले त सब व्यंजन पानी में छिलबिल हो जाई। खाइल–पीअल जल्दी–जल्दी खतम करीं लोग। सभे पहिले भोजन में लागल। संन्यास के प्रोग्राम बादे में होई। संन्यास के पगड़ी, जोड़ा–जामा जवना महात्मा के हाथे पेहनावे के रहे उनकरा पेट में अचके बाथा उपट गइल। पेट में खीर–पूड़ी के अधिका मात्रा चहुँप गइल रहे। गजेन्दर बाबू तीम हाली आके उनकर हाल–चाल पूछ गइले। डाक्टरो आके कहले कि साधू बाबा के पेट से पहिले खीर–पूड़ी निकालने का उपाय किया जाएगा तब दवाई दी जाएगी। खरबीरवा दवा धांय–धांय दियात रहे, बाकिर बाबा के पेट फूल के नगाड़ा भइल रहे। दरद नरम ना पड़त रहे। ढेकार भा गैस–फैस गुमसुम रहे। बाबा आँख मूँदले पड़ल रहले। एगो संतमूर्ति प्रवचन देबे में लागल रहले–मुनष्य जितना ही छटपटाता है, ममता की रस्सी उतनी ही कसती जाती है।

सवाल रहे कि गजेन्दर बाबू के सन्यास देबे के जिम्मा सुखारी बाबा के संउपल गइल रहे। आ उनकर हालत अइसन हो गइल। कुछ बुजुर्ग लोग बतावल कि सन्यास ग्रहन करे के जब दिन–मूहूर्त रोपा गइल बा त ई काम ओही मुहूर्त में कइल उचित होई। बेमारी प केकर बस बा? संत–साधू लोग एही तरे बेमार पड़त रहेला आ भगवान के कृपा होते उठ बइठेला। एही भोज के हउँजार में दूचार आदमी अइसनो आइल रहले जेकरा गजेन्दर बाबू से कुछ विशेष बात करे के रहे। सन्यासी बनते गजेन्दर बाबू कहीं पिछला हिसाब भुला गइले तब त भारी घाटा लागी।

गजेन्दर के बहत्तर साल के बपसी दोसरे चिन्ता–फिकिर में घुलत रहले–बबुआ, तू त साधू बनके घर से चल जइबऽ। फेन कोर्ट कचहरी में तीन बीगहा खेत पर आठ साल से मोकदमा चलत बा त ओकर का होई? हमरा जइसन बूढ़ पुरनिया से अब केतना सपरी। ओने बीसनाथ चौधरी गजेन्दर बाबू के कान में धीरे से कहले–ट्रैक्टर वाला साढ़े छ सौ रुपिया आज तक ले बाकिए रह गइल ए बाबू। एगो कुर्सी प कोना में बइठल समधी जी आँख पोंछत गजेन्दर से कहले– शादी वाला चार हजार हम छोड़े के तइयार बानी बाकिर अपने भी आपन हठ त्याग के घरे प रहीं। एह उमिर में राउर साधू–सन्यासी बनल सोभा नइखे देत। गजेन्दर सबके बात चुपचाप सुन लेहले। मुहूर्त हो गइल। दोसरा साधू के हाथ में गेरुआ वस्त्र दिया गइल। सुखारी बाबा के हालत में कवनो सुधार ना भइल। तले एही बीच पड़ोसी में भुसउल में आग लाग गइल। भगदड़ मच गइल। लोग आग बुतावे लागल। गजेन्दर के भुसउल लगहीं रहे। ओमे नौ बोरा गेहूँ धइल रहे। गजेन्दर कूद–कूद के भुसउल में बाल्टी से पानी फेंके लगले। अब दोसरे चिलफिल लाग गइल।

एगो आदमी आके बोलल– ए गजेन्दर बाब. ू। सुखारी बाबा के हालत ठीक नइखे। एने सन्यास लेबे के घड़ी बीतल जात रहे। केहू– साधू–संन्यासी लोग घड़ी–मुहूर्त के फेर में ना पड़ेला। सुखारी बाबा के खटिया प लेटा के अस्पताल ले जाए के तइयारी भइल। गजेन्दर के मन फिकिर में पड़ गइल। सन्यास के बाना धारण करे से पहिले सुखारी बाबा के प्रान बचावल जरूरी बा। अस्पताल चहुँपते डाक्टर कहले–अब दवा–बीरो बेकार बा। बाबा बैकुंठ लोक चल गइनी।

उहे सन्यासवाला गेरुआ बाना बाबा के पेन्हाके समाधि दे दीहल गइल। लोग कहे लागल– सन्यास के नेवता सहल ना। सन्यासी के मुअला से नेवता नसा गइल। एह गाँव में अइसन भोज अब कबो ना होई। घरे लउटत बेर गिरधारी भगत के मन में केतना सवाल उमड़त रहे– नेवता में कवन दोष रहल ह भाई। बूढ़ महात्मा अपन पेट के औकात से बाहर ठूंस–ठूंस के खा लेहले। पेट प अकरहर होई त मुँह–पेट चलबे करी। बाबा के मुँह–पेट बैकुंठधाम तक चहुँपा देहलस। जेकर मन भूसा–अनाज से मुक्त नइखे ओकर सन्यास साधल कठिन बा। भुसउल के आग जबले बुताई ना तबले सन्यास के संकल्प पूरा ना होई। ई बात लोग समुझत रहे मगर गजेन्दर के मन में ढुकत ना रहे।●●

❑ टॉवर-1/601, बेवरली पार्क अपार्टमेंट, सेक्टर 22/2, द्वारका, नई दिल्ली-110077, 955393538

पिल्ली के प्रेम

राजगुप्त

बहुते बरिस पहिले के बाति हऽ, नीक से इयाद आवता। हमरा घर के बगल में एगो गली रहे। अब्बो बा। जहवाँ दोकान के घोड़िया पर राति खां एगो पिल्ली आ के सूते। ओकरा रपटा पड़ि गइल रहे। सबसे नीक बाति इ रहे कि कवनो प्लास्टिक चाहे कागजो हवा में खड़खड़ाऊ त बाति बाति पर भोकें। बेगर दाम के पहरेदार? रंग लागे ना फिटकिरी रंगवो चोखा होय। बहुते करकस बोली। कब्बो–कब्बो तक टिटिहरी अइसन टरटरा देउ जेसे ओघहीं टूटि जाऊ, कबो खिसियो बरे, कहां से गली में एकरा के सरन मिलि गइल? ओकरा पहरेदारी से मन खुश रहे। सभकर भला करे भगवान।

अइसहीं कुछ दिन बीति गइल। जाड़ा के दिन रहे। कवनो जरूरी काम से जाये के रहे। छोट रस्ता गली परे जाये लगलीं। अचकने पिल्ली पर नजर पड़ल। जवन अइसन किकुर के बइठल रहे कि जनाव कि कुछ चतले बिया। एही बीचे पिल्ली के अँकवारी में कुछ हलचल भइल। कुईं–कुईं–कुईं के आवाज मिलल। बूझि गइली बिआइल बिया। किकुरी मारि के अइसन लमहरे पटाइल रहे कि झटका से केहू देखि के पतिआइत नाहीं कि अपना बच्चन के जाड़ा पाल्ला में हें तरे लुकववले होखी। कोईं–कोईं कऽ के बच्चा हिलले से पिल्ली गोड़ तरेर्रलसि। छवगो मूस लेखा गोड़ लउकल। समुझि गइली एह पारी तीनिगो बिआइल बिया। पिछला साल पाँच–छवगो रहे।

मूस माछी से बच्चन के डर रहे कि कटिहें कुटिहें स। एही से भर अँकवारि अपना बच्चने के लुकववले रहे। काहें से कि जाड़ा–पल्ला देहि के गर्मी के आगा ओढ़ना कऽ गर्मी में ना काम करेला। एगो दूसरा बाति के अउरी डर रहे कि लड़िका–फड़िका पोसे भा खेलावे के लेके भागि जाले। बच्चन के चारू ओरि से डरे बनल रहेला। पछिला साल कुल्हि पिल्लन के लेके लड़िका भागि गइल रहले स। काहें से कि पिल्लन के अकसररूआ छोड़ि के पिल्ली खाना खोराकी खातिर एने ओने बउड़ियाये के पड़ेला। एह पारी बड़ी नीक से चाँति–चूति के अपना अँकवारी में तोपले रहे। भूइयां बिछौना आ अँकवारि गरमे गरम रजाई। एह पारी एगो टूटही ठेला के तरे जाके लुकाइल रहे।

आजु कई हाली ओही गली पड़े आवे जाये के परल ह। बेरि–बेरि नजर पिल्ली पर पड़त रहे। देखली, खाना खोजे खातिर कतो नाहीं बच्चन के छोड़ि के गइल ह। सांझि खां एकबएके पिल्ली के इयाद पडुवे जवन आवे–जाये में बेरि–बेरि हमके घूरि–घूरि देखत रहे। जरूर हमरा से आंखिये–आंखि से कुछ कहल चाहतिया। पिल्ली के आंखि पनिगन बुझात रहे। लोर पपनी पर आके सूखि गइल रहे। जेसे ओकर आंखि काजर लेखा लागत रहे।

आंखि में निरीहता के भाव रहुवे अइसन हमरा के बुझउवे। जइसे कातर भाव से कुछ याचना करत रहुवे। हम मेलछि गउवीं। घरे जाके दूगो रोटी आ गुड़ ले के झटपटाहे लवटलीं। पिल्लन के चोरी के वजह से छोड़ि के कहीं जात नइखे। बे खइले–पीयले महतारी–बच्चा दूनू हरकि जइहें। रोटी गुड लेके तेजे अइलीं। पिल्ली के पासे पहुँचली। रोटी गुड पिल्ली के मुँह की ओर बढ़वली। हाय भगवान! ई का? पिल्ली आपन मुँह फेरि लिहलस। पिल्ली के इ रहनि देखि के खीसि बरल। सोचलीं छोड़ि के लवटि जाईं। बाकिर छने में दया–भाव से भीजि गइलीं। पिल्ली के कपार सुहुरावत कहली कि खा लऽ माई, खा लऽ। ना खइबू त दूध कइसे उतरी? बाल–बच्चा कइसे पोसइहें पलइहें?

मन में पता ना कवन भाव पेयार उमड़ि आइल रहे कि बुझइबे ना कइल कि हम कवना पोखरा के पानी में बुड़त–उतिरात बानीं। हइसन जाड़ा–पल्ला के दिन में आपन ठेकाना भुला जाय। हम के हई कहाँ बानीं। जइसे सुन्न हो गइलीं। पिल्ली के सुहुरावत सुहुरावत जब होश आइल त देखऽतानी कि पिल्ली रोटी गुड़ सूँघि–सूँघि आपन जीभि निकललसि। इची गुड़ चटलसि। मन हमार फरहर भइल। अपना शरीर में लवटलीं। अतने में सोचे लगलीं कि आखिर पिल्ली काहें हमरा से अनराज रहलि ह। हेतना भूखा–पेयासा होखला के बादो हमार अन्न पर ध्यान ना दिहलसि ह। हम जानवर के भाषा ना पढ़ि पवली। आ पछिउड़ मुड़ि पानी लिआवे चलि दिहलीं। बूझि गइलीं। पसिजि गइल बिया, खाई। लवटलीं देखलीं त खात रहे। करेजा में शान्ति मिलल निरमोहियो के जइसे मोह लागल। अब रोजिन्ना समय से साँझ

सबेरे रोटी गुड़ खिआवत रहलीं। गुड़ से दूध उतरित। जेसे बच्चा भरि सीकम पीहें स। बेर बागर जूठ–काँठ भी डाल आईं। अइसहीं करत कई दिन बीति गइल। ओह दिन खाना ले के गइली। दुवार पर पिल्ली ना लउकल। आसचर्ज बुझाइल। कपुर इत्र त हवे ना कि हवा में उड़ि जाई। अगली बगली झंकली। कतो ना लउकलि हमार के चलविधुर देखि गली बहारे वाली बोललि–

"का भुलाइल बा, बाबूजी!"

"आ हो, ना पिल्ली लउकत बिया ना बच्चा?"

"काल्हु खँटवास एकर एगो बच्चा टाँगि ले गइल।"

तब्बे से मेलछि–मेलछि आपन बच्चा खोजतिया। बच्चन के अकसरूआ देखि घुमक्कड़ लड़िका दुनू बच्चन के सुहुरावत पोल्हावत पोसे पाले खातिर ले के चलि गइले स। एगो बच्चा खोजत–खोजत दुगो अउरी बच्चन से हाथ धोवे के पड़ल। बेचारी मछलि के रहि गइल।"

गली बहारे वाली के बाति सूनि हम बड़ी पछत. इलीं। ओकरा से मन लागल–बाझल रहल ह, से बाति से अउरी अखरे लागल। मन के समझवली–बुझवलीं। अब पछता के का करब जब चिरई चरि गइल खेत।

कई दिन तकले ओकरा टाही में रहीं। आवतिया कि ना। सचला–पचाल ना पा के पटा गइलीं। चित्त पर से पिल्ली आ सुकुवार बच्चा उतरि गइले। सोचलीं टीसन लगहीं बा। ओइजे गाई–गोरू हिरल रहेले स, प्लास्टिक चबाये के मिलेला आ जूठ काठ खाये का अपना नियम सीयम में बाझि गइली। नीक से धेयान ना दे पवलीं कि राति खां सूते आवतिया कि ना? दस पनदह दिन बाद इयार के लड़की के शादी रहे। जाड़ा के दिन। बरात आवे में देरी हो गइल। इयार पीठि ठोक ठेठा के कहले। बेगर जयमाल देखले टकऽसिह जिन? राति खा रामलीला मैदान से घरे लवटत रहलीं। जान पहिचान के सज्जी लोग जा चुकल रहे। अकेलहीं रहलीं। डर भय कवन। सीना तानि के चललीं। लगन में एह बेरा आवे के धठाउर रहली। चलत चलत हनुमानजी के मन्दिर पड़ल। चउक का ओर चलली। दस बीस डेग गिन के चलल होखब कि अनासो कुकुरन के भोंकला के आवाज सुनाइल। कवनो जोकर थोड़े न हईं कि पहिरल ओढ़ल देखि के कुकुर भोकिहें। भा कवनो दारू थोड़े ना पियले बानी कि गोड़ लड़खड़ा के चलत बानी। झूठहू आन्हर कुकुर बतासे भूके। कुकुर राति बिरात अनासो भुँकेले स। एतना सोचत आगा बढ़ली। जेतने आगा बढ़ली, कुकुर ओतने लगे आवत आ गइले। पिछउड़ होके तकलीं भुँकत कुकुर अनासो पाछे लागि गइल बाड़े। कपार चकरिया गइल।

बिपति में बुद्धियो मरा जाला। इ सड़क अपना बाप के बपौती ह। हजारनो हाली एह पड़े अइली गइलीं। अइसन अजगुत कबही ना भइल रहे। आजु पेंचा में पड़ि गइलीं। सड़क पर कागज प्लास्टिक उठा के ओके गोलिया के कुकुरन ओरि फेकलीं।

"दूर्र दुर्र, दूरऽ दूर–दुरे–दुरे।"

आन्ही के आगा बेना के बतास। कमजोर के जेतने ढिल्ली द ऊ ओतने तरनाला। अउरी भूके लगले स। डेरइली। सड़क पर कवनो आदमियो नइखे लउकत। मकानन के केवाड़ी जंगलो कुल्हि बन्द बा। कवनो आसरा ना लउकल। हवा बान्हत कुकुरन के लगे ना सटे दिहली। तबले अग्रवाल धर्मशाला पहुँच गइली। सूट–बूट में पसेनिया गइली। तबले एगो चुल्हा लउकल। जहवाँ आधा–खाड़ ईंटा लउकल। ईटा उठा के फेकली तब्बो उ ना थकले। आगि में घीव जइसे पड़ल होखे। अउरी जोर–जोर से भूके लगले स। दउरी में डेग डालत आगा चलत रहलीं। जानत रहली कि जहाँ दउड़लीं त पीठिया लीहें स। काल्हुवे अखबार में पढ़ले रहली कि एगो प्रा. फेसर साहब टहले गइल रहुवें। झूठहू उनका पर कुकुर गतर–गतर लपटि पड़ले ह स। गतो–गतर काटि–कुटि के घवाही क दिहले ह स। बेचारू अस्पताल में भर्ती बाड़े। इ विचार आवते सुन्न हो गइली। अपने घर में इ दशा देखे के पड़ऽता? नीके कहल बा। कबो नांव पानी पर त कबो पानी में नांव? अपने घरवा में नाउनि देखावे ले राहि। बिपति पड़ला पर आदमी देवता देवी के ना गोहरावे, इ भला कइसे हो सकेला? छप्पनो कोटि देवतन के गो. हरवली। भले इ कइसे हो सके। आ अकिल हेरा गइल। बाकि डेग रुकल ना। कुकुरा पाछा आवे से चुकले स ना।

आंखि झपकते छन्न में राजेन्द्र नगर के गली से एगो कुकुर खूबे जोर से भुँकत–भुँकत कुकुरन की ओरि झटकवाहे पलटल। पहिले त हम बूझलीं कि हमरे पर दू तरफा हमला, बाकिर भुँकत कुकुरन के ओरि जब मुड़ल त देखि के जीउ में जीउ पड़ल। एतना जोर से भुँकत रहे कि जइसे असमान अपनी कपार पर उठा ले ले होखे। एगो कुकुर, कई कुकुरन पर भारी? हमरा पर लपटल कुकुर पिछउँड़ होखे लगे लगले। महाबली अभिमन्यु चक्रव्यूह तूड़ि ना पवले बाकि हमार पेयारी अदना पिल्ली तेज–तर्रार कुकुरन पर अकेलही भारी पड़ि गइल। तब गौर से देखलीं इ तऽ उहे पिल्लिया रहे जवना के हम गुर–रोटी खिआवत रहलीं। महल्ला के पिल्ली देखि मन हरियर भइल। डूबत से तिनका सहारा। अब बड़ी जोर से भगवान इयाद पड़ले। हम हाथ जोड़ि भगवान के अनन्त रूप के प्रणाम कइली। आस्था भाव होखे आ तब ईश्वर के स्वरूप कवनो ना कवनो रूप में सोझा आ जाला? ●●

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया,
मोबा. : 7985409070

देश बा त हम बानी

विजय शंकर पाण्डेय

देश के राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान में नया बनल भारत मंडपम खचाखच भरल हौ। हर पार्टी के नेता, सरकारी कर्मचारी, पुलिस, मिडियावाले अखबार वाले, खुफियातंत्र के लोग, नया सचिवालय के अधिकारी तमाम सेवक झब्बादार पगड़ी पहिनले एहर–ओहर दौड़त भागत हउवन। लोकसभा के अध्यक्ष महोदय अउर प्रधानमंत्री के आवे में देरी हौ – विरोधी पार्टी के लोगन में जियादा खलबली लउकत रहल,– काना–फूसी चलत रहल, कुछ लोग एनके इहाँ, ओनके इहाँ जा–जा के कुछ बतियावत रहलन। आज मसला बहुत अहम रहल, अपने देश के विदेशी ताकतन से कइसे निपटे के चाही, देश क बात–व्यवहार आस नीति कइसन होवे के चाहीं ओमिन मित्र देश आ दुश्मन देशो बाड़न। ऊहो सब आपस में मित्र आ दुश्मन बाड़न बाकिर उनहन क हमरे देशो से सम्बन्ध बा। विचार–विमर्श क विषय बड़ा गम्भीर रहल। सब पार्टी वाला अपने–अपने हित के दृष्टिकोण से ए समस्या के देखल चाहत रहलन।

हमहूँ एक पार्टी क कायकर्त्ता के रूप बना के बीच में एक सीट पर बइठ गइलीं। छोट भइया नेता से गोपनीय बात खुल जाले बड़का नेता बहुत सम्मल के बात करेलन चाहे केहू केतनो नजदीकी होय। उहाँ खाली हमहीं एक खुफिया तंत्र के अधिकारी नाहीं रहलीं कई विभाग क लोग रहलन। केहू एक दूसरे के नाहीं जानत रहल। केहू जान–पहिचान क मिल जाय तऽ ई संयोगे क बात हौ। खुफिया विभाग में त अपने लोगन पर निगाह रखल जाला खास तौर से बड़े अफसरन पर, कि ई कहीं कौनो गलत भा देशविरुद्ध लोगन का चंगुल में ना, न फँसल हौ। हमके अपने देश के एक राजनयिक के विषय में मालूम हौ जवन अपनी पोस्टिंग वाला जगह दुसरे देश के खुफिया तंत्र से मिलल रहल। विदेश में तऽ ई नियम हौ कि हमरे देश के कवनो 'रा' के अधिकारी दुसरे कवनो देश में जाई त उहाँ के राजनयिक से मिल के ओके अपने आगमन क सूचना देबे के पड़ी। राजनयिका उहाँ के खुफिया तंत्र के ओकर जानकारी दे देत रहलन। अइसना में आहे 'रा' अधिकारी के दुश्मन देश में हत्या तक हो जात रहल। जब ई घटना कई बार भइल तब हमरे देश में उच्च–अधिकारियन क आँख खुलल। हमरे बगल में संयोग से बहुते प्रभावशाली सज्जन बइठल रहलन। प्रतिभा ओनके आभा मण्डल से साफ झलकत रहल हमके ई समझे में देर ना लागल कि ई कवनो महत्वपूर्ण आदमी हउवन। बाद में मालूम भइल कि ई महोदय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार समिति क सदस्य रहलन। ऊ बहुत कम बोलत रहलन। हम चुपके से ओनके आपन पहिचान पत्र देखवलीं कि ऊहो हमरे बारे में आश्वस्त हो जायँ।

हमलोग आपन जगह बदल–बदल के दुसरा–दुसरका खाली सीट पर बइठल करीं, सब कुछ चुपके से रिकार्ड होत रहल। खुफिया तंत्र में केहु अधिकारी से कुछ

परहेज के साथ बात करे के पड़ेला। ऊपरी बात कुछो करा लेकिन नीति सम्बन्धी देश अउर विदेश सम्बन्धी बात बहुत सजग होके करे के पड़ेला। आगा जाके कई मौका अइसन आइल कि हम लोगन भेंट मुलाकात भइल। हमलोग अपना घरो गृहस्थी के विषयों में बात करे लगलीं। संयोग से एक दिन दिल्ली अक्षरधाम मन्दिर (लक्ष्मी नारायण मंदिर) में हम लोगन कऽ भेंट हो गइल। उहाँ से मिलल प्रसाद पा के हम लोग एक स्थान पर बइठ गइलीं। जनवरी क महीना रहल गर्म धूप बहुत सुहानी लगत रहल। "सर जी हमलोग काफी दिन से मिलत जुलत हईं, लेकिन एक दूसरे के गाँव–जवार के विषय में कुछ जानत नाहीं।" हम कहलीं। तब उ बतौलन कि उनकर नाम सुरेन्द्र सिंह हउवै, बक्सर बिहार कऽ रहे वाला हयन, बाबू कुँवर सिंह के खानदान से हयन। ओनकर पिता जगदम्बा प्रसाद एक प्रशासनिक अधिक. ारी रहलन आ बाबा रघुप्रताप स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहलन, साइत बाबू कुँवर सिंह के फौज में रहलन। सन् 1857 में अंग्रेजन से लड़ाई का दौरान बीर गति पवलन। –"सर जी आप एह क्षेत्र में कइसे आ गइलन? हम पूछ दिहलीं। ऊ कहे लगलें– "जब हम प्राइमरी स्कूल में बक्सर पढ़त रहलीं तऽ उहाँ रोज एगो प्रार्थना होत रहल–

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जायें,
पर सेवा, पर उपकार में हम निज जीवन सफल बना जायें।
जो हैं अटके भूले–भटके उनको तारें खुर तर जायें,
जिस देश–धर्म में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जायें।।

एह प्रार्थना के हमरे ऊपर बहुत प्रभाव पड़ल। हमरे खून में अपना देश प्रेम क प्रभाव परिवारो से मिलल रहल। अपने पिता जी के देश के बीर सपूतन के विषय में बात करत सुनीं, ओर अक्सर अपने सहायकन के देश के महान सपूतन के विषय में, मुगलकाल के विषय में, अंग्रजन के विषय में, बहुत कुछ बतावल करैं। धर्म के विषय में ओनकर अच्छा ज्ञान रहल, एही सब कऽई नतीजा भयल कि हमके देश क इतिहास जाने कऽ उत्सुकता जागृत हो गइल। हम पुरातन इतिहास मध्यकालीन इतिहास, मुगलकाल कऽ इतिहास अंग्रेजन कऽ इतिहास स्वतंत्रता संग्राम क– इतिहास बहुत लगन से पढ़लीं हालाँकि हम विज्ञान कऽ विद्यार्थी रहली। एकर आई0ए0एस0 परीक्षा में हमके बड़ा लाभ मिलल, जवने से हम परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कइलीं। बाद में विदेश सेवा में स्थान मिलल।"

–"सर जी हमार आप के कहानी बहुत कुछ मिलत जुलत हौ। हम यू0पी0 के बलिया जिला क रहे वाला हईं जहाँ कऽ राष्ट्रभक्त मंगल पाण्डेय जी रहलन। सौभाग्य से हम उनहीं का खानदान क हईं। प्रारम्भिक पढ़ाई में आ गइलीं, बी0एच0यू0 से कामर्स में एम0ए0 अउर पी0एच0डी0 कइलीं। हमार नाम उमाशंकर आ पिता जी क नाँव प्रेमशंकर रहल। पिताजी किसान रहलन। गंगाजी कऽ बाढ़ क्षेत्र होवे कारण उहाँ क जीवन कठिन रहल। सोच–संस्कार गँवई। पी0एच0डी0 के बाद बलिया के एगो डिग्री कालेज में प्रवक्ता कऽ नोकरी मिलल त हम प्रशासनिक सेवा क तैयारी करे लगलीं। सन् 1980 में हम चयनित भइलीं। हमके प्रवर्तन निदेशालय में स्थान मिलल, बाद में हमार चयन 'रा' में हो गयल।

हमरे पिताजी बहुत पढ़ल–लिखल त नाहीं रहलन, लेकिन उनके साहित्य, सनातन धर्म आ इतिहास क बहुत अच्छा जानकारी रहल। देश प्रेम क ऊ एक ठे कविता सुनावल करस– "जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।" राष्ट्र कवि मैथिली शरणगुप्त जी के अउर माखन लाल चतुर्वेदी जी के कविता ऊ अक्सर सुनावें। ऊ बतावल करस कि मंगल पाण्डेय जी के कवनो डर नाही रहल। ऊ कहस कि देखऽ ई शरीर एक वस्त्र के तरह हौ जवने के आत्मा बदलत रहेले, जइसे पुराना वस्त्र त्याग के नया वस्त्र धारण कइल जाला। ओइसे– "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहणाति नरोऽपराणि, तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।" गीता में भी लिखल हौ।

मंगल पाण्डेय जी कहैं कि अधर्म आ अन्याय के खिलाफ हमेसा लड़े के चाही, चाहे आपन काहे न हो, अन्याय सहल ओतनै पाप हौ जेतना कि अन्याय कइल। एही से एक दिन अन्याय के खिलाफ लड़िके मंगल पाण्डेय अमर हो गइलन। हमहूँ के एकर गर्व हौ कि हम उनहीं के गाँव क हईं। अतना कहि के हम चुपा गइलीं। कुछ दिन बाद राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार समिति के गोपनीय मीटिंग एगो हाल में भइल। सुरेन्द्र जी का संग हमरे

मतिन अउर कई लोग रहलें।

मीटिंग में ई तय भइल कि ए समय देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ, गुण्डा गर्दी के खिलाफ, जमाखोरी के खिलाफ, माफिया के खिलाफ साजिश आ देश द्रोह में लगल फर्जी संस्थानन आ लोगन के खिलाफ गुप्त रूप से अभियान चलावे के चाहीं। सरकार के तरफ से कवनो रोक–छेक नाहीं हौ। तऽ प्रशासनिक अफसरन के देश–प्रेम कऽ इच्छा शक्ति आ संकल्प लेके कार्य करे में जुट जाये के चाहीं। वर्ष के ईमानदार अफसरै लोग कर सकेलन। चाहे कवनो आदमी हो, भ्रष्टाचार में, जमाखोरी में, सुरक्षा में सेंध लगावे में लिप्त होय तऽ ओकरे खिलाफ कानूनी कार्यवाही जरूर होवे के चाहीं। अइसनका तत्वन के खिलाफ न्यायिक प्रक्रिया में बहुत बिलम्ब हो जाला आ गवाही ना होवे के कारण इनहन के दण्ड नाहीं मिल पावत। एहसे अइसन तत्त्वन के खिलफ ठोस सबूत आ गवाहन के भरपूर सुरक्षा दिहला में कवनो चूक ना होय। हम लोगन चलि अइलीं।

अब एक साथ पूरे भारत में पहिले माफिया, गुण्डा लोगन पर कार्यवाही शुरू भइल। ओमिन हर प्रकार क लोग रहलन। फिर भ्रष्टाचारी लोगन के ऊपर शिकंजा कसाए आरम्भ भयल। चाहे बड़ा, छोट अफसर नेता केहू हो, केहू के बकसल नाहीं गयल। आर्थिक भ्रष्टाचार में हर प्रकार कऽ माफिया खनन माफिया, भू–माफिया शिक्षा माफिया सब लोगन क एक लाइन से खबर लियाये लगल। चारों तरफ भ्रष्टाचारियन आ माफिया गुण्डन में खलबली मच गइल। कुछ भ्रष्टाचारी नेता एकजुट होके एह प्रक्रिया के खिलाफत आरम्भ कइलन। जनता के गुमराह करे लगलन कि लोकतंत्र खतरे में हौ। सरकार संविधान के बदले चाहत हौ, आरक्षण समाप्त कयल चाहत हौ। ए प्रकार कऽ अफवाह फइला के अइसनन के कुछ सफलता जरूर मिलल लेकिन देश में खुशहाली आ शान्ति रहे, एकरे बदे इनहन के शोर गुल आ साजिश में ब्रेक ना लगल। चारो तरफ लघु उद्योग, मध्यम उद्योग, बृहद उद्योग कऽ तरक्की भइल। सड़क, रेल, हवाई हड्डा, कालेज, स्कूल, अस्पताल, कऽ विकास भइल पुल ओवर ब्रिज, बड़ी–बड़ी नदियन में पुल चार लेन, छह लेन, आठ लेन कऽ सड़क देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचे बदे अधिक सुगमता हो गइल। सुपरफास्ट ट्रेनन में बंदे भारत ट्रेन, राजधानी इक्सप्रेस हवाई जहाज छोटे–छोटे शहरन के जोड़े के काम में तेजी आयल। भारतवर्ष कऽ नाम दुनिया में इज्जत से लियाये लागल। लेकिन सब कुछ बादो एगो बड़हन कमी दूर ना भइल ऊ कमी रहल देश का लोगन का सोच के संकीर्णता आ सामूहिक जागरूकता का ना रहला से शोषक, अन्यायी आ छलिया राष्ट्र विरोधी तत्त्वन के प्रतिरोध आ प्रतिवाद के कमी। प्रबुद्ध आ सक्रिय नागरिकता के अभाव। आजो जाति, मजहब का नाँव पर कट्टर कुटिल समाजविरोधी आ देश का आंतरिक सुरक्षा से खेलवाड़ करे वाला, विदेशी सहायता से हजारों लाखों लोगन के उकसा के लड़ा रहल बाड़न सऽ– समाज में विद्वेष के आगि त लगाइये रहल बाड़न सऽ, देशो के खण्ड–खण्ड करे आ कमजोर करे खातिर विकास का राह पर आगा बढ़त देश के टाँग खींच रहल बाड़न सऽ। इन्हनी के शह आ संरक्षण देबे वाला राजनीतिक नेता आ बुडुआ पत्तरकारो बाड़न स। मुखौटा लगवले शिक्षित आ कुपढ़ बुद्धिजीवियो बाड़न। आम जनता का पास ए ममिला में सही समझ क अभाव बाय।

खाली सरकार आ देश के खुफिया सुरक्षा विभाग इनहन के तब तक खतम ना कर सके जब तक देश के सजग नागरिकन के समूह खुल के इनहन के प्रतिरोध आ प्रतिवाद ना करी। ई मन्त्र गँठियावे के पड़ी कि देश बा त हम बानी। देश ले बढ़ के कुछ नइखे। ●●

❑ नारायणी विहार कालोनी, चितईपुर, सुन्दरपुर
वाराणसी–221005, मो०– 9140105881

आदर्श राजमाता कैकेयी

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

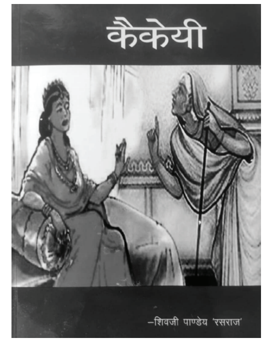

किताबः कैकेयी (खण्ड काव्य) : शिवजी पाण्डेय 'रसराज' प्रकाशक : सत्यांश उपकम (प्रा0) लिमिटेड, बलिया (उ0प्र0)–277001, प्रकाशन वर्शः 2023, पृष्ठ सं0– 168, कीमत (पेपर बैक): 250/–

मौजूदा बाजारवादी दौर में, जब साहित्यिक कृति नठनीयता के संकट के शिकार होत बाड़ी स, हरेक हलका में लघुता के बोलबाला बा आ अइसना स्थिति में महाकाव्य भा प्रबंधकाव्य, खण्ड काव्य के सिरिजना कइल जानि–बूझिके कवनो जोखिम उठवला से कम नइखे। बाकिर तरुआर के धार पर चले नियर जोखिम उठवले बाड़न शिवजी पाण्डेय 'रसराज', भोजपुरी में खण्डकाव्य 'कैकेयी' के सिरिजना कऽके। 'रसराज', जी मूलतः गीति चेतना के रचनिहार हउवन आ इन्हिका गीतन में मानवीय करुणा पढ़निहारन–सुननिहारन के आँतर में गहिर संवेदना जगावेले। तबे नू अपना पहिलके कविता संग्रह 'रोवेले फफकि मुसकान' से ई सुधी पाठकन के दिलोदिमाग में रचि–बसि गइलन।

आजकाल्ह साहित्य में विमर्श के बोलबाला बा आ नारी विमर्श से लेके दलित विमर्श, ओबीसी विमर्श, किसान विमर्श, बृद्ध विमर्श आउर बालिका विमर्श ले– तमाम वंचित, उपेक्षित, भाोशित मानवीय मुद्दन पर बहुआयामी विमर्श के सिलसिला जारी बा। ओइसहीं, महाभारत, रामायण के उपेक्षित चरित्रन के केन्द्र में राखिके समय–संदर्भ के मद्देनजर ओह चरित्र के न्याय दियावे के दिसाईं यादगार कृति सिरिजइली स। कर्ण, एकलब्य, द्रौपदी, भीष्म, उर्मिला बगैरह के श्रृंखला के एगो नया कड़ी बाड़ी केकई, जेकरा खल नायकत्व से उलट, एगो आदर्श राजमाता के चरित्र उभरल बा भोजपुरी खण्डकाव्य 'कैकेयी' में। हिन्दी में रेवती (बलिया) के एगो जियतार कवि बेचू पाण्डेय के एगो खण्डकाव्य आइल रहे एही चरित्र पर, जवना में उहाँके कैकेयी के राष्ट्रमाता का रूप में आपन स्थापना दबे के पुरजोर कोशिश कइले रहनीं।

'कैकेयी' में काव्यकार 'रसराज' के दृष्टि सम्पन्नता दृष्टिगोचर होत बा। अपना कृति के मार्फत कृतिकार एगो दृष्टि देला, बाकिर ओकरा खातिर जरूरी होला कि ओकरा लगे अंतर्दृष्टि (विजन) होखे। प्रबंधकाव्य के परिपाटी में विभिन्न लोकप्रिय छंदन के पाँच पल्लव में निबद्ध 'कैकेयी' में मंगलाचरण से समापन ले एह कदर इंसाफ कइल गइल बा कि पाठक अभिभूत हो जात बा। पहिला पल्लव में लोक कल्याण के देव शिव के किरिपा से राजा अश्वपति के राजकुमारी के जनमोत्सव के धूम, लरिकाइएँ से शस्त्र–शास्त्र में निपुणता, तेजस्विता आ बाधिन के शिकार करेके चित्र उकेरल गइल बा। उन्हुका रन कौशल से अवधनरेश दशरथ चिहा जात बाड़न आ बियाह के प्रस्ताव राखत बाड़न, जवना प केकई के भार्त बा कि उन्हुके लइका राजा बनी। सहमति प शादी। फेरु शंबर अवधनरेश के लड़ाई में पति के जान बचवला पर केकई से वर माँगे के निहोरा, बाकिर उन्हुकर उचित समय प माँग रखे के अस्वासन। दोसरका पल्लव में चारो भाइयन के जनम शिक्षा, वियाह राजगद्दी आ कोपभवन के प्रसंग। तिसरका पल्लव में वन गमन से लेके चित्रकूट तक के कथा। चउथा पल्लव में वन से रामजी के लवटावे खातिर

अवधवासियन का सँगें भरत के वन जाए आ चरन पादुका लेके वापसी के प्रसंग आ पाँचवा पल्लव में भरत राज के बरनन।

सर्वांग सुन्नरी केकई लोकहित धर्महित, जनहित कइसे शूरवीरता में नाँव–जस हासिल करत बाड़ी, बता. ैर मिसाल एगो छंद देखीं– 'कटि बान्हि कृपान, लिये धनुबान/चढ़ी निज अस्व लखें नर–नारी/केकइ नाँव भई परसिद्ध/ फिरे जनता मह राजकुमारी/बुद्धि–विवेक रहे समत. ुल्य/रहे गुन से सभका पर भारी/देखि सुता विहँसे पितु–मातु/ कहे जनता धनि राजकुमारी!'

तबे नू ऊ नरभक्षी बाघिन के अइसे मारि गिरावत बाड़ी, जइसे होरी खेलत होखसु–'केकई बाघिन पे झपटी/ निर्भीक प्रहार में दक्ष किशोरी/बाघिन मारि के अइसे हँसी/ज्यों गाँव की भोरी ने खेली हो होरी!'

काव्यकार केकई के शौर्य–पराक्रम का सँगहीं बुद्धि–विवेक आ प्रत्युत्पन्नमति के अइसन जियतार तस्वीर उकेरले बा कि तनिकियो अतिरंजित नइखे लागत। वियाह के प्रस्ताव राखते ऊ कहि बइठत बाड़ी–'पर केकइ ब्याह का सर्त रखी/ युवराज बने सुत केवल मोरे।' एही तरी, दशरथ के जान बचावला पर जब ऊ कहत बाड़न–'प्रान बचा समरांगण में/बनलू हमरो सबसे प्रिय रानी/ माँगि ल जे कछु हो मन में/हम दीं तहके करि बद्ध जुबानी! त उन्हुकर जवाब होता– 'धीर धरीं अबही रउवाँ/ हम बात न राउर टारत बानी/वक्त परी जइसे कबहीं/हम माँगबि, आप धरोहर जानी।'

केकई जब राम बनवास के वरदान माँगत बाड़ी त ओकरा मूल में उन्हुकर मंशा बा असुरन के सर्वनाश – 'दानव बोझ हुए महिके उनके हति सांति करें अविनासी/केकइ के मन के अभिलाश/ पुरा कहिहें हरिचंद्र प्रभासी।' सिरिफ अतने ले ना ऊ निरीह आदिवासियन के दीन–देशो देखिके राम के सबके देत बाड़ी कि ऊ वनवासियन के समस्या के सझुरावत शाश्वत नेह–छोह मनुजता आ नवजागरण के सनेस देसु– 'वनवा में रहेवाला लोगन से मिलिहऽ तूँ उनका समसिया के जाके सुलझइहऽ/ सभा–गोष्ठी के सहारे जागरण कऽके/चेतना सुसुप्त मन, उनके जगइहऽ/ प्रेम अंकुरित होखे, सभका हिया में राम/नेहिया के बान्हि के बन्हाए के सिखइहऽ/अतताइयन के दे सुधरे के अवसर/जदि सुधरेना चाहे तब तूँ चेतइहऽ।

रामायण कालीन मिथकन के जरिए काव्यकार सामाजिक आउर राजनीतिक चेतना जगावे के काफी हद ले कामयाब कोशिश कइले बा आ ई सकारात्मक उतजोग एह कृति के बेशकीमती बनावत बा। कुदरती छटा के अइसन सरस आ अनूठा चित्र उरेहल गइल बा कि पढ़निहार के मन–परान बाग–बाग हो उठत बा आ प्रकृति पर्यावरण के संरक्षण–संबर्धन खातिर जीव–जान से लागे के चेतना जागत बा। भरत–राज के बहाना से आजकाल्ह के सामाजिक विसंगति विद्रूपता के दिसाई जन प्रतिनिधियन के दायित्व पर रोशनी डालल गइल बा। समाज में वेयापल जातिवादी सोचो पर जरूरी प्रहार कइल गइल बा।

भाषा में पनिगर प्रवाह लउकत बा, जवना का वोजह से पढ़ेवाला कथा का सँगे बहत चलि जात बा आ ना त कतहीं प्रवाह बाधित होत बा, ना कबो बोरियत के एहसासे होता तत्सम शब्दो के प्रयोग कतहीं बाधक नइखे बनत। हालाँकि सम्पूर्णता में ई खण्डकाव्य भोजपुरी में बा, बाकिर जगह–जगह पर दोसरो भाषा आ हिन्दी के क्रिया पद के खूब इस्तेमाल भइल बा। ई एगो अइसन मुद्दा बा, जवना प विचार करे के जरूरत बा। शुरू से आखिर ले चरित नायिका केकई बाड़ी भोजपुरी में इहे शब्द प्रचलितो बा, बाकिर कृति के शीर्षक 'कैकेयी' राखल गइल बा। अइसहीं, किताब के भूमिका का बहाना से नेह–छोह देबेवाला पाँच–पाँच गो विद्वान लोग बा, सभ के सभ भोजपुरी भाषी, बाकिर सभकर उद्गार हिन्दी में बा। बुझिला एह लोग के भोजपुरी के ताकत के अंदाज नइखे। हमरा समुझ से, शीर्षक आ भूमिका जदी भोजपुरी में आइल रहित, त ऊ अउरी आत्मीय आ असरदार होइत।

आजुओ समाज में रामकथा के केकई का प्रति जवन नकारात्मक नजरिया बा, ओकरा के तूरिके अपना मौलिक सोच, काव्य शिल्प आ संवेदना के दिसाई 'रसराज' जी के ई सरस, तर्कसंगत मनौवैज्ञानिक काव्यात्मक उतजोग पाठक के जरूर रास आई, हमरा एकर भरपूर भरोसा बा। उमेद बा, स्त्री विमर्शो के लेहाज से ई प्रयोग रेघरियावे जोग साबित होई। ●●

❑ 'सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री रोड, निकट मगध आई०टी०आई०
नासरीगंज दानापुर, पटना– 801503 (बिहार)
मो०– 9304693031

स्व0 चन्द्रदेव सिंह के दू गो गजल

(एक)

हमरो से पड़ी कबो पाला जरूरत पर !
गड़हो समुन्दर हो जाला जरूरत पर ।

के जाने, कब कहवाँ , केकरा पर, का बीती
गदहो के बाप कहल जाला जरूरत पर!

साँप डँसल रोगी के जिनिगी बचावे में
जहरो में जहर दिहल जाला जरूरत पर।

कतल रामफल कइलन,फाँसी सामफल के
बापो के नाँव बदल जाला जरूरत पर!

भँइसिन के चारा का, अस्पताल बाँध-सड़क
अदिमी पहाड़ पचा जाला जरूरत पर।

छोट चोर सइकिल भा मोटर चोरावेला -
बड़ रेलगाड़ी ले जाला जरूरत पर!

रजनीतिक चाल ह ई, सभे नाही चोर होई
तनी मनी चलेला घोटाला जरूरत पर !

एही तरे चोरवन क चरचा जो चलत रही
संसद में लागि जाई ताला जरूरत पर !!

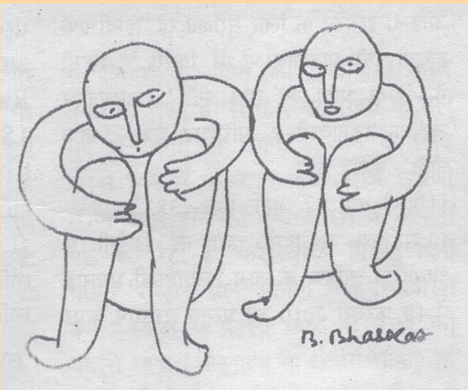

(दू)

केकरा प' करबऽ गुमान रामप्यारे !
केकरा से रही तहार मान रामप्यारे !

जेकरा के दिहल बाटे तलिया तिजोरी के
ऊ बा डकुअन के परधान रामप्यारे ।

राव , सुखराम, जयललिता त नाँव हवे
के नइखे इहाँ मलखान रामप्यारे ?

आज त हवाइये जहाज क सवारी होता
सइकिलो के रहे ना ठेकान रामप्यारे ।

गोखले, तिलक,गाँधी सभे इतिहास भइल
फूलन आ मुलायम वर्तमान रामप्यारे।

लोग कहे काश्मीर, झारखंड पंजाब
केहू नाहीं पूछे हिन्दुस्तान रामप्यारे !

साधू ऊहे बाटे ,जेके लूटे क जोगाड़ नइखे
बाकी सभे हाजी मस्तान रामप्यारे !!

बदलत-समय

अशोक द्विवेदी

सगरी परानी
भइल आजु शहरी
गँउवाँ का बिचवाँ में
सून परल बखरी!

घरनी ले पुतवे का छोह में धधइली
पूत का गदेलन में जाइ अझुरइली
बुढ़ऊ के बहरी क
झाँय–झाँय कोठरी!

हँसे–खिलखिलाये क सोर न सुनाला
अँगना–दलान क' समान भुइलियाला
तनिको अन्हारा में–
साँप लगे रसरी!

बुढ़ऊ का पोवसु, पिसान ना सनाला
लपसी प' जून भा कुजून कट जाला
पहिले असान रहे
सतुई क लबरी!

केकरा से भितरा क पीर बतियावें
मनगुपुते दुखवा के रोज महटियावें
घरवा क मोह भइल
जिउवा क फँसरी!

छोड़ल न जाय घर गाँव खेत बारी
जिनिगी भर सेवलन ऊ होइ गइल भारी
पुरखन क पगरी
बुझाय आज लुगरी!

'निमिया रे करुआइनि' समय के साथे, समय से आगे

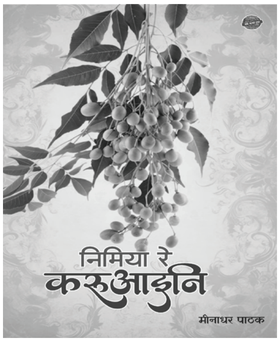

केशव मोहन पाण्डेय

भोजपुरी साहित्य, खासकर उपन्यास विधा में, सामाजिक जीवन के जवन गहराई बा, ओकर चित्रण आधुनिक भोजपुरी उपन्यासन में स्पष्ट रूप से देखे के मिल. ेला। मीनाधर पाठक के नवका उपन्यास 'निमिया रे करुआइनि' एह संदर्भ में भोजपुरी उपन्यास साहित्य के एगो महत्वपूर्ण कड़ी बा। ई ना केवल पारंपरिक ग्रामीण जीवन के सामाजिक समस्या आ संघर्षन के बारीकी से प्रस्तुत करत बा, बलुक भोजपुरी साहित्य के आधुनिकता के दिशा में भी संकेत देला। एह उपन्यास में जिनगी के करुण गाथा बा । हर आस–विश्वास के चित्रकारी बा। हर सुख–दुख के परदा बा ।

'निमिया रे करुआइनि' एगो स्त्री केंद्रित उपन्यास ह, जेकर मुख्य पात्र नीम के पेड़ के कहल जाव त खराब ना होई। नीम आ ओकरा तले जिनगी से ताल ठोंकत आजी। आजी के आपन व्यक्तिगत संघर्ष, सामाजिक बंधन आ पारिवारिक जिम्मेदारी के बीच फँसल उनकर असरा । आजी के जिनगी में दुख आ संघर्ष ओकरा हर कदम पर सतावेला। मीनाधर पाठक, आजी के चरित्र के माध्यम से समाज में औरतन के दयनीय स्थिति के उकेरत बानी। आजी के संघर्ष खाली ओकर खुद के नइखे, बलुक ऊ उनकर प्रतीक बा जे आजो समाज के पारंपरिक ढांचा आ लैंगिक असमानता से जूझत बाड़ी।

दिनेश पाण्डेय जी किताब के भूमिका में अँजोर करत लिखले बनी– 'कथारंभ के एक बात खास तौर प धेयान देवे जोग बा जवना के ताल्लुक घर के छरदेवाली के भीतर नीमि के पेड़ तरे खटिया डाल के बइठल, फाटक का ओरि निहारत उनकर रोजनामचा से बा। उनकर एह दिनचरिया के पीछे अवसि के कवनों उमेद के ओजह बा जवन बखत के गहिर धुँध में एकदम सोपट नइखे जनात। अंजली कथा के एक पात्र होखला के बावजूद सूत्रधार के भूमिका में बाड़ी जेकर देखल, सुनल, परेखल आ भोगल जथारथ के इरिद–गिरिद सारा कथाजाल पसरल बा। अंजली पढ़े–लिखे में हुँसियार, सलीकावाली आ चलबिधर लइकी हई। ऊ छुटपने में, आजी के देखभाल करे बदे नइहरे में आ बसल आपन ईया जवरे हिंहईं आ गइल रहलि।'

समकालीन भोजपुरी उपन्यास में सामाजिक समस्यन के चित्रण प्रमुख रहल बा। आजकल के लेखक लोग समाज के बदलत स्वरूप, शहरीकरण, गरीबी, बेरोजगारी, जातीय भेदभाव, राजनीति आ खासकर नारी सशक्तिकरण जइसन मुद्दन पर जोर देत बाड़ें। उदाहरण के तौर पर, कई उपन्यास सामाजिक आ आर्थिक असमानता के चित्रण कइले बा, जवन समाज के बदलत स्वरूप के दिखावेला। 'निमिया रे करुआइनि' में मुख्य रूप से औरतन के दमन, उनकर भावनात्मक पीड़ा आ संघर्ष के बारीकी से रेघरियवले के सठवे श्रमजीवी परिवार के विविध रूप सामने रखल गइल बा । अरब

से कमा के आइल लखना के प्रभाव में खिंचाइल सुरुजा के जिनगी के मर्मांतक वर्णन मन के ककोर देत बा । लेखिका बड़ा चतुराई से एह उपन्यास में भूमंडलीकरण, प्रवास, आप्रवासन आ रोजगार जइसन विषय के समावेश कइले बाड़ी । इहे भोजपुरी साहित्य के आधुनिकता के पहचान ह। हाल के उपन्यासन में शहर आ गांव के बीच के भेद आ समाज के बदलत संरचना के चर्चा बढ़त देखल जात बा।

'निमिया रे करुआइनि' का कथा–विन्यास में आजी के रूप में मीनाधर पाठक एगो सशक्त स्त्री पात्र के गढ़ले बानी, जवन समाज आ परिवार के दबाव के बावजूद अपने आत्म–सम्मान के बचावे के कोशिश करेली। आधुनिक उपन्यासों में भी, नारी सशक्तिकरण आ उनकर संघर्षन के प्रमुखता मिलल बा, बाकिर अब ई संघर्ष के रूप बदल गइल बा। आज के स्त्री संघर्ष खाली सामाजिक दबाव से ना, बलुक खुद के स्थापित करे, आर्थिक स्वतंत्रता पावे आ आधुनिक जीवनशैली में समायोजन करे के हो रहल बा। एह उपन्यास के कुछ चित्र मन से कबों मेटे के नाम ना ली । नीमि तरे बइठल आजी के बेरि–बेरि फाटक का ओरि देखे के मनोभाव के रहस्य अब कुछ–कुछ खुलत बुझाता। एकरा पीछे केहू के वापसी के इंतिजार बा ई बात साफ हो जाता। मुख्यकथा के प्रवाह में कइयक सहयोगी कथा ए तरे पैबस्त बाड़ीसँ कि ओहनी के मुक्त अस्तित्व प धेयाने नइखे जात। ई बेहतर लेखन के नमूना ह जवना में रंग के मेल अइसन होला कि उनकर आपसी बिलगाव के रेखा के पहिचान आसान ना होखे। रंग–संजोजन के ई रीति कवनो कला के मेंहीपन के बोधक ह।

'निमिया रे करुआइनि' के हर पात्र अपना चटक रंग से एह उपन्यास के रंगीन क देत बाड़न । अंजलिया, ईया, किशोरवा, सुरुजा, लखना, बाबूजी, मतऊ दम्पति, बड़का बाबू, छोटे बाबू, बड़ी मलिकाइन, राजनंदिनी, रमेश, नसीर, हर जिनिगी के अलगे दास्तान ह, कुछ निहायत निजी त कुछ पेंचीदा सामाजिक प्रकिया के उपज। कथानक के ढाँचा में एक बात गौर करे लाएक बा कि एकर उपरांत भाग कवनो सामाजिक जथारथ के पच्छधर होखला के बनिस्बत 'जवन होखे के चाहीं' आ गलती के सुधार के विरल मगर आदर्श समाधान प टिकल बा। जवन मकसद कथा के मेंह ह ओकर पुरहर आवेग मुख्यधारा में उभरल जरूर बाकिर बाद में ऊ एक आम अभाव–ग्रस्त स्त्रीजीवन के निजी संघर्ष में तब्दील हो गइल। मुख्यबहाव से थोरिक कगरिअइले रमेश के इर्द–गिर्द बुनल कथा मुख्य उद्देश्य के तेकर पूरापन में उभारे में एक हद तक कामयाब लागत बा।

लेखिका के नजर मूड़ी प मइला ढोवे के चलन के पीछे के इतिहास कुरेदे के बजाय हालिया जथारथ के पड़ताल प बा। गांधी जी के सुधारवादी दृष्टि में आपन मइला केहू आन से ढोआवल अमानवीय रहे ए से ई काम खुद करे प्रेरित कइलें तेकरा बादो स्थिति में बहुत बदलाव ना आइल, तौर–तरीका जरूर बदलल। अजहूँ नगर निगम आदि में कहे बदे हर जाति–समुदाय के लोग नोकरी करत बा लेकिन सीवर काछे से लेके एह कोटि के अउर काम में अधिकतर मेहतरे समाज के लोग लगा दिहल जालें। कठिन परिस्थिति में जोखिम के काम होखला के बावजूद गरीबी आ जहालत के मारल लोग ई काम करे खातिर मजबूर बाड़ें। ते पर ठिकेदार के बेदिली आ संवेदनहीन बेवहार शोषण के नया रूप रच रहले हँ। दबले रूप में सही, सामाजिक हिकारत के भाव अबो बाँचल बा सहानुभूति कम बा। एह वर्ग में प्रतिरोध के भाव महज अपरतच्छ गारी–गुप्ता तक सीमित बा कवनो सार्थक विरोध नइखे। एकर ओजह भितरिया बिखराव, निजी स्वार्थ, शोषक वर्ग के भेदनीति उजागर बा। कल्याण के नाँव प बनल संगठन के छलावा आ तेकर अंदरूनी हकीकत कम घिनावन नइखे। ए तरे के संगठन खुद तिकड़मी राजनीति के शिकार होके दोहन के नया जरिया बन गइल बाड़े। रमेश के रहल आ दुरभाग भरल मउअत दूनो हालत में जवन माहौल उभर आवत बा ऊ भौंड़ा होखला का बादो सारा जथारथ सामने रख जाता।

भिन्नता के बात कइल जाए, त 'निमिया रे करुआइनि' में जवन ग्रामीण पारंपरिक समाज के चित्रण बा, ऊ आधुनिक भोजपुरी उपन्यास में धीरे–धीरे शहरी जीवन, आर्थिक विकास आ वैश्वीकरण के प्रभाव में बदल गइल बा। 'निमिया रे करुआइनि' भोजपुरी साहित्य के एगो महत्वपूर्ण मील के पत्थर गाड़त बा, पारंपरिक समाज के जड़ आ स्त्री के स्थिति के एमें बखूबी उकेरल बा। ई उपन्यास भोजपुरी साहित्य के आधुनिकता के दिशा में ले जाए वाला कड़ी बन रहल बा। ●●

❑ राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली

दू गो कविता

अशोक द्विवेदी

(एक)

हँसी–रोवाई, सुख–दुख आई।
धिरहीं–धीरे साँच बुझाई

सुघर पाँव, बिहँसे–चिकनाई
बिछिलल गोड़ त सरबस जाई!

परया–पीर कहाँ ऊ बूझी
जेकरे पाँव न फटल बिवाई।

काँच घाव, हरकल मन अइसे
जस पलकन से दूर उँघाई।

जतिगँव का हदरा–हुदुरी में
आरक्षित के दूध–मलाई।

दुनियाँ सिकुर गइल 'अपने' में
कहीं सेर बा कहीं सवाई।

ना जाने कब ऊ दिन आई
जहिया सभके न्याय भेंटाई?

हमहन के बिधि रचलन उल्टे,
खटत–खटत हो जाय खराई!

(दू)

नेह–छोह रस–पागल बोली।
गइल गाँव के हँसी–ठिठोली।

घर–घर मंगल बाँटे वाली
उड़ल कहीं चिरइन के टोली!

सुधियन में 'अजिया' उभरेली...
जतने मयगर ओतने भोली।

सपना, साध, हकासल ममता–
माई के रहि गइल खटोली।

दइब क लीला–दीठि निराली
दुख–सुख खेलें आँख–मिचोली।

हिलल पात, पीपर–मन डोलल...
पुरुआ रुकल त पछुआ डोली।

आपन–आपन महता बाटे
का माटी का चन्नन रोली।

पँवरी नेह क दरिया ऊहे–
जे हियरा के बान्हल खोली।

आपन–आन न चीन्ही रस्ता
जे जाई, ओकरे सँग होली।

❖ ❖

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 105–06 सितम्बर 2024

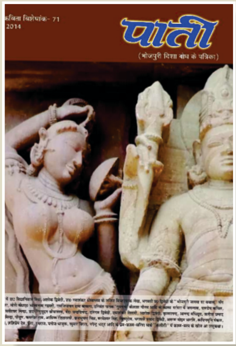

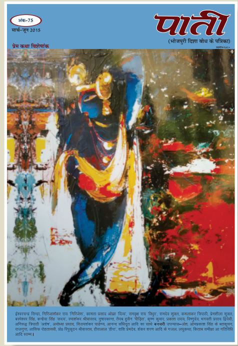

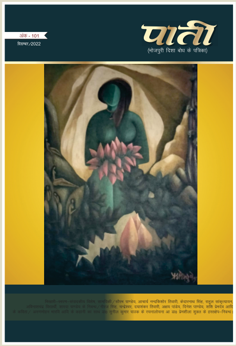

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।